

THE WASHINGTON ॥ त्रय प्रति थी जिनषिजयमहाराज विर्षित ॥ ॥ श्री धन्नाशालिभद्रना राम ॥ ॥ प्रारम् ॥ या ससारमा परिव्रमण करता प्राएतिने चुझकादि वक् रुष्टाते डुर्जन एवो मनु पामबु ध्रतीन ने . डक्यपी ते पछ पामी शकाय, परतु श्री जिनघर्म , उत्तमकूल अने निरोगीकाया,

वानम नाजन पया सन्नतिना शीयल, तप मने

त्त्र ध्रो जरतेष्वर म दृष्यदृष् सार पदार्ध ते बानधर्मज हे होनाधी सिंहासन थयुं, तपना प्रज्ञावपी मने नावना प्रजावध। नावनु फल सिश्तमा मिस्ड डे तथापि आहि वानधर्मनु प्रधानपर्धु । दाराजने भारीसान्त्रुगनमा केवलकान ग्रस्य मा प्रकारे वान, मत्तवी परा मुक्ति महत्वपणु देखाडीए टीए नेवा चार जीवनी हत्या करनारे म प्रनावर् રહિ સ્મૃહિ ान्यमन

तथा परना देशमा गृब्द, रूप, रस, गघ मने स्पर्श तेमज पोताना प्रयंनो वेनार ते वानधर्मज डे मनावाधित

रुपन्तवंब प्रमुए प्रथम घनतार्थं बाह्ना नवमा मुनिजनोने घृतनु वतन बीधु, तो ती पिक प्र पान्या बाहु मुनिये पाचरो मुनियोने आहार पाँसी लाबी मापबापी भागस्या जन्म प्रवास पुष्प उपाइंन कस्नु, श्रेपारकुमर क्रयंभव नगाना प्रकार कर्मा मिलो मिलनी, चवनवालापे अडवना मिलो मीलो मेलनी, चवनवालापे अडवना मिलोगर्प प्रमुने वहोराव्या, तो तेज बखत डहेहाानो मंत पयो, दीव्य रूप पणु कि प्राप्त प्रतास प्रवास प्

क्षेत्रे जण सर्वार्थसिङ विमानमा गया त्यापी त्यवी महाविदेष्ठक्षेत्रे कीइ महोटा ी, जन्म पामहो, त्यांपण सङ्गुरु समीपे दीक्षा ग्रहण करी कर्म खपावी सिंद्रिप क्षे पत्रकुमर भने हासिन्यन्कुमर मात्र मुनिने दान देवायी अत्यत्त रुध्वान पर

सद्ग्रहस्थोनी नामाविष्	, मदेता पुरुषातम भमरासह , खंदवा	१ शा प्रमत्तव कुंबरनी	्र जत्त्वसर् • ज्ञान बचेनव क्राविवास	त्र वन्ताता का त्र निष्यंदर	१ गामी श्वयम् जुगलकास	१ क्राग्न सरखन्य द होरचंद	१ माण्पानाचर् तलकिचर	the contract of the contract o	१ मद्ता हमर्षेद गुलाव वर्
श्रमाछथी साधय श्रापनार सद्ग्रहस्थोनी नामावित	एक पमदावाद	१० क्षा बातालाई उगनवास मा प्रशोसमदास गताबचंद महेता	उ पारि पानाचर फवरनर	ए पारिक त्रिज्युवनदास जगजावनेदास 	१ स्राप्तार वब्दुमान स्राप्ता	र मामोद	पन्यास ममेर्यवजयकी मोतीविजयजी	१ अजार	१ माठ माषाकचंद मोषासिंह

• ppppppppppp

१ , वृश्मजा राज्या १ , वृश्वकरण फर्वेरवर्ष १ , ,	(हार मगनवाल जीवराज । ए हार मगनवाल जीवराज	१ क्षेत्र प्रमचद रायचद १ क्षा मगनीराम निक्दास	१ कोठ फवेरवास हरजावन १ तक्षकचंद मायोकचंद	१ गा शुकराज बरुराज मेर्ज्याच्या नेमन्त	१ , मास्तिवाल रुपपर १ क्रेंड मोतीचंद देवचंद	१ मारवाडी मचसजा नलाज। १ क्रोट चंदनसात रुगनाथ	। १ क्षा लालनी केशवनी
र मोही कपूरचेव गोपालजी १ बोराजी	१ राण्जादवजी स्वजी १ विषया	१ होत्र सखाराम डर्जनबास १ पना	१ शा शिवनाय दुवाजी	१ , बालचक लाचाया १ वासापूर	१ शा ईम्बरदास झमीचेव ११ मुंबई	१० क्षेत्र दावजीजाई चापरिंह न नेजमिंह जीमरिंह	। , दीरजी हेमराज

	I	
पद्ममनंद्र मनअ	। १ वाकानेर	
THE DE CO	१ श्री तपागष्ठनान्त्रेतार खाते	
मा वेषेचर मानचढ	हा महेता जगजीयन वाघजी	
गमोबर पानाचव	१ शिव	
र बहोदरा	१ क्षा करकानजी पदमसिंह	
ग्रा वक्टनुसाई श्रीकमदास	१ सरपदंड	
श् वीरमगाम	१ महेता नहुनाई हावजी	
हा। जगजीवन रायचंद	ै सरत	
., जब्दुजाई वस्पमवास	१ ऊवरी सब्बुनाई फनेनाई	
॥ मलता	प्रतकोनी ट्रंक नोंघ	
ास्त्र) (जैन) सीपमा त्रापेता पस्तको	। ध मेराम्यरत्नाकर जाग , छो	D D
Second ordered and the second	•	묾
र पंचारीक्रमपुरास्त्र	्र मोक्समाखा , "	9
	े उ तकामरत्योग मंत्रयष्ट्र 0-00	0 0

नाजाय - अन्यवान, मुरोजवान-द्विप्रीयावान, श्रीस्वान अने वाकीना अप वान मन्याय - अन्यवान, मुरोजवान-द्विप्रीयावान, श्रीस्वान अप वान पण सुख कारान वानमा प्रपननों वेवान पण मोकने आपे हे अने वाकीना अप वान पण सुख जोगाविकों आपे हे ॥१॥ अन्यवानची तयव सुख, पाच्या ह्यातिज्ञांव ॥ पाञ्चान पी परम पद, श्री श्रेपास कुमरेंद्र ॥३॥ अनुकंपाश्री पिण अधिक, जहा पाच्या जगमा है।। मुंज जोज विक्रम करण, प्रमुख नृपति सोधाह ॥ ४॥ ते मादे त्रिक्ष जन तुमें, वे व्या वान सुपान ॥ तत्त्र वान हे अपि करण निज मात्र ॥॥। व्यो वान सुपान ॥ तत्त्र वान हे अपि करण निज मात्र ॥॥। व्यो वान हुए मी ॥ (दीजे दीजे रे वामाको नवन वीजे एदेही) हम्मिक हमप्त है। में वानतणा गुण गाया ॥॥।ए आकणी॥जिम कर्ष्यनुम विल पूरे, तिम ए शुनफक वाता ॥ वानाविक अधिकार अनेपम, जायाची मुखदाता रे ॥में पूरे, तिम ए शुनफक वाता ॥ वानाविक अधिकार अनेपम, जायाची मुखदाता रे ॥में ॥।।॥॥ माजावायण ते मूल मनोहर, सुनय ते पीठ प्रकास ॥ वचन युक्ति स्कें विरा ले, वार बात महत्त्र सिरा। ॥ इात पत्त सत्त स्र सिरा। सा वोच्य पत्र सत्त न तत्त श्र

धैनो कहेगे, रीजवगे ते स्वाव ॥ श्रोता पस्ती विविष जातिना, स्वाद प्रहे अध माव रे केही विविध प्रकारे विषिद्धी, स्वस्तरण करी गावो रे ॥मेंगाउ॥ श्री तपग्रष्ठ स्रोद्धा भ्र नीपम, श्री विजयवैषस्रीति ॥ गौतम जंबू वयर समोवढ, गुण्यी तेषु मुधिका रे ॥मेंग ॥णा तस पट्टे श्री विजयिषि शुरू, सुनिजन कैरव नेता ॥गुणमयो रोक्षण न्यूषर क्रायम, संप सक्ष्य सुलक्कारे ॥मेंगा ए॥ मेषपाट पति राषा जगतिस्थ, प्रतिवोधी जहा हो से ॥ एस बास्टेट्फ नियम करावी, शावक सम ते कीशे रे ॥से०॥ १०॥ तास झिच्च सुविहित सुनि पुगय, बुव गजविजय सवाया ॥ शाति सुवारत परम महोदवि, जनम सुप्त जपापारे ॥मेण॥११॥ तस सेवक कोविद हिार होखर, हितविज्ञय गुरु राया ॥ पट स्कृत श्रायम जवनिविमें, बुद्धि जिक्सज तराया रे ॥मेण॥११॥ तास हिष्य पन्ति जि गायारे।मिंग।(१॥ स्री महाबीटने बारे मनोहर पंच पुरुप सु कहाया।। तिव्यपात्र स्री ।मेंश।ए॥ रक्षक ते गुरु वका समजुं, कब्यङुमनो स्वामी ॥ ते पालेखो फल मागीजे, आतमने दिन कामी रे ।मेंश।६॥ ए फब स्वादनयो ड ख लावे, द्राहिये मगत मावो।। र सिंधूर, माणाविजय मन भाषा ॥ तास् सतीप विवुध जिनविजये, फिठ्याना

है कहा, जोयवापी ब्रति विभि है। जंबूठा। धा। पट खंफ वैताब्से करी, गंगा सिंवुर्ग सो है हे १। मरतत्तवा ब्रोमा वर्णा, देखी सुर नर मोहे हे ॥ जंग ॥ ए।। मय्यखंफमें ब्रोम्ज है ते, पनन पुष्फंडायों हे।। इंचुरी सम डायते, ब्रति डचम ब्रह्मियाों हे।। जंग ॥ शा।। ही बीएका चहुटा जता, गढ मढ मंदिर विभे है।। वेडाद श्री जिनराज्ञा समर जुवनों बीप है।। जंग ॥ शा प्रपश्चाता पड्यडी, तिम वदी पठनती झादो हे।। वाकशासा श्री से रीपती, इस्तित बान रसादों हे।। हो।। गोवावरी तिटनी तिहा, ब्रह्म निर्दिश्च बाही पर्या, वृक्कतया वहु बूंगे हे।। सधन अपापी क्षोमता, पंपी पामे ब्राप्दों हे।। जंग सह जप बोही है।। जंग ॥ परा।। विक्यू पूपति तिहा, राजे वनदने तिहा है।। साप त्याग गुयायी जत्तो, दोक सह जप बोही है।। जंग ॥ एशा पता।। मध्यातिवृक्षम् ।। इञ्चत नृपत्त प्रवत्नात्यतापं, भागा जिक्क्य पूर्वित ।। सम्प्रस्थित रामजनाविनात्या, मादायराङ्गाक्रियते क्रियोशा।। स्थियमहित्रमणाच विच ।। सम्प्रस्थित रामजनाविनात्या, मादायराङ्गाक्रियते क्रियोशा।। भागमं-इंच्यकी राजापधुं, ब्रियिशकी प्रताप, यमनी पासेपी कोच, कुवेरज्ञाति समिति। प्रवापः-इंच्यकी राजापधुं, श्रीयपदी सन्पर्सितिः ए सर्वे देकेन राजानु क्रिरीः

का कि सीता जाणी है।। जंग ।। ११।। क्से रित पति सारी खो, सक्छ कलाये पूरो है।। क्षे शिक्ष सार्वा कार्या क्षेत्र हो। क्षे रित पति सारी खो।। ११।। क्षेत्र कार्य कार्य वसे कार्य कार्य कार्य कार्य सहार वसे कार्य सार्वा सहार सहार , वसे , वसे मारा कार्या माराया है।। सहार मारा कार्याया माराया है।। सहार मारा कार्याया माराया है।। सहार माराया कार्याया माराया है।। जंग माराया कार्याया है।। जंग माराया हो।। जंग माराया है।। जंग माराया है।। जंग माराया हो।। जंग हो।।

ध पांचेन युगते करे रे सो, टाखवा पापना पंक रे ॥ सोण ॥ ब्याणा एषपात्रा रखीया अस्म मधी रे खो, साचने वसती यान रे ॥ सीण ॥ पढिसाजे जावे करी रे छो, निरवय झस अस्म ने पान रे ॥ सीण ॥ ब्याण ॥ १० ॥ यतः ॥ अतुधुत्रुवस्म ॥ जर्यति वैक्यूबाया, को इया घात्रप वानतः ॥ अवीतसुकुमाखम्, तिर्षा सिरारसागरे ॥ १ ॥ जावारी- नायु सुनि हैं फतक रे।। सोण ॥ बर्गण ॥ १३ ॥ कैत कहें कामिनी प्रते रे लो होंगे पूत्र प्रवान रे ॥सोण। हैं कुस मंत्रता कुस विनमपी रे लो, क्षेत्र जूप समान रे ॥सीण ॥ ब्यण ॥१थ॥ * प्रत्यूपे श्रति हैं प्रेमहा रे लो, नेका शाक्षमा जाण रे ॥ सोण ॥ फत पूरुपा सुष्टणातवाा रे लो, बोल्या तेह एसर्वे जयवंता बर्तो कारणके, तेन संसार सागरने तरी गया।।शोंकाना नित्य प्रत्ये साजवे रे सो, कंपति क्षिस घरी नम रे ॥ सो॰ ॥ सातकेंत्रने साचवे रे दो, नियम घरे हित का म रे ॥ सो॰ ॥ ब्यु॰ ॥ ११ ॥ पुष्प सयोगे मन्यवा रे दो, क्रींबवती सुकुमाल रे ॥ सो॰ ॥ गन घरे संयोगयी रे सो, निरुषम जाग्य विकास रे ॥ सोण॥ ब्यज्ञ ॥ रेश ॥ वेख्यो सुपनी दीपतो रे सो, फड्यो फूड्यो • मुरक्कर रे ॥सीण ॥वेखी ब्रानंद क्रपन्यो रे सो, कतने कहे ्रि क्या चात्रय दानतः ॥ मर्वतिसृकुमात्वभ्, तिषाँ संसारसागरं ॥ १ ॥ जावार्षः इ. राजने रहेवा माटे स्यानक भाषवापी कोदया वेहया, मर्वतिसृकुमात मने वंट १८

मुत्राम रे ।।मो० ॥ म्य० ।।१५॥ श्राम अबूत करप्पी रे हो, होने हाुण निवानरे ।।सो। ।। भाना रे ।।मो० ॥ म्य० ।।१५॥ श्राम असरे ॥ सो० ॥ होन कहें बीजी डालमारे हो, भे बंचे हुन्वे रे हो, मानस सर जिम हुनरे ॥ सो० ॥ जिन कहें बीजी डालमारे हो, पुष्पे कुल अवनंत रे ॥ मो० ॥ च्य० ॥१३॥ श्राम कुल अवनंत रे ॥ मो० ॥ च्य० ॥१३॥ करवा जनम काम ॥ १ ॥ साधुने वस्ताविक करे, वर्ष नियम विनालाय ॥ विव साबदे, विराव कीन विहार ॥ १ ॥ पौष्प्र सस्मायिक करे, वर्ष नियम विनालाय ॥ वाव साबदे, विराव कीन विहार ॥ १ ॥ पौष्प्र सस्मायिक करे, वर्ष नियम विनालाय ॥ वाव पन्ने श्रह निहें जपु पालू मनसन माय ॥शा जीवव्या राख्या यतन, करुकराषु सार शाम कुल विहें कुण्या, करते केशि यतन ॥॥ अह उपम ॥ ते हे होठे पूरीया, करते केशिव यतन ॥॥। श्रि इपम ॥ ते हे होठे पूरीया, करते केशिव यतन ॥॥। सह उपम ॥ विन होव हे छोया, करते केशिव यान ॥॥। सह उपम ॥ विन होव हे छोया, करते केशिव यान ॥॥। सह हम् अपगर रे ॥ जुष्पे सम्यल सुख पासीये ॥१॥ ए आक्रयो ॥ वासिये डिरिं डाख हुन हम् अपगर रे ॥ जुष्पे सम्यल सुख पासीये ॥१॥ ए आक्रयो ॥ वासिये डिरिं डाख हुन हम् अपगर रे ॥ जुष्पे सम्यल सुख पासीये ॥१॥ ए आक्रयो ॥ वासिये डिर्म हास

तम ज्ञणी, ज्ञाम सतम करे जाम रे ॥ कन्मक्षितिष परगट बयो, देखी प्रमुदित थया कि ताम रे ॥ पुष्टेण ॥ मुद्रीत पराम रे ॥ पुष्टेण ॥ मुद्रीत पराम रे ॥ पुष्टेण ॥ पराम रे ॥ रे शाम रे ॥ पराम रे ॥ पराम रे ॥ रे शाम रे ॥ पराम रे ॥ रे शाम रे शाम रे ॥ रे शाम रे ॥ रे शाम रे शाम रे ॥ रे शाम रे शाम रे ॥ रे शाम रे शाम रे ॥ रे शाम रे शाम रे ॥ रे शाम रे ॥ रे शाम रे

हैं। वचन प्रतिपाल रे ॥ वान कब्जडुम रासनी, जिन कहे त्रीजी ढाल रे ॥ पुष्पेण ॥ रेंए ॥ हैं। ॥ शबेहा ॥ कलाकोप वेस्ती करी, रूपवेत शिरवार ॥ जाग्याधिक जायी करी, । हैं नित चिते घततार ॥१॥ पुष्येवयपी माहरे, श्री जिनवर्म पताय ॥ अगज भन्त कर्म भे न्यो, तयपा तयदा द्वाखवाय ॥१॥ एड्घी धन वाष्यो प्रथिक, यहा हुठ जगत विख्याता। १५ पंचमे पति वयती थड़, वारू वनी ए वात ॥१ ॥ तदापुष स्तवना कीजीए, तेष्टमा कोई १ त बाज ॥ द्वात पिषा चित राजी रहे, एक पथ बोड़ काज ॥४॥ पंचमे वेसी होठजी, थन १८ हाताया वताया ॥ प्रतिविन जाखे प्रेमशुं, विविय परे सुप्रमाषा ॥५॥ जन्म काचे ए वा १८ हाताया वताया ॥ प्रतिविन जाखे प्रेमशुं, विविय परे सुप्रमाषा ॥६॥ जन्म काचे ए वा १८ हाता पत्त प्राचो प्रति त्रूर ॥ इःख वोष्टग हो टब्चा, अम कुत्व भवर सुर ॥६॥ विनयं १८ विद्या निवो, प्रवर नहीं को आज ॥ अप्रजात ए प्रागणे, कोय न प्रावे काज ॥॥ । ताब ध पी ।। पुष्य न मूकीए ए वेंकी ।। वयुष मुखी निज्ञ नातना रे, ब्राप्रज सुत ब्रह्मुबाय ।। त्रिष्ये मिलीने तातना रे, ब्रा | ब्रा प्रथामे पायो रे ।। तातजी साजबो ।। र अमची ब्ररदासो रे, मूकी ब्रामखो ।। मन रा | ब्री विसवासो रे, तातजी साजबो ।। र ।। ए ब्राक्यो।। पबकुमर ब्रम ब्रनुज छे रे, रूप क्सा ब्रानिराम ॥ तिषो करी ब्रमे प्रमुबितपयो रे, रहीए सवाँ युन्न कामो रे ॥तार्ण ॥१॥ ्था ए धमन घात वातहो रे, मायायकी निरधार ॥ माडी जाया दोहीजा रे, जायो सयस सं |औ सारो रे ॥ तारु॥॥ पिरा सननी गण ज्यन्त्रे सारो रे ॥ ताण ॥श्या द्वानी गुण वर्षाना रे, न घटे तुमने रे तात ॥ नीति शास्त्रमें पिए कही रे, ते मू वीसरी वातो रे ॥ ताण ॥था। यतः ॥ अतुषुत्रृकुत्तम्, ॥ पत्यके गु स्व स्तुत्या, परोहे मित्र वाषता ॥ कमीते वास नृत्याम, पुत्रामेव मूतास्थियः ॥ १ ॥ म्,॥ वित्रिक्ष्य निम् गुर्धा, न परस्त नय मुश्रस्त पन्नस्त ॥ महिलान नोत्त्रयावि हु, न नस्तए जेण माहप्प ॥ग्।। नावार्थः-नेवकना गुण प्रत्यक्षे कद्वार्था, पुत्रना गुण परोक्षे क्यार्था अने स्त्रीना गुण कदि पण नहि बोलवार्था पोतार्तु महोटाइपर्णु सचवाय डे तेम ॥ ताप ॥ ६॥ ते माटे श्वे आजधी रे, सुत गुषा वर्षान वात ॥ मत करण्यो कोइ ब्रागले रे, ए अम वचन विख्यातो रे ॥ ता॰ ॥ आ वचन मुखी तव व्रोवकी रे, मुतने कहे सुधि F दास थ्रने भनुचरोना, तेमज पुत्र श्रमे स्वीना मरषा पठी बखाषा करवा ॥१॥॥ श्रापीबुच उता जो कि बोले, तो माननी नाहा थाप ॥श। घुन गुण बर्षावते धके रे, बधुता खबीए पिए। विनय न साचवे रे, मानतारों होयं व्यापो रे ॥ ताण ॥ ए ॥ कुख त्रावार्य -प्रत्यक्षमा गुरुना, परीक्षमा मित्र प्रते वायवोना, प्रापर्धु कार्य षड् रद्या

बार ॥ गुण प्राहक नुमें को नहीं रे, तियते मूठ गमारों रे ॥ पूत्रजी सात्रतों ॥ ए अमची के लंक वातों रे, मूकी क्षामखों ॥ जिम पामों मुखबातों रे, पूत्रजी सात्रतों ॥ ए अमिक एक वातों रे, मूकी क्षामखों ॥ जिम पामों मुखबातों रे पूत्रजी सात्रतों ॥ ए॥ ए प्रांत के ला। वाता पंत्री के कार न माने कोचों रे ॥ पूणाणाणा घणें कहेता होणफ हुने रे, वियाने घरना रे काजा। तिज्ञ साव्य क्षाबंदि रे, पामीजे अति साजों रे ॥ पूणा। ए ॥ ए प्रांत साजा वाता रे। पूर्ण।। ए ॥ ए प्रांत साजा रे। पूर्ण।। ए ॥ या वाता रे। पूर्ण।। वाता साजा न मुक्ते ने ॥ या वाता रे। पूर्ण।। ए मुक्ते ने ॥ या साजायां न प्रांत वाता न पात्री । ए ए पापा रे। पूर्ण प्रांत है । पूर्ण।। प्रांत ने सावा न मान्ते ने भावा न मान्ते। प्रांत है । पूर्ण। रे। पूर्ण प्रांत हो सावा न मान्ते। या प्रांत न मान्ते। या प्रांत न मान्ते। या प्रांत न मान्ते। या प्रांत माने। या प्रांत न माने। या प्रांत माने। या प्रांत माने। या मा

करता कि कारण के, एक चंद्र भारता जगतना ज्ञंचाराने हुर करे हे, पण ताराजनी तमूद् करता नथी ॥१॥ तान चंद्रन सुणी ततक्ष्ये रे, बटकी बोद्या रे तेह ॥ एक पखी इम ताणता रे, बाएयो तुमचो नेहो रे ॥ तातजी शाजवा ॥१॥ व्यवसायांचे बदाविमें रे, क्ष्म क्षमें बाजे भाति हूर ॥ कप्त वसू तोफानमा रे, जिल्हां नवि विसे सुरो रे ॥ ताणा।१॥ ॥ जों करण व्यापारे रे ॥ ताणा।१॥॥ तब्का ताव घणी हामें रे, वर्षाकांचे रे बुधि ॥ जूख जांचे करण व्यापारे रे ॥ ताणा।१॥॥ तब्का ताव घणी हामें रे, वर्षाकांचे रे बुधि ॥ जूख कर्ष जांचे साव । ते पण धनने कारणे रे, जोवो हुत्य विमासो रे ॥ ताणा। १६॥ क्षि पतः ॥ मवाकाताबुत्तम् ॥ मीनानमूकः प्रचनपदुः वातुवाजव्यकोवा, कात्यानीह यवि एसमाहनो पोणिनामच्यान्यः ॥ ह ॥ त्रावाचां- मौन धारण करवाखी मृगो, बोद्यामा ह पतुर सेवाथी वाचाल अपवा चहु घोतकथां, कमागुणाची बीक्या, सहन गुण न होवा ह पीतामसी, हम्मेहापाने रहेनारोहोय तो जोनारो, अने दूर होतो होप तो गरिव, ए प्रका

त्वत्ता द्र्या ।।।।। बहुव प्रयास षकी तिषे, बान्न बद्यो क्षति स्वड्य लान रे ।। चिते नोजन ही विधे, देशु अतिहि अनड्य लाम रे ।।होचण।।११।। बाज निया सविहोपसी, तैल

विद्यायां मार्थाय सुरो, सक्त क्यायके पूरों हो।। मुणा भावे वे ए पक्वायापुर पासे, विद्यायां मार्थाय सुरो, सक्त क्यायके पूरों हो। मुणा भावायां विद्यायां वाल्यो, नेट मुकीने मित्र पाल्यों हो।। मुणा सुणा सुणा सुणा सुणा प्रमान स्वाया वे पहुंचा। साम्प्रमान सुर्वे के पहुंचा। साम्प्रमान सुर्वे के पहुंचा। साम्प्रमान सुर्वे के प्रमान सुर्वे हो।। सुणा एवं कांच करें क्या हो।। सुणा एवं हो।। सुणा एवं कांच करें को ।। सुणा एवं हो।। सुणा एवं हो।। सुणा प्रमान हर स्वयों, सित्र नहीं मारे, यथु यथु दिखं हो।। सुणा पत्र नांची मारे हो।। सुणा मथम सो होर को भीति वचन चिन होले हो।। इद्धा खोटो हो।। सुणा मथम तो वेर कांची नीले, नीति वचन चिन होजे हो।। ।। नद्दी ज्ञष्ठक ऊजावलो, समरे श्री गुरु केव ॥॥॥

॥ जात ६ दी ॥ (भूराजी ज मने गोडे न राख्यो ए वेही)

॥ जात ६ दी ॥ (भूराजी ज मने गोडे न राख्यो हो ॥ मुज्यम सनेष्ठी

सनजन अवस्ति पेको ॥ए आकर्षी ॥ सेव भनोपम तेषे ततक्षय दीयो, महेश्वरे कर

सनजन अवस्ति पेको ॥ गुप्तरेषो तेषो बचनज कीयो, मनद मनोरय सीयो हो ॥

एपी दीगो हो॥मुज्यरुणाशा गुप्तरेषो तेषो बचनज कीयो, मनद मनोरय सीयो हो ॥

एको दिवामें सिख्यो मित्र सीमेंत्रे विचारी, स्थानपुरसी मुखकारी हो ॥मुणाशा जनर सिंगो मित्र सीमेंत्रे किवारी, स्थानपुरसी मुखकारी हो ॥मुणाशा जनर

हैं। हो।। हुए।। बस्तु अपायक सिव सादवी दिषिण, सत्यंकार तस दीवा हो।। हुए।। रेप कार्य करी विन ब्राणद पाने, घनो वेठो बढवावे हो।। हुए।। एहने महेन्यरवंत सापेप पाने, धावे पाविक उद्धारो हो।। हुए।। रेश। हुशलावाप पूठे हिन पायी, मुख कहें म है पुरी वाणी हो।। मुण। कप विक्रयतणी वात जणाने, सापेप तब समजाने हो।। हुए।। है।। ।।।।। धाभ वनसोर-पाने पुत्रे ब्रमारो, प्रद्यो ए सर्वे सुनिचारो हो।। हुए।। देशे होवो हवे ए हैं।। ।।।।। पानसोर-पाने पुत्रे ब्रमारो, प्रद्यो ए सर्वे सुनिचारो हो।। हुए।। देशे होवो हवे ए हैं। हो।। हो।। हि।। हि।।। धामारे हो।। हुए।। रिपा महेन्यरदन कहे वाक भमारो, वोप न है। होई तुमारो हो।। हुए।। धामत कीषो तस फल लीषो, चितित काज न सीघो हो।। ॥हुणार ६॥ यतः॥षालस्पे हि मनुष्याषां, क्रारीरस्को मक्राचरिषुः॥ सस्त्युवम समो वं घु, कृत्वाप नावसीदति ॥१॥ जावाषः पावस ए माषासीना क्रारीरमा रहेवो महोटो कैरी ठे, ज्यमना क्षेत्रो कोइ जाई नथी, जे करवाबी माषासीनो नाश यतो नथी ॥१॥ ष्रावस सम कोइ वैरी न बाख्यो, नीतिम एइवो जाख्यो हो ॥दुण॥ पिष इवे वाज घ माने हिवारो, का ब्रमारो मुघारो हो ॥ मुण॥१॥॥ सार्पेप महेष्वर विष्ठु मिती जाखे, वज्ञातुं (देत राखे दो ॥सुण। ए सवि किरियाषा श्रमने दीजे, वक्ष वाज्र घन दीजे दो ॥सुण।१ ण। घनपति चिते मुज कारज सीयो, में मनमान्यो कीयो दो ॥सुण। कृषा एक

विचारीने इम गोर्स, नदि की सित्रजी नुम तीये हो ॥सुणाशिणा जो सुमने ने स्वप ए | कि पण्य करो, तो पासी सरवे जानेरो हो ॥सुणा इम कद्दी धन सक होई जतावे, ब्रन्यों ब्रो के समजाने हो ॥सुणाशिणा घनकुमर निक्षा जी जोय जावे, मित्रभुत चन लोई ब्रो है । शिणाशिणा माने मित्रभार ने अप गांवे हो। शिणाशिणा माने पिर सर्वा, 'ब्रान्जाया ने गुण गांवे हो। शिणाशिणा माने पिर सरवी, 'हे हुच जिन्दी अप ने ने कर्ड एको पानेशे । शिणाशिणा बाद कर्डा इस पानेशे । एक तक विनार। न्यायाक्कित ब्राप्या पके, हुच जिन्दी अप माने विर सरवी, हुच विनाशिणाशिणाशिणाशिणा माने हुच कर्ड पाने तातने, ए एक तक विनाश माने आप पक्ता गारा। तह पानेशे सरवाने, संतीत्मे गुष्योद्ध। सहस एक सु हुच वर्णोनो, ज्या पानेशे सरवा कुट्ड मिने, हुच वर्णोनो, ज्या का निर्मा प्रमार ॥।।। तह पानेशे सरवाने, संतीत्मे गुष्योद्ध। सहस एक सु हुच वर्णोनो, ज्या पानेशे वर्णोने में हुच वर्णोनो, ज्या पानेशे सरवा कुट्ड मिने, हुच वर्णोनो, पानेशे सरवा कुट्ड मिने, हुच वर्णोने, पानेशिणोने सरवा कुट्ड मिने, हुच वर्णोने में हिच ।।। योचक जन संतीरिया, यपायोग्य देह बात ।।।।। देवरजी अम हुस सित्रक, जीवा कोदी वरीय पानेशे अपि भारीर।।। देवरजी अम हुस सित्रक, जीवा कोदी वरीय ।।।।

॥ बाल 3 मी ॥ (करेलवर्षां चह देरे ए देशी) हवे ते धनकुमारने, तेही कदे घनसार ॥ कुल मन्या तु मांदरे, तु मुज कुल श्या गार ॥ बतुर जन सानखो रे ॥ सानलो पुष्यनी बात, चतुर जन सानबो रे ॥१॥ ए आ कथी ॥ श्रेगज तुज जनम्या पनी, अम कुल वाच्ये वान ॥ कि दृ दि घड़ अम घरे, जग जहा पयो सुप्रमाण ॥चणाश्॥ माता होविबती तता. इरपित वदन विख्यात ॥ सु

तमा लिये कवारपा, तुं मुज सुन्नग सुजात ।ाचण।१॥ जीवाई जत्ती जातिसुं, रंगे गा ये गीत ॥ खाढ सहाव प्रति पपा, देवरने मुप्तति ।।चण।श। सपपा सर्वपी सहु मिली, करे वलापा विशेष ॥ घषसुमर सरिलो नहीं, पुप्प पब्ल सुविशेष ।।चण।।ए॥ तव जिपपे बादव तिंदा, रोष परे मनमाशि ॥ प्रणाल परिलाई करें, प्रवयुष्ण माहक प्राष्टि ॥ चण ॥॥ ते देखी धनतारजी, तेढावीने तेह ॥ ष्माज त्रिएयेने तता, समजावे सप्तेह ॥ ।चणाश। बार्य कैषव ए तुम तथो, जाग्य बंदे जरपूर ॥ विनय विवेक विद्या नीसो, भ म कुन भवर सूर ।चणाणा एइनी सेवापी तुमे, सुख जहेशो श्रीकार ॥ क्ट्ययुक्त स म एंद है, वैति पूरणहार ।चणाणा देखे इयो एक याममे, अञ्चो जक्ष दीनार ॥

जोजन विधि जानी साचवी, संतोच्यो प्ररिवार ।।चण।।१ण। वसी जोजारंन नजा, जूप क्षेत्र । प्रक्रिया मान्या।। प्रक्रिया छुट्टि । प्रक्रिया छुट्टि ।। विश्व प्रक्रिया जाने हर्ग विचार ।। मधर सूकी मन तणी, सेवो छुपर सार ।। चण हर्ष ।। सु।। मधर घलो मनमें घणो, कौरवे पानव साज ।। तो हें ड खीया ज्ञानि घणा, कौरवे पानव साज ।। तो हर्ग हर्म हर्म हर्म ।। सु।। मधर घलो मनमें घणो, कौरवे पानव साज ।। ते ज्ञान क्षेत्र साक्षी विदर्श की ।। वाणा। ।।। वाणा। ।।। एष्ट्या उपनय आति घणा, वास्या शास्त्र मफार ॥। हर्म ।। वोहा ।। याण त्रीजे शिक्षा मणर ।।।। वाणा। ।।। वोहा ।। याण त्रीजे शिक्षा मणर निक्त मन्या ।।। वोहा ।। याण त्रीजे शिक्षा मणर निक्त मन्या ।। श्रिक्त ।। ग्रेस ति किस्मा नण, निर्म वासीने वीप ।। जाति होन पण गुण ।

श्रिक्त पक्ती, विकित्ती नेक्ता ।। तेहने तपना

श्रिक्त पक्ती, प्रमे सुर त्रुपान ।।शा ग्रुण हेरी हे अपूष्य हे, ग्रुणवती पूजाप ।। जपन ह हे ग्रुण पक्ती, सेवे सुर त्रुपान ।।शा ग्रुण हेरी हे अपूष्य हे, ग्रुणवती । काक कृत्ण पिका है हा हा हो हो हो, वापन कोपन नाप ।।शा अगुदुवृत्तम ।। काक कृत्ण पिका ।।।।

श्रिक्त परिकारिक काकपो: ॥ वत्तिमास सेमाने, काल काकः पिकापिका ॥।।।।

श्रिक्तणा, को त्रेविषिक काकपो: ॥ वत्तिमास सेमाने, काल काकः विकास दोमा दो ।।।।

श्रिक्तणा, को त्रेविषक काकपो: ॥ वत्तिमास सेमाने, काल काकः विकास हो ।।।।।

र ाषणाशा ठकायनी जयशा करे रे, पांचे प्रचचन माय ।षणा मद ब्रांचे मदागा घरे रे, टांबे चार कपाय ।षणाशा मासखमदाने पारषे रे, तिकरष हाइ ब्रांचीन ।यण। गौच रिये पदोत्यो तिदा रे, संयमधी सप्ततीनाषणाशाऽर्यासमितिये चादातो रे, कोइक नगर मफार ।षणाकरतो हाइ गवेपया रे, ते गयो इन्य ब्रागारा।षणाए।।ब्रांच्यो देखी साघुजी क्षेट कहे छत साजलो रे, मनोदर मादरी वात ॥ घन घन साघुजी रे ॥ शास्त्रध की में संप्रद्यो रे, अनोपम ए अवदात ॥ धन धन सामुजी रे ॥१॥ ए आकर्षा ॥ मुनि वर एक मदावली रे, तपसीमें शिरदार ॥वण। पंच मदावत जालवे रे, साचवे पंचाचा र, आविका पर ठजमात ॥ष्णा प्रानादिक जुजुमा रे, सावी जरी जरी यात ॥यण ॥श। स्वामीजी अनुमद करो रे, वदोरो एद्ज आदार ।षण। देखी सदोप ने सामुजी रे, करे अन्यम विशार ।षण।श। आविका चिन विलाखी पर्ड रे, वेठी घरने बार ।षण।। एद हैं। पर ने ने निराम निर्माण आवक्त चित्र विवासी पड़ रें, वैठी घरने बार गुषागा एड़ हैं। किरतो गौचरी रें, माब्यो प्रवर भएगार गियाणा सरस्वपण विचरे सदा रें, गुषाग्रा हैं। इस गुषा सीम । घवगुषा एक जोवे नहीं रें, मुबिहितदी जयसीन । गियाणा घमसान हैं। देई करी रें, मनो घरने बार । विण। विकसित बदने श्राविका रें, वहोरावे ते ष्राद्वार ॥ विव ॥ बाख ए मी ॥ (माननी मोहनी रे अपवा नहानो नाहसो रे ए वेहा)

हैं ॥१७॥ वादी वे करबोढिने रे, पूटे मधुरी वात ाषण। तुमने षप्रीति न कराजे रे, तो जा कि वह प्रवादात ।वणा ११॥ वह प्रवादात ।वणा ११॥ तुम सरिखों एक सायुजी रे, षाज्यों हतो इसे जाया ।वणा विषा विषा वह प्रवादात ।वणा ११॥ तह ने कारण सायुजी रे, कि वादों करीय पताय ।वणा। तव वोख्यों मुनिवर तिहा रे, मुण जह सुखाय ।वणा। ३॥ वह ताया करीय पताय ।वणा। ३॥ वह सायाय वाद परे रे, पंचित्य हो मुनिवर महोटो यती रे, सम दम गुण संयुक्त ।वणा। मनायाय वाद परे रे, पंचित्य हो पाया। शो प्रवादाय ।वणा। ३॥ वह सायाय वाद्याय ।वणा। ३॥ वह स्वाद्याय विषय ।वणा। विषय हो स्वाद्याय ।वणा। १॥ व्याद्याय ।वणा। १॥ व्याद्याय ।वणा। १॥ व्याद्याय ।वणा। वाद्याय ।वणा। वाद्याय ।वणा। वाद्याय ।वणा। वाद्याय ।वणा। वाद्याय ।वणा। वाद्याय ।वणा वाद्याय वाद्याय ।वणा वाद्याय वाद्याय ।वणा वाद्याय ।वणा वाद्याय ।वणा वाद्याय ।वणा वाद्याय ।वणा वाद्याय ।वणा वाद्याय वाद्याय ।वणा वाद्याय ।वणा वाद्याय ।वणा वाद्याय वाद्याय ।वणा वाद्याय की प्यतंर परिमुद्धी मूकाएवा तथा चारित्रने रक्षण करवाना मार्थे एवा मुनियो, मात्र भू मॉफ्करणनेज राखे हे भयात बीजु काई पण पाने राखता नथी ॥१॥ ते मुनि सुरु १० सारिखा रे, हैं दूँ सोषु समान ॥दण। हूँ बायम ते दूँस हे रे, मुनि गुण रपण निक् मून । षण॥१३॥ हूँ हुंमाख ते गच समो रे, हूँ सुग मुगपति तेष ।षण॥ वदरद्विस कार

मारे, ते समता गुयगेद ।विणा शि इम स्तवना करी साबुजी है, विचरे मिथिय कि मोर्स ।विणा जिम के मारमी अतिमारे, औता मुखी उछाए ।। वण ।। राण ।। जा कारम ।। मारमिय अरावेक, हरांबी विज्ञ मारा ।। ममुवितपपे आखे ह ।। वेदा ।। साम्वीने हे आविका, हरांबी विज्ञ मारा ।। ममुवितपपे आखे ह ।। वेदा ।। साम्वीने अरावेका, हरांबी विज्ञ मुख्य के मारमिय ।। कारमिय ।। कारमिय ।। वाद्य प्राप्त ।। साम मारमिय मारमिय ।। साम प्राप्त ।। साम मिरमिय ।। वाद्य एप मी ।। (मन नमरा हे ए वेद्यी) ।। बाद्य ए मी ।। (मन नमरा हे ए वेद्यी) ।। बाद्य ए मी ।। (मन नमरा हे ए वेद्यी) ।। बाद्य ए मी ।। (मन नमरा हे ए वेद्यी) ।। वाद्य ए मी ।। (मन नमरा हे ए वेद्यी) ।। वाद्य ए मी ।। (मन नमरा हे ए वेद्यी) ।। वाद्य ए मी ।। (मन नमरा हे ए वेद्यी) ।। वाद्य ए मी ।। (मन नमरा हे ए वेद्यी) ।। वाद्य ए मी ।। (मन नमरा हे ए वेद्यी) ।। वाद्य ए मी ।। (मन नमरा हे ए वेद्यी) ।। वाद्य ए मी ।। (मन नमरा हे ए वेद्यी) ।। वाद्य ए मी ।। वाद्य पर्त ।। वाद्य ग्राप विज्ञ मार्थ ।। वाद्य वाद्य ।। वाद्य ।। वाद्य ।। वाद्य वाद्य ।। वाद्य ।।

भ मम सरिखा ग्रुड साधुने, मण। देजो सवा बहुमान ।।याण।११। ब्रमे पिछ पूर्वे एंह्वी, १ मण। विरची माया जाल ।।लाण। जनरजन कीषा घणा, मण। ह्ये ते सवि विसरात ।। १ खाण।११॥ इम कही ते मुनि संचक्षो, मण। नगरीमें तिषाताल ।।जाण। यचन द्युणी ते १ झाविका, मण। पासी इंग्ले बसराल ।जाण।१थ। चिते एक्टे निर्मुणी, मण। पासछा। तिक का ।।जाण। जे सद साम चित्र करे मण। के स्त्रीत दिस्के ।।स्ता।१।।। हैं सागारशा इस कही ने सुन संचक्षो, मणा नगरीमें तिपाताल गंलाणा बचन सुणी ते हैं ब्याविका, मणा पामी डाख भत्तराख गंलागारशा चिते एक्टे निर्मुणी, मणा पात्तष्ठा है ब्याविका, मणा पात्त करें। स्था विके एक्टे निर्मुणी, मणा पात्र प्रमार्थ है। तक डाट गंलागा ने ग्रुट सांद्र प्राप्त पात्र प्रमार्थ है। सांद्र ब्राविका मणा सुविक्षितमा किरवार गंलागा बीजो पण गुण रागीयो, मणा है। जग जन तारपादार गंलागाशश है। जीजो ए गुण मंडरी, मणा पापी माही प्रवान गंलागा । एक्टो सुख ब्रयलोकते, मणा डक्टन होने निवान गंलागाश्रण। ए द्यात सुखी तुमें, मणा है। मक्षर गेले पुत्र गंलागा भंडर मूक्यांची सवा, मणा तहें हो। पश सर्वेच गंलागाश लाइगार गंलागाश्रण। इस विनार हो। तहें जिन कर्ष मालागाश्रण। वहें वात्र शिवेच कर्ष मालागाश्रण। ॥ वोहा ॥ अथ घनसार तथा तनुज, त्रिएये मूढ मर्दत ॥ पितृदन शिक्षा धुथी, मनमें देप घरत ॥१॥ अवसर पामी एकदा, कदे सातने जात ॥ मया करी मुज कपरे, मुखो तातजी बात ॥१॥ घने जे कारज कियो, तेहबो न करे कोय ॥ इष विधि छव क विनय वही सुजगीय ॥साण॥१ए॥

हैं। (पुणासणाए॥ इस कही माला सुवर्णना रे, चारेने स्वपमेव ॥ चोराठ बोराठ आपीया है रे, व्यापारामें हेव ॥पुणासणाह॥ मुख्य ततुज विषये तदा रे, पहोत्या भाषपागार॥ किरि पाषा सीमा घषा रे, जासी सान अपार ॥पुणासणाश॥ कर्मवरो ते बस्तुमा रे, साननो म न रह्मो साम ॥ भर्पो दाम जुक्यो तवा रे, आति उपमयी अन्ताग ॥पुणासणाशा नोजन विषि नूसी गया रे, विषये दिवसे तेह ॥ शाम वदनसी ते तवा रे, वेठा भाषी गेह ।पुणा सणाशा मच चोषे बिन सांबसी है, घबकुमार बवार ॥ कुकनाविक अववोकन है, निष्य प करे तिषिवार ।पुणासणारण। बाज होशे पद्युपी जब्हों है, बारी इम मन बीर ॥ नगरमा कीतुक जीवतो रे, पहोत्यो चोहटे संघीर ।पुणासणा।११। पछु कप धाय छे जी हारे, तिहा मान्ये निरजीक।। बेटो सस्धानक ग्रही रे, चावेतो मुख पीक ।।पुणासण। ॥११॥ तेह्रवे एक ब्राज्ये तिहा रे, हुंद वेच्या नर कोप ॥ सक्ष्य पूर्ध देखी करी रे, "सी घो घमे सोप ॥पुणासण ॥१॥। एदवे नृप जित्रुश्चतो रे, ब्रिंदिसनानिच जात ॥ 'मप प्रपी कीहाववा रे, पाठ्यो ते सृविक्यात ॥पुणासण।१॥। देखी 'चरघ घना तणो रे, निम तसे रे, तो फिरी करो व्यवसाय ॥ एकेको दिन मानची रे, जीजन जगति कराय करियाया पाखानी छकाने । मोकरो "पषि माता सुष्री आपी पेटो झीपो +पीन रो पोकरो णुत्वयी सिंह ॥पुणासणाशश्र॥ ॥ सेह्य ॥ जोजन विधि करी जिस्ती, शेप रूच सुप्रकार ॥ जोजाईने मापी यो, बहेंचीने तिर्णवार ॥१॥ जोजाई लिप जामणा, दिनमें वा वा वा ।। जीजीकार स तत्त जप, स्वार्थ जगमें सार ॥१॥ यत ॥ भाषा भावो आवर विषे स्वर्ण रूपांबि ह्यु, वास जप, स्वार्थ जगमें सार ॥१॥ यत ॥ भाषा भावो आवर वित्रमाण स्वार्थ एको बि न्नज्य, आप्या विना अमे कोण दुमे कोण स्वार्थितान वर्षति ॥१॥ पावार्थः—सोदो अमे त्रज्य, आप्या विना अमे कोण दुमे कोण स्वार्थितान वर्षते ॥१॥ पावार्थः—सोदो अमे को ए वर्षामा एक स्वार्थंज सारो हे । ता मे नेसन पराते तम के के अमे कोण अमे तमे कोण १ ए रीते सबु स्वार्थंज सारो हे ।१॥ सप्या सप्य सुख चर्षारे वर्षार्थं सारो हे ।१॥ सप्या सप्य सुख चर्षारे वित्रमं, वीत्रार्थं । वुद्धियंत्री वर्षमें वर्षे, सारो हे ।१॥ सप्या स्वार्थं अप्यावित्रमं वर्षे, विवार ॥ यद्यो वर्षारे । वर्षे स्वार्थं । वर्षे सम्बर्धं स्वार्थं माहे स्वर्यं सरी स्वार्थं स्वार्थं से स्वरं सर्वत्रे स्वरंगं साथा।

तार्वात रिमर्गा त्रियात में बार्या, मार्यक्षीत्रमें काई म सुके, कहे धनसार हे जिएय तहुन्ने, पृतुम बात में बार्या, मार्यक्षीत्रमें काई मार्यक्षीत्रमें मार्यक्राया मुके हैं भी मार्यक्राया मार्यक्राया मार्यक्राया मार्यक्राया मार्यक्राया मार्यक्राया मार्यक्रमें मार्यक्राया मार्यक्रमार मार्यक्राया मार्यक्रमें मार्यक्राया मार्यक्षिया मार्यक्षिय मार्यक्षिय मार्यक्षिय मार्यक्षिय मार्यक्षिय मार्यक्षिय मार्यक्षिय मार्यक्षिय मार्यक्षिय मार्यक्ष्य मार्यक्षिय मार्यक्ष्य मार्यक्षिय मार्यक्ष्य मार्यक्षिय मार्यक्षिय मार्यक्ष्य मार्यक्षिय मार्यक्यक्य मार्यक्यक्य मार्यक्यक्यक्यक्यक्यक्यक्यक्यक्यक ॥ डाल ११ मी ॥ (माला क्यां ठेरे ए देशी

भि में । मण। ।।। पिया तिषामें वे एक अपवक्षण, गुण कोईनो नवि सासे ।। ईच्यांचे करी के सह जनना, गुण ते अवशुण जाते रे ।।मण। ।।। कोईनो गुण अवक्ष्यपणायी, सा के सह जनना, गुण ते अवशुण जाते रे ।।मण। ।।।। को कोईनो गुण अवक्ष्यपणायी, सा की ते हो। को शीर बूखे।। पाव मिले जो गुणना रागी, तो ते बुशू अति रुते रे ।।मण। ।।।। वि क्षायाणी कि क्षाया का नव की जे को की से सा काम करीए, तो पण चाहियो माणस कवापि कि क्षाया त्यांच के ते ।।। जो वारे कोइ सद्धान स्वति गोटवी तो क्षायों ।। वा का का वा को वार काम करीए, तो पण ते वी गोटवी तो क्ष्ययाणि के क्ष्या त्यांच कर वह गोण। जो वारे कोइ सद्धान शाय ।। वरावुष्य जनकः, कोक्षेत्र स्थाति हुन्।।। वा कि स्थाति हुन्।।। वा कर वा को को वा ता कर वा काम हिस्स स्थाति हुन्।।। तो हिस्स मिले हर ना स्थाति हुन्।। तो हिस्स मिले हर ना सुक्षोते।। तो हिस्स मिले हर ना मिले काम कर वा काम कर वा काम हिस्स मिले हर ना काम कर वा काम कर वा काम कर वा काम हिस्स काम सुल वा काम कर वा काम हिस्स काम सुल वा काम कर वा काम हिस्स काम सुल वा काम कर वा काम कर वा काम कर वा काम हिस्स काम हिस्स काम कर वा काम कर वा काम कर वा काम काम हिस्स काम हिस्स काम वा काम हिस्स काम ह

中山中

1 बनमा कोई सरोबर : सुत वचन पिता प्रेक्नो।

60 . मधरमधर 19 - G

॥ मृप भूगया 1 211 यतः लब्बक ब ॥१॥ जयाकास

गुन् काय ॥ कुषा तूपा 1 HE . बासित दीतित स्वाम ग्राप्ता र साम ।। श्रीतत्व ग्रयाये तिदां, राय करे विश्वाम ॥६॥ यत ॥ सद्धान आज्या प्राहु जा, मागे चार रतन्न ॥ वाषी पाषी साथरो, सपि साध प्रजा ॥२॥ अङ्ग्यक्ति अवसर तथी, तेपख बहुनी थाप ॥ विषा श्रवसर जे कीजिए, तेतो नावे काप ॥३॥ ा बात ११ मी ॥ (राजि मुगानपणीरी नागरी फूबी ए वेही)
सांज नृप कहे हुं एकाकी, राजि किम रहे ठे इहा अहिकारी ॥ राजि किम विस् रेजी कहो जगगरी, राजि जोणे कीपी तेवा सारी, राजि नृप कहे हु एकाकी ॥ ए बाकणी ॥ राजि एणे वनमें एणे डामे, राजि इहा रहे ठे कहे हो कामे ॥राजिणाशा सांजि मृग मृगपति वनि मुनिवरने, राजि बाि वियासावक नरते ॥राणा सांजि पण गृहवेते वनमें रहेवो, राजि एतो अव्वाजि कारण कहेवो ॥राणाशा सांज तब बोक्यो पंकांग्रय वाणी, राजि पूर्णान हुं गुण्यवाणी ॥राणा सांज हुंतो नगरी अयोद्धानो वासी, रा हिं कुंनकार कजा अन्यासी ॥राणाशा सांज खी पुत्राविक ठे बहुआ, राजि माहरे तिहा है विर कुंगकार कजा अन्यासी ॥राणाशा सांज खी पुत्राविक ठे बहुआ, राजि माहरे तिहा है । ।राणाशा सांज कोई पर्याय पुत्र सम्प्रवावे, सांज तो मुजधी मौनन घाये ॥राणाधा। राजि कोई परगुप मुज सनवावे, राजि तो मुज झिर दूवण आवे ॥राण। राजि गुपावर्णने मुषता टार्वु, राजि नदी तो निज झिर मास्फार्लु ॥राणाए॥ राजि एइ マオータ

ष्ठवगुष मुजमें म्होटो, राजि परगुष न समू षर्द जोटो ॥राण। राजि नित्य कलदो हुने गृह साथे, राजि तिषो लाज न रही रुज हाये ॥राण।६॥ यतः॥ ष्रमशिक्वेतिष्य नासरु वि ट्यः, पित्रिक्कीत्र्य नासरु पद्ध ॥ झृष्टिक्कितिष्य नासरु जब्छा, ष्रश्चोलिस्प नासरु लब्छा

मिखी समकाले ॥राण॥१६॥ राजि मैत्री सामत षया सह नेला ।राण। राजि इम बारमी ढाल ए नाखी, राजि तमेला, राजि भात्रीने

तित कहे पुपय सच्छे नाखी ॥ राग। १३॥
॥ वोहा ॥ चालते वनमें नृप, दीठी कन्या एक ॥ चुके बोरा वींधाती, कुबपरे हैं।
॥ वोहा ॥ चालते वनमें नृप, दीठी कन्या एक ॥ चुके बोरा वींधाती, कुबपरे हैं।
॥ के काशा मुगनवारी चंदानती, चंपकवरपी देह ॥ देखी नृप चित चितचे, ग्रू रित के स्ता एक ॥ शा के क्वा मुजने इहा, खाती वे वनदेव ॥ के इंजाबी खपछरा, रमावा का भू फार एक । ॥। क्य कि तींचामी, होमामों शिरवार ॥ पूर्व एहने प्रेमछ, नाम ग्राम सुर प्रका । ॥ वास रश मी ॥ (योगियी मनमानी ए देही)
तव बोखी बाजा सुकुमाला, करी लाज धुंघट मुविहाातारे।। कामिनी मन मानी।। के स्वा मुजन बादी, है रे कई मुज करम कहायी रे।। कामिनी मन मानी।। के खार प्रा क्या मुजन साती। है रे कई मुज करम कहायी रे।। कामिनी मन मानी।। के सिक विद्या मन्यासी, तस तनया है वे तुम वासी रे।। काणाशा नाम खब्का मुज ताते हैं विद्या मन्यासी, वास्या वाववट है सिका मन्यासी, सार तनया है वे तुम वासी रे।। काणाशा नाम खब्का मुज ताते हैं वींगे, मुज पता चया ते वेई सींगे, पाख्या जववट है वींगे, मुज पता चया रेगरे रे।। काणाशा में वाह रागरे।। काणाशा है वासपोग प्राक्या जात्यर है वींगे, सार सार रे।। काणाशा में वाह रेगरे।। काणाशा में वाह रेगरे।। काणाशा में वाह रेगरे।। काणाशा है वाह से जात्ये, एक फ्राम बासे त्य वार यो रे।। काणाशा में वाह रेगरे रो। काणाशा है वाह रेगरे।

मिणे ततती ततती उपकेंंंंं, मावी हूं समुझं कंंते रे ।काण। थ। ईष वनमें रह्दी काल कि गमा, बनना फव फूलने खादूं रे ।काण। वात सबि रह्मा परदेशे, हूं एकाकी ए के गमा, बनना फव फूलने खादूं रे ।काण। वात सबि रह्मा परदेशे, हूं एकाकी ए हैं के बादनी माही बर्ज्यों रे ।काण।हा। राजा कुशले नगरे कि क्याना पतन केल्पों, लेंडे बाहनी माही बर्ज्यों रे ।काण।हा। राजा कुशले नगरे कि आज्या, पता जीत निशान बजाव्या रे ।काण। रूप प्रविक्ता मान्यों, विच मान्यां ति वात स्वावा हा। हैं कि परपापी रे ।काण।शा। हित बरी नाम खोबावती प्राप्यों, विच मान्यां, कोंचे गुण ते सि जाप्यों रे ।काण। प्राप्ते प्रवृद्धि ने प्रविद्यां पता प्रविद्यां प्रविद्यां प्रविद्यां प्रविद्यां प्रविद्यां प्रविद्यां प्रविद्यां कि कहेंगे, ते तस्करनो फव खें हैं से ।काण।शा पाममें पद्ध बजाव्यों जापी, सह सिम्बर्ग प्रविद्यां विवस्तां विवस गमाने, पुनरिष बली ते छत् भावें रे ।काण।रा विवस गमाने, पुनरिष वली ते छत् भावें रे ।काण।रा विवसंतां विवस गमाने, पुनरिष वली ते छत् भावें रे ।काण।रा विवसंतां विवस गमाने, पुनरिष वली ते छत् भावें रे ।काण।रा विवसंतां विवसंतां विवस गमाने, पुनरिष वली ते छत् प्रविद्यां ने ।काण।रा विवसंतां विवसंतां विवस गमाने, पुनरिष वली ते छत् । विवसंतां विवसंतां विवस गमाने, तुनरिष वली ते छत् । वस्ता ने पुर्ण कावें, राणीयुत मिल वहवावे रे ।काण।रा। सामें पूर्व एहनो नामने गुण कहे। के भारते

ह हमो हो। एका शारशा राष्ट्री कक्षेत तब कुक ए केहना, हूँ नाम न जायुं एहना रे । काश। है। एहना फन कहा पित कुप खावे, मुज मनमें प्रचारिज खावे रे । काश। शानिसुषी प्रटक के पहने रे । काश। मुजयी पिया बोक्यूं न रहेवाये, ए हैं। वही पक्षीयमें, को इंग शुं कहें हे एहने रे । काश। मुजयी पिया बोक्यूं न रहेवाये, ए हैं। इस पत्र के विकास से किस से हेवाये रे । काश। शा ईम कही निज मस्तक प्रास्फासे, प्रदी । इस के वक्षी ततकावे रे । काश। पाकृत हे वे घेषक जासे, मन कृत्ये कियों अदी रे । है विकास से विकास से पान्ते हैं। है । इस काश। रे ।। या पत्र का विकास से । पुनरि पान्ते कि से । किया से विचायती नाम प्रारोप्यों, एये खस्का नाम न सोप्यों रे । काश। है। पत्र रे । काश। में विचायती नाम प्रारोप्यों, एये खस्का नाम न सोप्यों रे । काश। है। कि प्रदे हैं। मनपी लाज बेत नहीं ने होते, कु की के कहें हवे ते होने रे । काश। पुनरि कातोर कोई हैं। मनपी लाज बेत नहीं ने हक्षीये कहों हवे ते होने रे । एकाश। युक्ति किता है।

हा नागा (पा। पता। नागा नाव वापा वापाता, नाय ने जास अपना । जुनराप ने देश कर्या करारा है। है। वापार पा प्रवास करारा है। वापार पा प्रवास करारा है। वापार पा प्रवास में माना है। वापार पा प्रवास माना नामारे जो है। वापार माना नामारा है। वापार पा प्रवास माना नामारा है। वापार पा प्रवास माना माना माना है। वापार पा प्रवास माना है। वापार पा प्रवास करा है। वापार पा प्रवास करा है। वापार पा प्रवास माना है। वापार वापार माना है।

हैं। । । । वित्त क्षेत्र हम जाले, कुरण्यती कृदिन कमाई रे ।। क्षेत्र हम जाले, कुरण्यती कृदिन कमाई रे ।। क्षेत्र हम जाले, कुरण्यती कृदिन कमाई रे ।। क्षेत्र हम जाले कुरण्यती कृदिन कमाई रे ।। क्षेत्र हम जाले चीन हुदन, सीमां रह्म करि माकरा पुत्र ए, हिं सार हम हा ।। हम आवोचीन तुरत, सीमां रह्म हमर ।। गका कि कि शिना हम हिं सार, कुरण्या से सिन रात ।। शा हम करते तस एकवा, भाव्यो अमे रोग ।। सन क्या ति हमरे, कुरण्य करें हमरे ।। हम करते तस एकवा, भाव्यो अमे रोग ।। सन क्या वास ।। में घन कोहिनोमें विषुद्ध, सिन्छ्या जोग विवास ।।।। ते जारी ए पर्वकते, स वास ।। में वन कोहिनोमें विषुद्ध, सिन्छ्या जोग विवास ।।।। ते जारी ए पर्वकते, स वीप परे सुज साम ।।।। हम कहेती ते । कि निष्धि गुणवाम ।।। कि निष्धि गुणवाम निमुयो गुषावाम सुत नेष्टने, सेर्घ चा बात ॥ म भन मार्गा प्रतवने संस्कारमा मुजात बयो, पहोत्या जम मुकमति, परीके तिथिवार ॥ विनमी मुजीनत बयो, पहोत्या जम मे बटे नहीं, मृतक खाटची जाम ॥ तब तेहनी स्त्री ततुजने, कहे — महने तमे, करो भाग तंस्कार ॥ सुणी कपण

।। बाद १५ मी ।। (मोरही गुयावंती ए वेशी) को पर्वंक ते द्वेहने रे सुरीजन, चीटा विचे चंतावा। पूरव दुएप फांवियो।। वे प्रपाने केवो तिका रे सुरीजन, जोवे बाद गोपाता। पूरव पुष्प फिनियो।।१।। ए भाक शी।। साटवे पिण दोवे निहे रे सुण, सुतक्कतणो तेह जाया। पूणा दीजे बन्ने दूरधी रे सुण, सुंदर खाट सुवाय।।पूणाशा स्वर सामीने मूतज्यो रे सुण, तीवो हेई 'बाम।पूण। वे उनहाबी घेर सायोयोरे सुण, पर्वंक वन्ने जाम।।पूणाशा घ्रमन तब त्रिपरे तिहारे रे सुण, है। सुर, जूजुषा वया सुप्रकार ॥पूर्णाशा रतन ब्रम्सिक नीसंखा रे सुर, खाटधकी तिथि है बार ॥पूर्णा बाहाब कोडी विनारनों रे सुर, इरख्यो तब बनसार ॥पुणाश्॥ सुतमे ये हे सु है। सो एहना रे सुर, जारयतथों बस चूर ॥पुणा पग पग पामे संपदा रे सुर, पुरसति के । हैं हमा तिषिवार ॥ए॥ प्रेतवने जव ते गया, तव तेदनो रखवाला। कलद करी पर्यंकते, ॥ हैं केई चाटनो चंनाल ॥ १०॥ हतवा लाग्या तास ॥पूर्णो मृतक खाटपी पामकों रे सुष, वाम प्रमुख सुविलात ॥पूर् ॥४॥ खाट प्रही गुहमे यता रे सुष, ठवकावे घनसार ॥पूर्ण। ततकृषा ईसने कपखा रे

ह कहे वचन ग्रमंद ॥ पूण ॥ १५ ॥ ॥ दोहा ॥ पंचाचार विचारपर, परिवृत बहु परिवार ॥ क्रिया कुझाल विया बहु ह, रुज्ञवार्षे गुणवार ॥१॥ चार साबु ते गष्टमें, बुविवेकी सुविस्थात ॥ दानाविक जिन पर्ममें, होत्तरीक साक्षात ॥१॥ बहुदन मुनिवर प्रथम, क्रानतयो भेनार ॥ पटवहीन ना शासनो, जाथे सक्त विचार ॥३॥ वावेज्ञांच्यी विविच परे, जीत्या तार्क्किक जो र ॥ जितकाकी जिनकासने, विरुव बद्दे कवि मोर ॥ध॥ प्रत्नाकराख्य वीजो जायो, त पत्तीमें शिरवार ॥ मासखमयने पारचो, श्रविश्चित्र व्यवहार ॥५॥ कनकावत्वी रखावसी, वज्ञावती विचित्र ॥ सिंहनीक्षींडित तपं प्रमुख, आरापे सुपवित्र ॥६॥ त्रीजो सोमित्त नाम मुनि, निमिन्गाष्ट्रमो जाण ॥ काववयं वेता निपुण, शुनकानी सुप्रमाण ॥ ३॥ काक्षिक नामे मुनिरफ, क्रियाणप्र शुचि गात्र ॥ चीपो चिहुं गति टासवा, पाले प्रचन मात ॥था चारे साधु किरोमपी, रतवयं जीनार ॥ पंचाप्रव हो को, निर्मम निरहंका विविध्य प्रकार ॥ १० ॥ भि

॥ द्वात १६ मी ॥ (श्री जिमडाामन जग जगज्ञानी म नेत्री)

कड़ाचाय ता मुानवर पूजा, वस्तान अस्त भावर मा नकरमा मामान कर पूजा समीत ताजो है ॥ मिलाल ताजो है ॥ पायस्थानक ए इस्तान सक्त गुष्य वरीयो, विद्यामृत्राची अरीयो है ॥ पाचाचारा विद्या सक्त मिलाल के सिलाल के सिलाल के मिलाल मिल

को शिषणाणा बंधुदन निज नाधुने 'प्रेपे, ते बावी जीतेवा है।। स्रांज आपों तेज न मोदे, राजस्तामा बादस्थायी, परवादीने स्पांज समोवह सुनिवर, पाटवीपुज्ये बावे है।। क्षण क्षण्यामा बादस्थायी, परवादीने स्पांजे है।। क्षण क्षण्यामा वादस्थायी, परवादीने स्पांजे है।। क्षण क्षण्यामा मतवासी ते वादी, तमाजावे तम न्याय निप्रण्यी, क्षमति कत्रायद ठेनो है।। 'शिवमाराते जो तुमे बने, ता जिनमत्त्रों रव मेना है। श्रणाशिश वादी नमीने मुनिवर चरणे, मान तजे तिणि वे वात है।। जिनमाराते जा वाप वाप नमीने मुनिवर चरणे, मान तजे तिणि वे वात कारणे, बंधुवन मुनि आवे है।। तप सक्ज मिली है ग्रिवरती,। विर्वावदी वो के तिल बात बरणे, बंधुवन मुनि आवे है।। तप सक्ज मिली है ग्रिवरती,। विर्वावदी वो के गोवे है।। मार्थ स्पानों है।। वादी अपाय है ताचो, वादी मज श्रितरित,। विर्वावदी वो के स्थान है।। वादी के वादी कर मार्थि है।। वादी पर मिली है।। वादी पर मिली हो।। हो।। हो।। हो।। हो।। हो। वादी पर सिर्वरित हो।। वादी गोवुम चरट विराजे, वादी जन सुपालों है।। वादी पर निर्वर्ति हो।। वादी गोवुम चरट विराजे, वादी जन सुपालों है।। काणाश्या। हो। विराज हम मुसले.

॥ बोहा ॥ वंदीजनना मुख थकी, झुषि विरुवावद्यी सार ॥ वमधमीया रेषे करी, रुज्ञवार्थ तिषित्रवार ॥१॥ मावाही ते साचुने, वेदी तो रही वर ॥ पिषा मछर्यी रुट्ने, कोप चच्चो नरपूर ॥१॥ वंधुदन ऊाखो षयो, देखी गुरु अपमान ॥ सेघे पिषा ष्राचार्यनो, मछर तद्यो असमान ॥श॥ ॥ बाद्य १७ मी ॥ (ईनर आवा आवसी रे, ईनर बादम झांव ए वेद्री) एइवे साकेतनपनी रे, कृपापात विस्थात ॥ नृप हिंसक वे आति घुषो रे, असत्य बचन ष्रबदात ॥ नरेसर, पापी माडी प्रथान ॥ नरक तथो ए निदान, नरेसर पापी मा । प्रधान ॥१॥ ए आकरो ॥ पंचाअव पूरा करेरे, मिण्यात्व श्रुति राग ॥ अश्वमेष मजमेयना रे, नरमेयाविक याग ॥नण।श। बान दीये 'वाढव प्रते रे, जाषीने गुरु जोग । तिल तैयाविक प्रकन्यका रे, लबयाविक ग्रुन योग ॥नणाश। जैनतयो देगी घषो रे, माष्ट्रने दो श्रति डाखा। परदेशी राजा परें रे, पापतयो करे पोप ।ानणाधा। साकेतमपुर परब्ब्यो रे, उपसर्गे करी साधु ॥ नीसाना मुनि मृग कद्या रे, विचरे सवा निरावाय ॥ नगाए॥ रुज्ञचार्ये ते ब्रन्यवा रे, सान्त्रस्यो ते षाधिकार ॥ तव सीमिल मुनि बोलिया रे

बलवान स्पृष्ठपुक्तः प्रत्ययः ॥१॥ जावार्षः—बाषी घाषो जाहो हे, तेम जता पण ते अक् को ने का क्षेप होता है। बादी जट्टी अकूग है १ वीशे मजवाले जते अवस्त नादा पा में हे, त्यारे हो बीबा जेट्टी अंधार है १ वजवह करीने स्पाएवा पाता पर्वती पढ़े हे, यारे हो बाज जेट्टी अंधार है १ वजवह करीने सप्पाएवा हो पत् , तज वलवान वारे हो वज्ज जेटतो गिरि है १ ना नहीं जेनामां विहोप सामर्थ्य होय, तेज वलवान गणाय है महे महोटापयानो हो। विश्वास सखने ॥१॥ दान कट्ट्युंझ ससिनो रे, प्र प्रम मणे क्ट्युंझ सिनो रे, प्र प्रम मणे क्ट्युंझ सिनो हो। परित्त माबि नेत्रोमप्री रे, विहोदी दील दिलास ॥नग ॥ १५॥ परित्त माबि नेत्रोमप्री रे, जिनविजय सुखवा र्शत श्री घष्रहाासिन्तज्जरित्रमळ्तप्रबंधेदानकळ्प्ड्मारूषेप्रथमशाखाकपषत्रहााङ् । ॥ नरेसरण॥ १६ ॥

पुष्पवर्षानोर्षप्रयमोष्ड्रातः समातम् ॥१॥ ब्रस्मिनोब्ह्याने हात ॥१७॥

| मत, मणमु । बन्धाव ।। १ ॥ वान कव्यनुम रासमो, मम बीजो छन्दास ॥ वर्षावसु | अ मुतवात्वयी, सुणी सकव सुवितास ॥१॥ ययन घनकुमर तणा, तिष्ये ते नितमेव ॥ ताततथा ष्रपरोषयी, करे पद्मानी सेव ॥३॥ जोजाई जगते करी, घरे सदा हिर ब्रापा॥ सपण सक्त जी जी करे, जात्यबद्धे मुप्रमाण ॥४॥ स्वजनादिक पोद्धे सदा, दिये बैच पस्टापपुर पासे एक दिवसे, जवसिषि जवने पूरे ॥ तुमे देखो रे पुष्प कमाष्ती, जे जगमांहे गवाणी ॥तुमेण॥ प्रवश्य षान्या पचने पेखां, देखे रहु कोई हूरे ॥तुणार॥ ए भाकपी ॥ ते प्रवर्षानी पति परत्नोके, पहोत्यो जलनिषि माहे ॥ तुणा तव नियेति मिके ते पवहवाने, माययां तेयी वडादे ॥ तुणाशा नाम नेयांत्रिक मिति सि नृपने, ने ट परीने मदीया ॥तुणा नृप सत्कार तहींने ते पिछ, षांति उत्करें नदीया ॥तुणाशा मीकापति जतनिषिमें साप्रति, पमपूरे पदोत्यो स्वामी ॥तुणा ते मांटे ए पात संजा (वीस साम्पोरे नरकी ए देव्री) न सास्था १ सास्था १ ने प्राथमी पणी । प्राथमा स्नि मान वने मान ॥ मात तात सेवा करे, घन्नो बुद्धि निवान ॥ए॥ ॥ बाला रली ॥

है सी, सीजे कहूं हिर नामी ॥तु॰॥ध॥ बात सुषीने नरपति ततकपा, प्रमुक्ति मनमें है प्रतेन॥हु॰॥ संयाधिक सन्मान बहीने, निज निज थानक जावे ॥तु॰॥ ५॥ योनपात्र सोवावरी माहे, बाहक थाणे बारू ॥तु॰॥ नागर नांसीने जबकेंं, ठेले केईक तारू॥ तुमेणाक्षा 'त्राफादिक सघना कतात्वा, प्रबद्धापी तेषा बेबा ॥ तुण। सबण जन्ता हि हां कतका ब्रामीपम, दीम तेह समेदा ॥ तुणाशा। तवण कुन देखी मूप चिते, परवेहो ह हो माँघो ॥ तुण। ते माटे ए प्रवद्धा माही, पूको हे ई साँघो ॥ तुण। शा राजा तव व्य बहारी सघता, तेहीने ईम ब्राखे ॥ तुण। होई 'क्षियाणकेने वन ब्रापो, ब्रमचे ए कुष राखे ॥ तुणा ए ॥ ते ब्यवक्वारी तमम्र मिल्या जिक्षा, घन्नो पिषा तिक्वा भावे ॥ नुणा सव णाविक क्विरियाषा निरखे, ते पिषा तरत स्वज्ञांचे ॥ तुणारणा सृगमन ममुख तमस्त क्रियाषक, ब्र्हेचीने ते होते ॥ तुणा बातक जापा जवषा क्वकारे, घनाने सवि देवे ॥ तुणारा॥ षम्रे ब्रुक्ष्यकी सवि तेक्ष्ते, ज्यमाने करी लोघा॥ तुणा तेजमतूरीमा जाषािने, तात प्रते जर्र बीषा ॥ तुणा १२॥ तीम घमीने प्रतिबिन घमो, तेजमतूरी मदेले ॥ तुणा कंचनती निष्पत्ति भ्रानोपम, पाये भ्रामिय ते काहेंबे ॥ तुणा? शा इरख्यो तात स्वजन स ॥ जनम स्मेन्यने कर्मम क मानमे । इतिषामा ३ इस्ती ३ और ॥ घणम

प नहाय. र गोटाबरी नहींबों क पासती ? करियायां १ कस्तरी ? तांत्र ध पण्म

श्री ये वखाणी ॥ जुमेणाश्या
॥ भेदा ॥ भोदा ॥ भागाविक सही, धकाने तिषा सास ॥ नगरहोठ पववी दिये, जा
॥ भोदा ॥ भोदा ॥ भागाविक सचिव सिव भागे भाति सन्मान ॥ नगर दोक जी
धी करे, सूप दिये बहुमान ॥१॥ एक दिवस दास्त्री, ह्य कपर असवार ॥ परिवृत्त
धा प्रतिप्र भूप दिये बहुमान ॥१॥ एक दिवस स्वास्त्री, ह्य कपर असवार ॥ परिवृत्त
धा प्रतिप्र भागे विक्र भाग्य होत्रक माटा ॥ था। भागुत महिद्ये स्वास्त्र हुप गा परिवृत्त
सिवान वाले दिरुद, भाग्य मीजक मोजक माटा ॥ था। भागुत मिह्दे देखी अवस, इरह्या मा
सिवान वाले दिरुद, प्रतिप्र भागाव भाग, विवान, अभाग्या हिद्योग, ए इस केम
होते साता ॥ तहाव १ जी ॥ (सनेह्री वहावा, जाग्यो नेह्र निवाहों ए देक्ती)
होते धानवतादि विचार, प्रवृत्तमस्त्री रेख्न वसारे १॥ सनेह्रि प्यारे, ए इस केम
दिस्ती ॥ कहां केहने मधंनो दिजे १, सण। ए पर्नुज पयो अदिकारी, एषे अधमनी
संगति वारी १ ॥त्रणाश। एतो कुक कपट बहु राखे, तिये सह को रुद्धों सार्थपने अव
होयों, तिहासी एपे चन बहु लीवों १। ॥ गणा वसी होटे दिहालों, तिहासी दिए |

्रिणा संपात्रिक सन्मान सदीने, निज निज धानक जावे ॥तुणा प्॥ पीनपात्र माहे, याद्वरु प्रापो बारु ॥तुणा नागर नाखीने जलकेंंंेे, ठेले केईक तारु ॥ े सीजे कई किर नामी ॥तु०॥ ४॥ वान घुषीने नरपति नतकषा, मसुवित मनमें

4 dritt intraft artut es urund of aftermet a zraft

॥ उपजातिष्टुलम् ॥ त्रमा क्षि शाखा न विलंबनीया, त्रमेषु विलेषु कुतः पर्पचः ॥ गैत व्यमन्यत्र विलक्ष्योत, पूर्णा मही सुंदरी सुदेरीत ॥शा तावार्यः—जे युक्तनी शाखा ज्ञा गी गई होप्य थने जेनी मातियो जागेली होष, त्या आध्यप्रो करवो ? मन जुदा पपा, त्या प्रपंच शो करवो ? ध्रमाते का पण न करबे एवे समये तो माद्या पुरुपे वीजे ठेकाणे जुषु कारण के, एच्ची विहाल पढी ठे मते मनोहर स्वी जेवी ठे ॥शा देशाटने पंसित | इवे धन्ने विचारे, कहे कलाइ ते कोण वधारे रे ।सिठा। जिहा वधव चिन डाख पावे, तेह हो की वहदावे रे ।सिछ।ए।। चिन नारया साजा निव षाये, सह शास्त्रे पिया कहे सणारशा रखेड ख एइने कोई बाषे, मुजषी अप्रीति जषाये रे ।सणा ईम चिती छ बापे रें ॥सण। छतम मर तेईज जाखे, तव विचरे समय प्रमाये रे ॥ सण ॥ रण ॥ पत नि सबित पच ॥१॥ सावार्षः-देशाटन करतु, पैरितनी मित्राई करवी, गिषकानी घन हरण करवानी चतुराई जारावी, राज्यसजामा प्रवेश करवी धने प्रनेक शास्त्रोतुं भव ताग्य परीक्षा करिये रे ।साधा सुजबल परतक करीजे, तिम नव नव देश ऐखीजे रे।। मित्रता च, वारागता राजसत्ता प्रवेदाः॥ मनेक हाएकानि विलोक्पतानि, चातूर्य पूरा तीकन करवु, ए पाच कारपा चतुराईना मूल हे ॥ १॥ तेदन्ताणी परवेशे जर्रेए,

सवा फार्चो रे । सिणाशा बेखी कपणती खाट ते सीधी, मनमें तस स्थान कीबी शे। काई साथ, धन के कर्त्वा साथों, एणे बोने सक्षण वायों रे । सिणाशा। मात तात जो बाई साथ, धन के कर्त्वा महु काये रे ।। सण। एष्ट पापणने न बांतावे, भ्रम वस्क्रान पि णन मुहावे रे ।। सण। शा प्रकाप वायों के भरणों, तो किम जांदीवे विवायों रे ।। सण शा तही एक्में तो स्तेह न काई, एष्ट तो नामधी कहीए जाई रे ।। सण।। शा वृद्ध पहने तो पंचल पद बीजे रे ।। सण।। शा व्यावाय विवाय कार्यों सक्ता ने ।। सण्येन पदने सण। बस्तों के विवाय के ने ते ह गुध वनो विवाय पाई रे ।। सणा।। पता ।। वंदा स्यवुत्य ।। मत्री सोमें प्रधुनारि ग्राते, हपाम नामाथ वहाति ने सिता।।। पता ।। वंदा स्यवुत्य पितों के ने, वोदा को मुस्य हो ते हे गुध वनो दिन स्वति ने सिता।।।। पता ।। वंदा स्यवुत्य पितों के हे, वोदा को मुस्य हो ने ने सिता। कार के मारे परचा मतमा रहेसी वातने जाणनर्श इत्तर हो नर

प बुद्धियों हे अर्थात् बुद्धियी परना मनमा रहेती वात जापी शकाय हे

गिन जा सेतानों, सींबर्शरिष कुणक्र सींबर्ग । जब मेर्हागरिष साम, निष्माये क क्षेत्र मेर्हागरिष साम, निष्माये क कि मेर्हागरिष जान के कि मेर्हागरिष जान के कि मेर्हागरिष जान के कि मार्ग कि मार्ग कि मार्ग कि मार्ग के विष्ण के विष्ण के कि मार्ग के कि मार्ग कि मार्ग कि मार्ग कि कि मार्ग कि मार् । वित जेथे, वक्कुमर द्वाज जात ॥ था। जो धन वधे तुम मते, बीबो ए फलमान ॥ तो में पिण बखदाो तुने, जोगवो जीप प्रवान ॥ शा हा हा विक हार्यित पर्व, तिथि प्रगयो जि ए गम। वाग्रु तिया पानके जबूं, वनपुर नामे गम। ॥ था। ग्वन नर झाज्या पर्की, पा मी कि विवास ॥ हार्य हार्यो ते साम्या पर्की, पा मी कि विवास ॥ हार्यो ते ततक्षण घर्षो, माम तर्यो जूपल ॥ १०॥ प्रतामार्यावृत्तम्॥ रे ।सुण। माना जांबू करमदा रे जाज, वाहिम सूफ्ते हात्व रे ।ासुण।युण। २ ॥ तास त माख राजादनी रे खाल, वर्द पींपलने निव रे ।ासुण। घवत्वरादि इरीतको रे खाल, चैद हैं। को सावधान, मप्प रात्रे कीय प्रपाण रे ॥सण।११॥ शुक्रन सबस तव पाने, मासव ज हैं पी सिंह सोबाने रे ॥सण। कौतुक कीता बहू करतो, मनमांदे उमेद घरतो रे ॥सण ॥११॥ मप्पान समय जब पाये, तव पंचनो सेव ज्यापे रे ॥सण। तिष्कां सेव खेरों

उवेसी रे।सिण। बान मीने उच्चाते ए बीनी, कही जिनविचये मन रीजी रेशसण॥१५॥ विकसित ववन सुवोत ॥ जाजन आए। रे ।स्तणारभा तर मीतव नाया वेखी, तिहाँ वेगे ॥ वेष्टा ॥ कालिक प्रमाने निरस्ति, । माती, एक दींगे नपण निशान

किपी, साम सल पुत गोल ॥१॥ यम्रो क्षे ठपकम विना, न कर्र नोजन जिगार ॥

एक ने वात गएति परे निज नपक्रमे, सवि राखु विवहार ॥१॥ ते माटे तुम हततथा,

क्मापति परा मुम् करी, गमन क ।शा इम कही हत खेब्बो तुर्त मते, ए तुम् युष्म ममाषा। निषि सुप्रकाक्।।। अ॥ हास् क्या भववात वास ॥ पनि तुम भाग्रहपी सही, करही जोजन स्नास नीजन कर्बा, श्रम टाली तिष मंत्रि तकोहि ॥६॥ किपि चार्च निज नृप प्रते, सक्स । , प्रमचो एड निवान ॥ वन्नो कहे। पमकुमर मही राज्ञ ॥ मगव्यो ततकृषा

तुम भाग्यथी नपकति करी राषीपी क एका

वित जखे, षमकुमर शुज्ञ जात ॥शा जो घन षम्ने तुम प्रते, दीघो ए फरमान ॥ तो में रिया बखरो तुने, जोगबो जोग प्रधान ॥ए॥ तव बाखिक हार्पेत घडे, निधि प्रयायो जि ए अम ॥ बाग्ने तिया पानके जखे, धनपुर नामे गाम ॥धा। इतम मर मान्या पकी, पा मी क्रिंदि विशाल ॥ हाली ते ततक्ष्य धपो, प्राम तयो चूपाल ॥१ण॥ पतः॥मार्थावृन्म् ॥

रे ॥सुण। आवा जाबू करमबारे लाल, वाहिम सूफ्ने दाख रे ।ासुण।पुण। शा ताख त मात राजावनीरे वास, वह पीपलने निव रे ।ासुण। घवखरादि इरीतकी रे खात, चैठ

रे ।ामुण। जार भवार तथा तिकारे वाख, सोवे बुक्त स्नोड रे ।ामुण। पुण।ए॥ जार्ड कुड़े केवबारे बाख, मदेके केतकी फूस रे ।ामुण। बोलिसि। वाखीवसी रे बाख, सेवंत्री जासूब रे ।ामुणा पुणाशा ममरी मक्छे मोगरों रे वाल, करायर करेया खास रे ॥मुणा तास, वकनी पंक्तिःविशाद् रे ॥सुणापुणारणा उपकेठे मुनि षात्रया रे साला, जेडवले एकत्र रे ॥सुण। तपसी तप विषि साचवे रे जास, असन करे फल पत्र रे ॥सुण। पुण।११॥

क्ष तथर तथा स्थानक घषा र बाल, गुलब भभुस कर पक्ष र ॥नुणा नर क्ष्य पश्च रा॥र १) सारे जाल, शासा मृग प्रत्यक्ष रे ॥सुणोषुणारशा गच टोला वनमें जता रे बात, छ हैं न्यूबे केई बुक्त रे ॥सुणा वानर यूप 'विशेषबी रे जाल, मिंद्रिय तथा तिदा लक्षरे । ॥सुष

तवर तयां स्थानक घयां रे बाल, पुर्खिद प्रमुख केई पक्ष रे ॥सुण। नर रूपे पशु सारि

न मगर कवव रे ।सुण।पुण।।ध।। सीपारी भ्रीफल घषा रे लास, ताउ प्रकोक अखोड

हैं ॥पुणार शा मृग निज्ञक शावर सता रे लाल, ज्याघ विकायनो वात रे । मुणा मृग्यंति हैं। पिणा तिशं सचेरे रे लाल, करता कुल फम्यास रे । मुणा शावा प्रज्ञान कराति के कोते के लाल, कोतुक विविच प्रकार रे । मुणा अनुक्रमे मानव वृक्षामा रे लाल, आवयो पु एपामम्प्रार रे । मुणा प्रणार शा । मुणा प्रणार हे । मुणा हो र समिये र शियातायी र कीयता ध मध्छ दींगे एक मावतो, नीर पूरेवी बाम ॥ षमें मदी ज्ञंब निरखते, रखराहिंग पह । तमाह । रख भग्ना ज्ञंब का का बीतेने, दींभे बंबूक नक्ष ॥ देखी नैमिन ज्ञास्त्रमा, पान्यो भन्न पर तक्ष ॥ अनुभने ग्रम्बेच्यो तिहां, वंध्याचव नेगराज ॥ ग्रम्बयनी माब्यो तुरत, साहिंसि कमां हिरताज ॥ ग्राप्ति ही रे ॥ शा को के करी जूरी रे, मुन्नेट करी जूरी रे ॥ कोई वाते न ष्मकृरी रे, मुक्र कोन्न ती रे ॥ शा चंन्प्रयोत राजा रे, जका अधिक विवाजा रे ॥ वमुषामें ताजा रे, यका ठे जे हना रे ॥ शा गज रघने घोडा रे, पायक वज्ञ जोडा रे ॥ नहि तेवने खोडा रे, नृपने पाय के रे ॥ ए॥ विवादेवी राणी रे, तीता तम जायी रे ॥ पटराजी खण्डा रे ॥ बाख ध घी ॥ (चित्रोद्धा राखा रे ए देहा) डकानी निरसे रे, मनमादी परसे रे ॥ हु दीते छे रे, मरिसी स्वर्गपुरी समी रे डका पिए दाजी रे, ईपा भागस नाजी रे ॥ मनमें नदी राजी रे, तव जसमें प भाग रुसे करी पूरी रे, सुनेट करी बूरी रे ॥ कोई वाते न भूपुरी रे, सुदर होोन वपायीरे, बनम गुस के रे ॥ए॥ शिवादेवी राषी रे, मीता सम्बाषी रे ॥ पटराषी घ पकी रे ॥६॥ एक विन नृप चिते रे, मन केरी क्षेते रे ॥ बुस्बित परिकासारी हैं। मंत्रवी रे ॥ शा पड़ वा वजहावे रे, तुप निज मम जावे रे ॥ करे अति वछ्वावे रे, ए छव् हैं। पीपणा रे ॥ सरोवर 'बाखंट रे, जं छे भाति छेटे रे ॥ ते पंजने विटि रे, वेदो पीष्यपी रे ॥ शाणा नुप तस बन आपरे , मंत्री पव यापे रे॥ पढ़ा तहनो ज्यापे रे, बिस्तव न कीजीए मारा। सुपयो पड़्दो छवी आवे रे, सर की तहावे रे ॥ शांति वर्ष न मावे रे, तुप्तव न कीजीए रे ॥ शांता वर्ष छवी छवी आवे रे, सर की तहावे रे ॥ आति वर्ष न मावे रे, तुप्तव न कीजीए ता रे ॥ शांता वर्ष हे न मावे रे, तुप्तव न कीजीए ता रे ॥ शांता एक वेरी ते सीवी रे, तर मूवमें सीवी रे ॥ यत्ते करी वावी रे, तैर पा छवापयो रे ॥ व्याच्ये में प्रवा रे ॥ शांता प्रवा का प्रवा या आव्या आवित वर्षा या है वर्षा या है । या वर्ष वर्ष प्रवा रे ॥ वर्ष स्वाच्यो रे ॥ वर्ष स्वाच्या रे ॥ वर्ष स्वाच्या रे ॥ वर्ष स्वाच्या से प्रवा आवित रे ॥ वर्ष स्वाच्या रे ॥ वर्ष स्वच्या वर्ष से व

करपी रे, सिव णादी नमे रे ॥ रेहा। पुरजन प्रते पोले रे, नुपने संतोखे रे ॥ कोई बीक् विहोपे रे, घुपरे जायधी रे ॥ रेशा यतः॥ मासिनीक्षम् ॥ नरपति हितकको घेपताया है। ति बोके, जनपद क्षितकर्मी त्याय्यते पार्थिवेन ॥ इति महिति विहोषे कर्ममाने समाते, कृपति जनपदाना डर्केन कार्यकर्मी ॥ आवार्षः—राजानुं सार करनार मासासना ग ए सोको हेप राखे है, देशनुं सार्द करनार पुरुष, राजावदे त्यागं कराय है एवो महो है। पर सोको हेप राखे है, देशनुं सार्द करनार पुरुष, राजावदे त्यागं कराय है। महो काने है।। ॥ मुप दम पावाते रे, रहेतां मुखवाति रे॥ जुए मनने ग्रह्मा रे, पुर शोना इस्मो रे॥ रेणा कब्जनुम राते रे, जिन कहे सुविद्याति रे॥ एष्ट् बीजे ग्रह्मारे रे बाल क्यां रे, सिव बावी नमे रे ॥ १६॥ पुरजन मते पोखे रे, नुपने संतोखे रे ॥ कोई डीर्ड् विकोगे रे, सुपरे जाम्मकी रे ॥१९॥ पतः॥ माबिनीकुषम् ॥ नरपति हितककां देपताया ति बोके, जनपद हितकनां त्यम्मेत पार्थितेन ॥ इति महर्ति विरोघे कर्तमाने समाने, ति बोके, जनपदा ड्रन्तेन कार्यकर्ता ॥॥ जावाधे-राजातु सार करानार मायासना छ त्याते जनपदाना ड्रन्तेन कार्यकर्ता ॥॥ जावाधे-राजातु सार करानार मायासना छ पर बोको हेप राखे हे, देशुने सार्ठ करागर पुरुष, राजावडे करागर तो ड्रन्तेज मखी टो ब्रोजे ॥१॥ नुप दन बावाते रे, रहेतां सुखवाते रे॥ जुए मनने छद्धाते रे, पुर शोना ब्रावे हे ॥१॥ नुप दन बावाते रे, विलग्न कुर्व सुविदाते रे॥ एड् बीजे छव्हाते रे, वाब जावी रे॥१०॥ ॥ वोहा ॥ दीजा दूर्पी बावता, पृंशु विदास झरीर ॥ मदिन वसन हात स्वेत सि, मात पिता तिम बीर ॥१॥ काति हिण कुस्तितप्ते, नुम नात्र मक्षे हाय ॥ दीन सि, मात पिता तिम बीर ॥१॥ काति हिण होसे विज्ञुमर, विस्मपदा चित्मांि ॥ मात पितातिक माहरा, किम बावे ईण ठाविं ॥१॥ इहि घणी हे तत्त घरे, पुष्प्यक्री

॥ जात ए मी ॥ (चरणासी सामुक्त रण चंढे ए देव्री) परमुमर मन नित्रे, ए परिजन ईवा केम आवे रे ॥ धन संपष्ट वर्षमें घणी, प निम्मय गुरुतो पारे रे ॥ जुन जुन जुन पटेतरो ॥१॥ ए आकणी ॥ घुण्ये वंशित सी के रे ॥ गुण्यचे परम्भी सित्ते, पुण्ये राजा रीके रे ॥जुणाणा जई जोन्नं देवे एदने,इम नित्री सिंहा भारे रे ॥ मात पिताने निम्दी, विनये की का नमावे रे ॥जुणा ३॥ आ कुं प्रयू मात तातने, बेलि एक्सी याणी रे ॥ वृधि ताणी एह सामटी, की घो केम कमाणी

रे गेंतुणाधा। तर कहे तात ततुज हुणो, तुमे चाल्या श्रम मृकी रे ॥ बहमी सुम साथे चर्नी, सतीय परे तर्नि चृष्ठी रे गुजुणाशा प्रत्युपे अने तुम तथी, खबर करांनी चांती रे ॥ पिण स्हिग्यी पेरंगडी, मुमची हाहि न पांबी रे ॥जुणाहा। तुन रिखे श्रमे श्राङ्खा, घदने रोदन कीचे रे ॥ जोर नचांते कोयथी, येप ते केहने दीजे रे गजुणाशा मोजांहे

तुम जित्तयी, गुणतीयी डारा यावेरे ॥ परिजन पिया मित्ती सामटा, तुम गुब्धि पूर्वय न मरोरे र गर्मातम र सारी ७ समरी मसर न स्ती

भ भावे रे ।ाजुणाणा एववे नृप राणी तयो, क्षर वासीये सीवो रे ।। पश्चनपणे चनवेवने, वेचवा काने दीवो रे ।।जुणा ए।। वात गती ते नवि रही, राजाये जव जाणी रे ।। अगु घर मूकी आपणा, चन सीवी सता, ते पिण वेघ गया केई रे ।।जुणा रा। कांकेक वाकी रखो हतो, ते व जववट गया चोर हो रे ।। तेवक सीवधी हता, ते पिण वेघ गया केई रे ।।जुणा?१।। जववटनो जववट गयो, रूमीयी बेधे गया यक रे ।। जायवहीननो तत्तक्ष्यो, फच दीवो परतक्ष रे ।।जुणा?१।। गुणा?१।। गुणा?१।। प्रहासिक के ने ।।जुणा?१।। कुणा?१।। कुणा?१।। कुणा?१।। कुणा?१।। कुणा?१।। कुणा?१।। कुणा?१।। विकास प्रवासिक के ने साम रे ।। कुणा?१।। कुणाया तुमने मिल्या, इने अम सह डाख जाग्या रे ।। कुलाये देत ज्याये रे।। ग्रेषक मानेद यकी निर्दा, भाव। मिली जीलाइ रे ॥जुणा। ह्या सपस सपया हूमा साम ग, पसी मेन सुख पाने रे ॥ बीचे डब्ब्बासे पाचमी, जिन मन रोगे गावे रे ॥जुणा। आ मधिक मानंद यकी तिहा, भावी मिली ज्योबाई रे

॥ वोहा ॥ घनाकाहि नेष्टन घरी, नात प्रमुख तिषिवार ॥ गुप्तप्षायी विश्ने, मा ॥ नेहा ॥ मनावाहे नेहज परी, मांत प्रमुख तिषावार ॥ गुमप्योची बेहने, मा विकास करात । प्रमुख्य तिषावार ॥ गुमप्योची बेहने, मा विकास प्रात्त करात । एवं कर्या, पर्दराज्या गुन नेश ॥ वस्तानरणा । विकास करात । विकास इंड क्षेत्र मन वीर वरी तिहारे, चितवे चिन मफार ॥ इहा रहेता नाइने इंख है है रे, मुन हुनी निरधार ॥ ध्यकुमर मन वीर वरी तिहारे ॥१॥ए आकर्षा ॥ षर्दि निर्धा के छत्री नीसको रे, ताहरिक घर मुविवेक ॥ स्वरब्त सापीनेते सचरे रे, शुकन थया है गुन छेक ॥वणाशा च्युक्रमे कीतुक विषि निहालतो रे, पहोत्यो काशी हेरा ॥ वाष्णार है गुन छेक ॥वणाशा च्युक्रमे कीतुक विषि निहालतो रे, पहोत्यो काशी हेरा ॥ वाष्णार है ए छन्म पहिराण ॥ देखी मन स्वर्धा कार्यो रे, जन्म घयो मुसमाण ॥वणाधा है गगा तीरे निरमत नीरमा रे, को ज्यक्रीहा काम ॥ एइवे ब्रावी भवर्ष्य तिहारे, में गणति निरमत नीरमा रे, को ज्यक्रीहा काम ॥ एइवे ब्रावी भवर्ष्य तिहारे, में गणति निरमत निहास । एखे प्रकृति । एक्षेत्र विष्य प्रकृति । एक्षेत्र कार्यो हिन्दारे, में है निम्म प्रकृता।हाव अपव विश्व सिक्ता।हाणा । हेर्के सम्बर्धना निर्धा कार्या निर्धा होत्र रे, नेहर्ष होत्र स्वा होत्र स्व होत्य होत्र स्व हात्र होत्र स्व होत्य होत्र स्व होत्य होत्य स्व होत्य स्व होत्य होत्र स्व होत्य मुज मानाषिणाणायतः॥भाषाया माह्य करेय, तास निराह्य न मूर्कीष्णानिषटजनाकारेषा,

सुं दीसे नागरा॥ श तुज गुण रूप लावाय बीवायकी रे, हैं मोधी सप्रकासा।विनती

, वात सयब जाषी ॥ दूं धर्म धुरषर हो के, मतुष्यमादे मोटो ॥ वीजो तुज घ्रागख 'के, नर सपक्षे ठोटो ॥श्॥ तुमे पर उपगारी हो के, गुष्यमधिना वरिया ॥ तुमे सहज रंगा हो के, संतोपे जरिया ॥ सुविवेक विचारी हो के, सारी तुम करषी ॥ जिनमत

गए। केम थाती है

स्वी ॥ उगा तिया बंद्रा वीपती हो के, मंगरी माहि बही ॥ चपमाने एहने वो के, भवर हैं, न कोय जह। ॥ तोवे करी तुलता हो के, सुरपुरी हीय पर्ड ॥ ताव ने करपायी हो के, किनी स्वनं गई। ॥ ताव करी तुलता हो के, सुरपुरी हीय पर्ड ॥ ताव ने कारपायी हो के, जिन्दी स्वनं गई। ॥ । परित्रं हो के। जान जान ॥ । परित्रं हो के। जान जान ॥ । परित्रं हो के। जान जान ॥ हो के। चेतम नर खायी ॥ । परित्रं हो वाव वा विराजे हो के, मेचपरे गाने ॥ को हो ना नवरंगा हो के, उत्तं में मारी ॥ ।। तहा नाव विराजे हो के, मेचपरे गाने ॥ जान हो ना नवरंगा हो के, वेत्रं वेद्रं हो के। वाव वा वा विराजे हो के, विविच वा विष्यं नायां ॥ ।। तहां हाड नवां हो के, जारी भार जीव ॥ चहुटी चोरादी हो के, विविच वा विषयं ताया। ।। तहां हाड नवां हो के, जारी भार जीव ॥ चहुटी चोरादी हो के, विविच वा हो हो से ते समाना हावीया।। निज पुष्प प्रवल्यी हो के, रामण करे नावागार ॥ हो हो माता मातां सोहांचे हो के, वीन्दावा ॥ निव्यं पुजा नाटक हो के, विव्यं हे प्रता। हो विव्यं च विद्यं वेद्रं वेद्र

ति पमा। ११।। गौजड सुवर्शन हो के, श्री जिनवास जिंगा।। कोटी ज्ञक कहीए हो के, के जिनमत विच बगा।। जिया नगरे सुपरे हो के, चौद चोमास किया।। श्री बीर जियो है, हे हे हे, कमोपरेश दिया।। श्री। वैनार दियुतने हो के, कंचन देव गिरी।। छदयाच्य है, छन्यामें हो के, वमोपरेश दिया।। श्री कार पर वह हो हो, कहे जिन एम वज्ञी।। बीज है, छन्यामें हो के, सातमी श्रांत ज्ञांता।। श्री हो हो हो हो हो हो हो है। हो हा ।। वेह सातमी श्रांत ज्ञांता।। श्री के जिल्हा ।। श्री हो मरा ।। श्री हो मरा ।। हो हो ने पर पत्रकम । हो हो हो मरा ।।।। कर करवाजे कंपीया, वैरी ब्रांत विकरात।। हे सेचे नृप पत्रकम ।। हो सीची हो से नाज।।। हा मी

ब्रघोत्तर शत जब थकी, स्वस्तिक जिन संकेत ॥धा। नदा घारणी चक्षणा, प्रमुख एक शत नार ॥ घन्त्रय मेघ कोशिक प्रमुख, शत कुमार सुखकार ॥ए॥ चारे हे (तत्यो छ दिषे, ब्रन्तयकुमार प्रवान ॥ राज काज सवि साववे, 'न्यूघवने बहुमान ॥हा। ब्ररि क ल, मानसरे ज्यु मराख ॥१॥ वानी मानी फन्डजड, साइसिकमा झिर ताज ॥ झानी ष्यानी जिन गुणे, सवा रद्दे सुखसाज ॥१॥ झायिक समकित बाचेरे, ब्रेक्सप पवन हेता।

टक ब्रलगा करी,न्याय मार्ग करें शुद्धा। भनय घ्वात टावे तुरत, सुनय तेज भविरुद्ध ॥॥॥

[े] श्रीयक राजा थ समूर क माझने माने क पकता र राजानु बहुमान रत

।। बास ट मी ॥ (हारे महारे झीतख जिनकु बागी पूरण प्रतिज्ञों ए केही)
बंदे ते राजगुद्दी नगरीए नगरनी दोठ जो, कुमुमपात नामे ते जगमें जाधियों रे
हो।। नूप झेण्डिकने टे फ्रिकी तसुप्ती मान जो, ब्रामीक गुग तिपुण विशेष वरहा।
विपारे रे हो।।।।। तस काता शाता कुमुमपाला मनोहार जो, पुत्री ठ गुणवंती कुमुम
वर्ता रे हो।।।।। तस काता बोहाउनु शह रूपे रि बचतार जो, बुदे जगरीत बानगुण सहमी
काइ ते गयो रे हो।। तस होटने वन हुतो नवनवर सम एक जो, कोई कारण वरामी स
काइ ते गयो रे हो।।।। ते वेही प्रजन हरिवा सदे ग मारे जो, मादीने प्रप्यु का
पन्नव स्वोरे हो।।।।। ते वेही प्रजन हरिवा हर्प मफार जो, भावीने प्रप्यु का
वन वन होना घयो रे हो।।।।। तम विते विस्मित धरने एक्वी वात जो, केहने पुष्पे
वन सव पूच्चो फड़्यों रे हो।।।।। तस दोतते पाकोर ते हुत रुप हो। हे वीठो ते
हा परहे ततक्रणे रे हो।॥।। तस हित्ति काकोर ते हुत रुप हो।
हो परहे ततक्रणे रे हो।॥।। तस हित्ति काकोर ते हुत रुप हो।
हो परहे ततक्रणे रे हो।॥।। हो हो बावी वना परसे होट तिवार जो, हुहहाहावाप
हो हा तिम काविराया गयो रे हो।॥।। हो हो बावी वना परसे होट हितार जो, हुहहाहावाप

प्रवीन प्रमुक्ति मम कियो रे हो ॥ कहे स्वामी पंचारों भम मंदिर महाराज जा, तुम मिलवायों लाज घणों पत्री भम घयों रे हो ॥ ।॥ इम जाखी होट ते घक्षाने तत्त्विव में भाववायों लाज घणों पत्री भम घयों रे हो ॥ ।॥ इम जाखी होट ते घक्षाने तत्त्विव की भाववाय करीने घर ते ही गया रे हो ॥ तैलाविक मंदन काटवााविक चया जो, का मुकार करीने घर ते ही गया रे हो ॥ ।॥ मन गमता तोजन कीशा एकषा पात मुख्यी जाने के की की तिका वातायने रे हो ॥ ।॥ मन गमता तोजन कीशा एकषा पात हो लाओं के वार के कीशा तिका वातायने रे हो ॥ ।॥ के होट त्वाते सुपरे अमंची वाल जो, कीशो के कहे किया विषय माने रे हो ॥ ।॥ तुक्त जाति पृच्या विषय एवडा स्वीट्य काज है शिला आप के किया गुण लावप्यथी तुम कुल तद्यो रे हो ॥ वली भाचारेषी जा हो सि मुद्दार जो, को के कहे किया होवि मन उन्नादसी रे हो ॥ १०॥ तव वोव्या रे हो ॥ वली भाचारेषी जा हो शिला को होट काज है हो ॥ इस वा माने सिव्य प्रद्यो रे हो ॥ ।। ११॥ तव मीन हो गाव को किया ने हो हो ॥ इस सो सो सो को हिला से हो ॥ वर्षी ॥ वर्षि रे गावि हो हो ॥ वर्षी माने हो माने हो हो ॥ इस सो हो हो ॥ वर्षि रे जो ॥ वर्षि रे लो ॥ वर्षि हो ॥ वर्षि रे लो ॥ वर्षि । वर्षि ।। वर्षे ।

पत ॥ जनम भाप गुणे जखा, मध्यम तात गुणेण ॥ अवम सुष्पा मातुम गुथे, अव ॥

मामम मुसरेषा ॥१॥ जावार्थ —गेताता गुण्यी गंदाबाय हे सत्ताना गुण्यो अर्थात ।

सत्ताय हे मध्यम, माताना गुण्यी जेवाबाय हे अवम भने सत्ताना गुण्यो अर्थात है ।

सत्ताय हे मध्यम, माताना गुण्यी जेवाबाय हे अवमम अर्थाव ॥१॥ इम चिती होधात ।

सक्त महोटां धाम जो, काम चवायो सप्यो मणि महिमा पकी रेहो ॥ जम्मिता ।

से मणि पर तेहने, मी डे खोड जो, मनचितित सवि पाने इम सप्ये वकी रेहो ॥ १॥ ॥ ।

से मणि पूली के जे चिते काज जो, ते रे ततकाले था भाव जनहों रेहो ॥ १॥ ।

से मायवाती वे तेहने एग पग मादि जो, विष्ण ज्यमदी मावे जावे भापवा रेहो ॥ १॥ ।

श्री मावताता वे तेहने एग पग मादि जो, विण ज्यमदी मावे जावे भापवा रेहो ॥ १॥ ।

श्री मावताता वे तेहने एग पग मादि जो, विण ज्यमदी मावे जावे भापवा रेहो ॥ १॥ ।

श्री मावताता । एह वीजे ज्यापासे इक् जो, यापे रेहिम से मावित कहो कि हिद्यासी ।

सिने रेहो ॥ एह वीजे ज्यापे मावमी बात स्ताल जो, कहे जिन रेंगे पुष्ये वित्त ।

सिने रेहो ॥ एह वीजे च्यापे प्रते तुरका सुवेव ॥ आवर वेर्ड आति घषो, पूर्व ।

॥ सुदा ॥ कुसुमपास केरे हुरत, तेहाल्या सूवेव ॥ आवर वेर्ड आति घषो, पूर्व ।

॥ वेंद्रा ॥ कुतुमपात क्रेंचे तुरत, तेडान्या सूदेव ॥ आदर वेर्ड आति घर्षो, पूर्वे

हैं। तहसे वर्णन किम जाए कक्को जी ॥ हा। जुगेते विर्डे जान, धनपति माज्या सुसंरा ध्राम है। तहसे वर्णन किम जाए कक्को जी ॥ हा। युखेरों पं है। विज्ञा । सुस्रों प्रयो राताया, सासु पर्या मनमें चन्य बिन ते गणे जी ॥ शा पूखरों पं है। विज्ञा । तहसे कन्या विवार, वर कन्याने करमेजों है। कर जी ।। तहसे मायर जी ॥ तहा जी ॥ करमा करमार, वेप होता ।। करमोजनता वान, सुसरों माख वेद जये हिज ताम, स्वर ग्रहाम होम हवन कि की ॥ शा आरोग्या करमार, वेप हिला । करमोजनता वान, सुसरों साख वेद वह परे जी ॥ शा। आरोग्या करमार, वेप लिना बिन हेज हरखीया जी ॥ माझे मादे घयो राग, गुण वक्ष्य सुपरे सिव परखीया जी ॥ शा। ११॥ विवाद, जय जय वोते वे हो ॥ ११॥ विवाद, जय जय वोते वे हिंद त्ययोज्ञी। विद्या साम के हेज वच्यो तिम बिहुने आति घयो जी।। शाकुसुमध्यी विद्या साम योज्ञी ॥ ११॥ हम विद्या साम विवाद, जय जय वोते विद्या साम योज्ञी ॥ १॥ शा। शा। शा हम मायरों से मायरों से मायरों से साम विद्या साम विद्या ।। इस साम वीजे ग्रह सामयोज्ञी ॥ ।। सोगवे मोग विवास, सुर सुखने पिण नुष्य हम साम विद्या ॥ विद्या विद्या ॥ विद्या विद्या ॥ विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या ॥ विद्या विद्या विद्या ॥ विद्या ॥ विद्या विद्या विद्या ॥ विद्या ॥ विद्या विद्या विद्या विद्या ॥ विद्या ॥ विद्या विद्या

कुब कर ग्रं यह चूप ॥१॥ वजहावी रयानेर तव, सीया निवायो धाव ॥ सामत सवि ने ला पया, तेहाल्या ग्रमराव ॥१॥ चौद मुगटवह राजवी, महा वीर मति बीर ॥ सदस

जिय करता नहीं डब्जेन, ए बब बुद्ध खीणों ॥वेगाशा एखें तमामें साज गमावी, जिय कि विप साथे (युद्ध) कि ने ॥ सुगट जापी तेवा मन कीथों, मोन मधिक मन घरिने ॥ हेग कि ।। शा। कोशंबी पण काज न सीध्ये, मुगावतीथी णढ़नो ॥ गुद्ध करंता जाणों ॥ मम वरिने ॥ हेग कराव्यों तेहनों ॥ वेगाशा। वरिने को बदयन मागव, युद्ध करंता जाणों ॥ मम वरिने मिने हो ॥ तिवा पण शरम गमावी पायी, परायों जाग्य सेकेते ॥ वेशाशा। युद्ध करंता। विपाय कर पण, सक्त प्रचार सीवाये ॥ युद्ध करंता विपाय पायों, मागाववां, मागाववां, मागाववां, मागाववां, मागाववां, मागाववां, मुद्ध करंता। विवाय पायों, सक्त प्रचार भाववां, मुद्ध करंता। वर्ष करंता मिने हो ॥ तुद्ध न करंता ॥ युद्ध करंता। वर्ष करंता वर्ष पायं सेके ।। युद्ध र ।। हो ॥ प्रदेश हो ॥ युद्ध र ।। हो ॥ प्रदेश हो ॥ युद्ध र ।। हो माववां — दूखवं प्रचा युद्ध माने ।। माववां ।। माववां — दूखवं के पण युद्ध न करंतु जोहर, ने ।। विवाय सेके हा भाव माने हो से ।। युद्ध र ।। हो सेके ।। हो हो हो सेके ।। हो सेके ।। हो हो हो हो हो ।। हो हो हो ।। हो

न परताम पराज्या ॥ अत्यापना धर बनचे ॥ स्वामी तुम एर्ण्यापम ब्रमचे, सुषो विद्धां प्रेमे करी युगाँत, विनयानत धर बनचे ॥ स्वामी तुम एर्ण्यापम ममचे, सुषो वात इक निजये ॥वेणा१णा शिवावेत्री तुमची परताणी, चेल्याा सम में जायी ॥ तेष अपा त्या स्वा समने प्राव्यायी ॥वेणा१॥ अम ताते वन ब्रापी बहु नित्रों सामत सिव परावाज्या ॥ ते प्राव्यायी ॥वेणा१॥ अम बचननो प्रत्यय नाते, तो जोज्यो निरयारी ॥ सामताविक परकुटी पा १॥ शो भम बचननो प्रत्यय नाते, तो जोज्यो निरयारी ॥ सामताविक परकुटी पा १॥ शो समयताण छात्यक्षक, जिम जायो तिम कर्ण्यो ।वेणा१॥। इम सिखी पत्र हो मुक्ति देणो सामा विष्यों। प्रत्या सामि कर्ण्यो हे । तुक्त वेण्यो सामि विषय परकुटी ॥ इम सिखी पत्र विषय । विषय प्रत्या । विषय परकुटी ॥ इम सिखी पत्र विषय । विषय । विषय मामि । विषय मामि । विषय । मने तेमा प्रधान एटले उनम पुरुपोनो क्षय बाय हे ॥१॥ मनपकुमारे बुद्धि उपाई, घ न परतीम बराज्या ॥ गुप्तपयोधी कैन्य स्यअमे, मति प्रज्ञम कराज्या ॥देण। ए ॥ पत्र पारवाजा वाएवढे युक् करवानी तो वातज हो। १ कारए के, युक्तढे जीतनो संवेह ठे

॥ नपजातिवृषम् ॥ विपक्षनगेषा यसाविकेन, स्वयं विवासं विञ्जपान कार्यः ॥ नद्मापि ॥ स्वं क्षितं अविकास् ॥ विष्यते अव्यक्ताता क्षितं अविकासं अविकासं अविकासं अविकासं अविकासं क्षितं विवासं क्षितं विवासं क्षितं विवासं विवासं क्षितं विवासं क्षितं विवासं क्षितं विवासं क्षितं विवासं विवास ॥ विषयातिकृष्यं, ॥ १९९५ १९ १८ १८ १८ १८ । विषयातिकृष्यं, विवस्ते प्रवासिक्तं । विषयातिकृष्यं, विवस्ते प्रवासिक्तं । विवस्ते प्रवासिक्तं । विवस्ते प्रवासिक्तं । विवस्ते प्रवासिक्तं विवस्ते व्यवस्ति । विषया विवस्ते विवस्ते व्यवस्ति । विषया विवस्ते विवस्ते । विवस्ते विवस्ते । विवस्ते विवस्ते विवस्ते विवस्ते विवस्ते विवस्ते विवस्ते विवस्ते । विवस्ते मन्ते ए शु कीचु, खोडे लाज विवस्ते । विवस्ते । विवस्ते । विवस्ते विवस्ते । विवस्ते विवस्ते । विवस्ते विवस्ते । विवस्ते । विवस्ते । विवस्ते विवस्ते । विवस्ते । विवस्ते । विवस्ते विवस्ते । विवस्ते विवस्ते । विवस्ते विवस्ते । विवस्त

प्राप्ता । पामन वश करवा सुलम, पिया ए ड्रंजन काज ॥ ४॥ पब्होक्योपण नगर । में, ताम ररावे गय ॥ ब्रम्पकुमर आयो जिके, ते जह जावव पसाय ॥ ए॥ पढव उच्चो । जीववरा तुरत, राय वच्चो बावेश ॥ परिकर युत ब्रावी मवस, मगववेश सुविक्रेप ॥ ह॥ । वाब ११ मी ॥ (वाह वाह बनायो वीम्प्रणे, ए देशी) । वाब ११ मी ॥ (वाह वाह बनायो वीम्प्रणे, ए देशी) । स्वेते न गरिका कपटी मती, करे कपट आविका वेदारे ॥ मुखबक्ताविक अपग । । पाम, मुखे रावि विप्ते अपदेशो १ ॥ तुमे देखो कपट गरिकातपा ॥ १॥ ए ष्पाकणी ॥ १० णा, बनाविक्रा मुखे रावि । सुर्व न पाम काविक्रा । श्री वेदा प्रचान स्वेता । जीवाजीयविश्व मही सुपरे रावि है ।। तेषो वेदा प्रचान आविक्रात । जीवाजीयविश्व मुले सुपर पावि । उपवनमें केरा वावारे ॥ तुगाशा । इम वेदा है जनावी विगतशे, राजगुद्धी नगरीमें आवेरे ॥ उपवनमें केरा पापीया, आति उम्रति अपदेश । सिरे ते देगरमें, सह प्रावक्ते मन जावेरे ॥ तुगाशा प्रच है निरासे न न ने न नावेरे ॥ तुगासो सुने हैं।। सिरे ते देगरमें सह प्रावक्ते मन जावेरे ॥ तुगाशा एक दिन तप चैतान्ते ॥ स्पर्ति । त्री जयहुमारने, बावे ते सुप्रमाथ ॥ गृ॥ सुषी कहे सामत सबि, स्वामी ए नबि पाय ॥ १ इड चड नगंड्यी, फलप बब्यो नबि जाय ॥३॥ समुह तरतां सोह्रजो, मृगपति प्रक्ष १ सुराज ॥ पाघने वश करवो सुजज, पिए ए ड्वेंन काज ॥ ध॥ पडहोब्योपण नगर Ŧ मन नावेरे ॥तुगाए॥ एक दिन न्य चैत्यात्तवे

लाको मननी होंग्ने रे ॥तुगारणा पिष्टते पैपमो पूरो नवि पढे, तव सापंप वस्री इम जासे रे ॥ एक बाट सुगम वीजी भन्ने, शिवपुर जावा जे मन राखे रे ॥तुगारहा। भ्र णुत्रतनो जार भन्य प्रद्री, बानादिक रक्षक संगे रे ॥ तप विनयादि भन्ने पढी, पहोंचे दिवपुर मन रेंगे रे ॥तुगा १७॥ तव ते मारण मनमें बगो, ते पैपे भ्रमे हवे बांदु रे ॥ पंपबाहक सासुने पूनता, शिव नगरने नजरे जाखे रे ॥तुगारणा तिद्दां जह बसवादुं म न भ्रवे, सुख्ताम जया थिर जायी रे ॥ इन्यारमी बीजा त्रक्हारतनी, गेल जिनविच पे बखायी रे ॥तुमेणारणा ॥ दोहा ॥ प्रत्यप कदे सादमियी सुखो, तुमे कही ज वात ॥ जाव षकी सवि मनुजवी, ए तुमची मदियात ॥१॥ ध्य धकी हवे दाखवो, नाम ठामने काम ॥ तव बोदो ते यद्ममें, मन्ययने करी प्रणाम ॥ १॥ धंपापे प्राहि रहुं, बहुं सदा जिन माण्टं॥ सत्य वचन सुख्य कहुं, जाई मध्यात्म प्रमाण ॥ १॥ संसादिकना कार्यदी, धर्मकार्यधुं रंग॥ राखुंतुं निख्य धकी, मबिहद रंग मन्त्रना ॥ था। देवाचन गुरु सेवना, पात्रदान सुप वित्र ॥ तप जप काया हाक्ति सम, करूं ममे सुचरित्र ॥ ए॥ दिख्च ज यात्रा निमिन, मन राखुंडु प्राहिं ॥ चैत्याद्मय नमवा जयी, भाव्यां है ममे माहिं ॥ ६॥ यतः ॥ मायां शिष्टाम् ॥ मनत जस षार याचक, नृप खल निपाद संद्वतयाति ॥ घन्यों सो यस्य घर्ने, अलिनपातादी शुने तमे ॥ १ ॥ जावार्ष न्यनने षापि, पाषी, घोर, याचक, राजा, सम अलिको झने गोत्रीयो हरण करी जाय हे माटे तेज पुरुषने घन्य हेके, जेतुं घन जिन गज्यकिक जन्म लग्नेने निने नानान्य े ... क माविका जी ॥ जीवाजीवादिक जाण, शिरं वदे मी जिन माण ।भोण। जिनमतनी ए क्रोनादिका जी ।।।। एक्र तो ठवम पत्र, एदनो निर्मेत गात्र ।सोण। पात्रा षठ मुज २ मुजादिका जी ।।।। एक्री निर्मेत ववार, कीजे दिविष प्रकार ।सोण। सारपणापी वसी वसी चचन सुखी तेषीवार, दरख्यो मजयकुमार ॥ सीजागी बास ॥ घन्य घन्यु ए ह्यु नी ॥ श॥ इम ब्रालीची चिन, बोस्यो मन्त्रप् पवित्र ॥सीण॥ ब्रम घर तुमे पायन क रो झी ॥ तव बोखी ततसेव, घर्मवाषव तुम हेव ॥सोण॥ वचन भ्रमार्फ चिन घरो जी ॥३॥ ब्राज हे ती अर्षेवास, सबि साइमिषीने सास ॥सो०॥ जोजन हुरु किम कीजीए जी ॥ सुषि चमक्यो विक्तमांषि, वक्त षत्तीपम त्यांष्टि ॥सोण। वाज प्रत्यूपे दीजिये ज्ञी ॥धा। बीजे दिन सुप्रकार, जिक्त करे मनुदार ॥सी०॥ षत्रपकुमर जोजन तथीजी ॥ डास १२ मी॥ (माने साल ए देक्री) पात्राहिक शुत्र कार्यने विरे वपराय हे ॥ १ ॥

पता अपुड्रकार ते अपुड्रकार करवार्थ नार्थित करेखा कपटना पारने, ब्रह्मा पण जा है ण, राजकन्या निपेवते ॥१॥ जावार्थ नार्थित राजकन्या जीगवी तेम ॥१॥ ध्रामचे क्षा क्रकता नवी जेम कोलीए विच्युर्व कर्म कर्मा राजकन्या जीगवी तिप्रकार जोजन च्राह्मा अप्रचन विविध्य प्रकार ।स्मोण। झालि बालि घृतयी सही जी ॥६॥ तड्मारि गोरस ताम, चंद्रहास्य इसे नाम ॥सोण। मिद्राद्मे मन मोबर्धो जी ॥ जिमता जैत तिवार, पू रित कम ॥सोण। गणिका राजगुढ्डी पकी जी ॥ पोट्सी उक्क्ष्रियनी तेद, नुपने कदे स सनेह ॥सोण। मणिका राजगुढ्डी पकी जी ॥ पोट्सी उक्क्ष्रियनी तेद, नुपने कदे स सनेह ॥सोण। मणिकाने श्राह्मे अस्त पकी जी ॥ आज्ययकुमरने ताम, तेहाबी तिण उाम ख पसाय ॥सोण। गणिकाने श्राह्म तावरे जी ॥ श्रान्ययकुमरने ताम, तेहाबी तिण उाम ।। तव ते कपटी देश, मनप धकी सुविशेष ।सीण। मीति करे वचने घर्षी जी ॥ ॥॥ | ासोण। गणिका गृहथी ब्रावरे जी ।।था तवं प्रयोत नरेगं, ब्रज्ञय चकी सुविशेष ।सोण। | दास्याविक विधि वहु करे जी ।। झुब्लाणों जनार, देखी अन्तयकुमार ।।सोण। चेनप्रयो | त पिषा हित घरे जी ।।१०।। घन्त्रय कहें घुक राय, अनी ब्रवर ग्रेपण ।सोण। घरम् त यत ॥ अनुष्टुब्ब्न्म् ॥ सुप्रयुक्तस्य ब्नस्य, बह्याच्यंतन गष्ठति ॥ कोलिको विभु रुपे

शिक्षा । ११ ।। जहा सीधो जुगते जय चरत्यो, पूरव पुष्प मयोगेरे ॥ वे स्वीकी भ्रासक रहे | किस, चेतन ने जगयोगेरे ॥ गुण। ११। वेब तोतुवक्ती परे विजले, जोग संपोग सवाई | १ ।। तेरमी डांबे बीजे जब्दामें, घुष जिनविज्ञये गाईरे ॥ तुण। १३।। १।। ।। वेब प्रमायी, हार्बिन्यं मंदेर ॥ वृष्यं वे स्वावाद प्रसंगयी, हार्बिन्यं संवे ।। वृष्यं प्रविद्धा स्वे ।। वृष्यं प्रविद्धा ।। वृष्यं प्रविद्धा ।। वृष्यं प्रविद्धा ।। वृष्यं प्रविद्धा ।। वृष्यं विव्यं विव्यं ।। वृष्यं विव्यं विव्यं विव्यं विष्यं विव्यं विष्यं ।। वृष्यं विव्यं ।। वृष्यं ।। वृष्यं ।। विव्यं ।। विव्यं ।। वृष्यं विष्यं ।। विव्यं ।। विव्यं ।। विव्यं ।। विव्यं ।। विव्यं ।। विष्यं ।। विव्यं ।। विष्यं ।। विव्यं ।। विष्यं ।।

देखे स्पाहि हो ॥मुंगायुगांशा माताद्यं हठ माउने, मागे पापस ताम हो ॥मुंगा आखे "पु नाखती, माता बोद्ये श्राम हो ॥मुंगायुगाशा न मित्वे पूरा कूढ़ाका, नोजन वेसा __)हो ॥मुंगा तैतादिक पिण होहितो, तो पापसनी झी तात हो ॥मुंगापुगाए॥ छन तेतादिक पिया दोहिलो

पंग्रु, पिरसे ने परमान हो ।सुंग। पवन यकी ग़ीतव करे, राखी निभय े।सुंग।पुगाए॥ एवने मुनिवर गोचरी, फिरता आहारने काज हो ॥सुंग। मा अपरण निहा पहोत्मा सुवसाज हो ॥सुंग।पुग।रण। देखी मुनिवरने निद्य,। । गननी बुद्धि हो ॥सुग। ममकित हायोपसम यकी, आत्म थयो सनिबुद्ध हो ॥ सुणापुणारा॥ वान विपो कत्रन्द वरी, न करी विमासण कोप हो। सिंणा कोर्क जाव विकेषयी, मस्य संसारी होपड़ी। पुणा पुणार श। सुनिवर वहोरी संचत्ना, सगम बाटे

प्रतम ॥ पूर्ण मास पदोते पके, जनम्यो पुत्र रतन्न ॥ए॥

ा बेल १५ मी ॥ (रामचइके बागमें, वायो मोरी रद्योरी ए वेद्यी)
प्रतन्यो पुत्र सुरंग, जदा इपे वेरेरी ॥ केट सुषी तव वात, न्रष्ठव अधिक करेरी
॥१॥ पंच शब्द वाजिम, धर भागये वाजेरा ॥ जेरी जूगल घन घोर, धंवर द्याया गाजे
री ॥१॥ सीहव गावे गीत, ये आद्यीय घणुरी ॥ तुं कुष्टममन्त पुत्र, मुखबी एम जये
री ॥३॥ याचकने विये वान, वेटित तेह तधोरी ॥ संघया संबंधीने मान, विविध प्रकारे

है पथेरी ॥श॥ युजा परिषय स्पित जिनमंत्रिर विरचेरी ॥ कुलदेव्याने ताम, चंदनदी च हर रचेरी ॥॥॥ इस उठामण एम, कुल मर्याद कियोरी ॥ पोखी नात पवित्र, नाम विचा है। वियोरी ॥॥ सुपनमें शासिनों क्षेत्र, दीवों श्रीत सुखकारी॥तिये करी शासिन्यञ्ज कु मार, नाम वियो निरवारी ॥॥ क्षेत्र ममर कुमार, के रति पति सम कहीर ॥ इंज्लाचे श्र प्रदुशर, अवर न इण्युग बहीर ॥णा मुद्दर वायी तार, गज गतिनी परे चाले ॥ उम क नमक ठवे पाय, मात पिता मन महावे ॥१॥ श्राव्या मात्रो वियान्यात्त करावे॥ पवित तंत्रारे नेम, तिम तस सवादी श्रावे ॥१०॥ योवन माव्यो जाम, ताम बत्रीश है। कुमारी ॥ गुन वेदा गुन सप्त, परयावे सुविचारी ॥ ११ ॥ तेद्देशुं विविद्य प्रकार, पच

क मूपाल ॥ पुरमें पढ़ह वजावियो जी, सामखजो चनसाख ॥सो०॥ १३॥ काछे ने ज गढ़ी रच्यो जी, तेहनो जे करे न्याय ॥ गीनस्कोठ पुत्री तयो जी, पाषिमहषा तस षाय

के एक व्यक्तिमाना काणो

इति श्रीषन्नशादिचरिनेप्राकृतप्रवयेदानकस्यष्टुमास्त्ये वितीयशास्त्रारपत्रमशादबुद्धिरा क्मवर्धनीनाम दितीयोज्दास समासम् ॥ प्रसिमोज्दासे ॥ दात १७॥

॥ मेहा ॥ श्री जिनगुरु प्रवसु मुदा, घमच्यान भार स्थात ॥ ५०० कहनुइन रा हिं

शाकता, मारगमादी तस्तर मच्या ।शा बुटी क्षोचा अपने तिथा, कारणा, क्षांप रह्यों ते भ्र र या इदा ॥ करिये पेट पूरपा थ्रति अजे, तुज विरहे नवि वेदा सुक्षे ॥ए॥ तुज मिलने देव ययो संतोप, पाम्पा हवे थ्रमे पूरपा पोप ॥ तु अप कुला मंक्ष्य कुला होता, कुला पा पार पणो तुं जीव ॥६॥ तव घनो मन चिते इशो, जाग्योवय पहलो निहि किशो ॥ प्रञ्ज त्र पणो तु जीव ॥६॥ तव घनो मन चिते इशो, जाग्योवय पहलो निहि किशो ॥ प्रञ्ज त पणो राखी तिथे तप, वस्तान्त्रण थ्रकी सुखवाय ॥॥ किर कोन्ता सहनी तिथिवार, धुषुमपाल गीने हुन्म, देवपाल महिपाल वेवेदा। भमिततेज महितेज वयाल, पु पपपाल जिनपाल कपाल ॥॥ चनपाल धमेपाल मयाल, जूवर स्रीवर ने श्रीपाल ॥ धासपाल गुषपाल पित्र, सेमकरपा लक्ष्यप सुचिच ॥१०॥ तेनक्रक्त

प्रहत ॥११॥ सागरचद शिवचद सुकुंद, गोर्निद मायव घवत आध्यद ॥ शंख १ वग जयक्षेन, वीरसेन महसेन देवसेन ॥११॥ इत्पादिक षाव्या शुन्न रीत, ग

सुनेद सु

हैं यहन फहानिहा रहे, जाम्पदीनमा दीहा । हो। ते हेही यनशाहजी, चिने चिन विशेष ।।

पूर्व हितकारण ज्ञा, है जाम्द्र गाथा। यत ।। अप्रोह्मम् ।। विस्तिहीविह्य ।

पूर्व हितकारण ज्ञा, है जाम्य परेहा ।। ।। यत ।। अप्राह्मम् ।। विस्तिहित्व ।। ।।

पूर्व जाणकरमक्रणक्रणक्रमा अप्रोह्म ।। अप्पार्ण च किसक्क, हिंगक्क तेण पुह्यिए ।। ।।

प्राम्प के नमा श्री के ज्ञानि विषय मकारना विद्य विद्यामा आदे है, सक्का अने क्रक्की नमा श्री के नाम क्रक्की एक मुमुख, विस्ती एह निर्मित ।। सुख संयोग दाहि ।

प्राप्तु जोरए ।। ।। ए वहमी ए शुह मुमुख, विस्ती एह निर्मित ।। सुख संयोग दाहि ।

प्राप्तु जोरए ।। ।।। इस निरम्प करि विस्ती, गुह चितामणी पास ।। एका क्रक्की के हिंग ।।। वाही ने वाहजी वतुर, यामिनिय ।

प्राप्त मुख सिव संययमे, नाम क्रकुकी जेम ।।।। वाहीने चाहजी चतुर, यामिनिय ।

विस्ता ताला। वहा विसे विसे करिय करियो करियो ।।।।

भिष्यार प्रमुख सबि सम्यण्मे, नाग कचुकी जेम ॥ उ॥ ठाढीने चाख्यों चतुर, यामिनिये विष्य ताल ॥ वेश विवेश विलोकतो, नवनव कौतुक ख्यात ॥ ऽ॥ ।। वाल २ जी ॥ (मगषवेशको राज राजेसर ए वेशी) पत्रोकाद ने पुष्य प्रयोगे, चितामणी संयोगे ॥ चितित कार्य सक्त सावेतो, जा प्रमुल हाल जोगेरे ॥ जविष्य, पुष्यत्यां कत्र पेलो ॥ पुष्ये समय प्रसाय सीठे, पुष्प भावे ।। वाके कोर्ये समय प्रसाय सीठे, पुष्प भावे ।। वाके कोर्ये समय प्रसाय सीठे, पुष्प ।। वाके कोर्ये कोर्ये नारी, बनुक्रमें निका

्री राज्यचिन्द्वानि ॥ ब्रिलियेकपटवंची, वातव्यजन व्यास्पापि ॥१॥ जावार्षः-क्राके दमनु, ॥

ध्राञ्चे प्रवाच्नु पात्रण करनुं भने ब्राप्रितजनो एटवे क्रार्थ भावेकानुं जरण पोषण करनु, एज ।

प्राण्य राज्यचिन्द ठे, परनु अवस्मनाविक विना राज्याजिषेक, मस्तके पट्टबग ब्राने विने ।

पानु वामरोनु विजावनु, ते गूमका तुष्य ठे कर्षात् गूमकाने जेम पायीने ब्रानिकेक, भूमका तुष्य कर्षाते ।।।। जेहनी जागिन गायीन्द्व विना अतियेकाविक पण ।

पानु पूर्व प्राण्या ॥।।। जेहनी जागिनी जयती जायी, सित्यो मार्च गवायी।। वा ।

प्राण्या ग्रुम श्राण्याता, वीरे जेह यवाणी रे ।।जणापुणाशा राय संतानिकनी पट १ ।

प्राण्या, ग्रुम श्राण्याता, वीरे जेह महाराजानी पुत्री, चावी जामम जायी रे ।।जणा ।

प्राण्या, ग्रुम श्राण्याता, कोर, सक्व कलाये पूरे।। वीणा नाद विग्नेप वजाने, गा ।

प्राण्या ग्रुम श्राण्याता, कोर न वीसे लोबी रे ।।जणापुणाशा राय संतानिकेन जोहा।। है केषे ब्रावे ॥ स्थानक सुवर सेई धनपी, सुखमय काल गमावे रे ॥नणापुणाशा राय से तानिक निवानो राजा, सहस्रानिकनो वेटो ॥ उत्रीक्ष राज्यगुषे करी पूरो, त्यागी मास ब्राखेटो रे ॥त्रणापुणाशा पतः ॥ श्रायंद्वनम् ॥ कृठवमनाश्वयाज्य माश्रितन्तर्यो च

रे, सहझिक्सण मिण सोदे ॥ पेटी परंपर सह को एके, वर्धन करी बिद्ध मोदे रे ।। जाणा विप तेहनो गुण को न जाणे, तब तृपे परिक्रक तेव्या ॥ मान बेहने मिण गुण पूने, पिण कोइ न के के कारे ।। जाणा पुण।।।। तब तृपे नगरमां पढढ़ बजायो, सुण जा पूने, पिण कोइ न के के कारे ।। जाणा पुण।।।। तब तृपे नगरमां पढढ़ बजायो, सुण को सक्स बोकाइ ॥ के प् माणिनो गुण देवाहे, मन्यप माट बनाइ रे ।।जाणा पुण।। १०। के तहने तृप जूत्यों (तेम हरते, पांचते गाम वदार ॥ पांचते हाथी पांचदो दोहत, वालि दो तेहते तृप जूत्यों (तेम हरते, पांचते गाम वदार ॥ पांचते हाथी पांचदो दोहत, वालि दो मान प्रकार रे ।।जाण पुण।। १॥ वेहते तुप ने वित सेते, मिण परिक्रक जे विचारी रे ।।जाणा पुण।। १॥ सांच्या पहिले का पांचते तुप तेहते तुप के करी मणाम रे ।।जाणा पुण ते जाणी, धमादों हो मान ।। पांचता नामा मान्यों वेते, तुपने करी मणाम रे ।।जाणुण पुण हो ॥ १३ ॥ वेहते ।। सुच परिक्रा करवा समर हो ॥ इस पराट बातो रे ।।जाण पुण।। १॥ वुद्धित चेहते वोहों मोने ।। वाह सक्त जोयां माने हा ।। हो सांच ।। सुच वोहस माने हे पर सांक्ष सक्त जोयां माने हे पर सांक्षे बोक्या पंच ॥ ।। सुच सरकात संच ॥ सुच सर स्क्रत संच ॥ सुच स्क्रत तेव ॥ सुच स्क्रत तेव ॥ सुच सर सेव ए सांक्षे बोक्या पंच ॥ ।। पुकराज वेहरू (तिम, विज्यने गोनेव ॥ प चरे र

ह स अ वराह ए जगी हो। वश्मूत ह ममूकने उ नाग 0, ए आठ स्थानक होन जागा।।।

मिवारन तथा बहु नेद, दाख्या झाख तजीने खेद।। तुम मिप ए ने बहु मूस्य, निताम

धी एतने तुच्य ॥ए॥ एह मिपने राखी नग, करे युद्ध ते होय धन्नंग ॥ एह जेहने गृष्टे

एवापे, हते सात तिहापी जाये ॥१०॥ भूत मेतादिक साक्षात, जे कोच्या करे ज्ञयात

शाति पिए एह रत्न मनावे, शुन शाति होव बब्दावे ॥११॥ ज्वर वमन शूनादिक रोग,

ते ए मिपने संयोग ॥ सवि कटते हुरे थावे, जिम रवि तेजे तम जावे ॥१९॥ एहनो म

रे त्यं तुमें देखो, सुविक्तेय वकी तुमें पेखो ॥ महोटो एक पाद्य मंगावो, जुन शालि क

रे पेखी नरावे ॥१॥ मध्यस्थाने ए मिपा मूको, पेठे निरखंता मत चूको ॥ कोड पेखी

शात न खादो, तो ए मिपा परिका पांछे ॥१८॥ राजाये ततक्षण कीचो, कोड पेखी

इस्ता नह खोदो ॥ मिपा दीघो घाजायो जाम, कण खावा पखोए ताम ॥१ए॥ हुयो
स्थान तत्तको एहं भरवक मताय फोक्ट ॥ थाल प्रमें प्रमाय सुख सिहये ॥ए॥रति छपरनो जेह रद्ध, नेहना कीचे बहु यद्ध ॥ रद्धाकरनो निष्पम, स्वा ज्ञाविक घाट संपन्न ॥६॥ तेह रत्न सक्त फडा भापे, खंपित डुग्ख स्थानके पापे ॥ इवे मौक्तिक माठ प्रकारे, छत्यति कदी मतुसारे ॥७॥ ठीपोदर १ गजने हाशि २, मन्न ६ श

रस, खारंन्यो खावास ॥ए॥ धुन्न वेला झव्लोकने, माब्यो कार्य महंत ॥ महेनतिया म हेनत करे, छक्क पये झव्यत ॥ए॥ एक कर्प झव्ला प्रते, पुरुपने रोप हिनार ॥ नोजन चोला तैत्त्रधी, टेफ रोप व्यवदार ॥१०॥ घन्ने सन्यपुरी पकी, नीसरियो तिषिवार ॥ चे चे कारय नीपन्यो, ते निसुषो षाधिकार ॥११॥ बाबम बेहि है। प्रिणिशाश ए फांकणी ॥ फमे तुम पाबव वाविया की, तुमे श्वमंचा ज रतार ॥ तुम प्राधार वालेहारू जी, बीव जीवन निरधार हे ॥प्रीणाशा मात पिताये तुम मेते जी, सौप्यां पंचनी साख ॥ केड न ठोडू जीवता जी, ते निष्धय मन राख हे ।प्रिण ॥शा ए मंदिर ए मासियां जी, ए मुखत्तेज मुवास ॥ सरवे बह्नज तिहां दांगे जी, जिहा संगे तुं पिषु पास हे ।प्रीणाशा इम कदेती शिष्पे सती जी, जोया सयन प्रावास ॥ न वि दीठो बह्मज तहा ची, भावी साम् पास हे ।प्रीणाशा भ्रम प्रापेहा हीसे नही जी, भम मंदिर इणिवार ॥ बाइजी तुम जाया पखे जी, भवर कवण मावार हे ।प्रीण ।।हा। ॥ बाल ध घो ॥ (फ्ल्प लाखीयी रे जाय ए देशी) घनोहााइ जब नीसको जी, ठैनी नारी प्रसंग ॥ नारी त्रिष्पे ततक्ष्यो जी, नीव दे से पियु संगरे॥ मीतम, किया गया धमने रे ठोडि ॥ इस्सीनी वेसा नहीं जी, षाचो

इम केतेती रहती घकी जी, ने त्रिपये तिषिवार ॥ विरङ् विद्याप करे घषाा जी, करेता | नावे पार रे ॥प्रीशाशा क्षीजवती पिषा सांजवी जी, परणी ढक्षी ततखेव ॥ वारवार ए हु पुरासंजा, बिरब विय का बंब र ॥प्राणाणा तु सुज भाषा लाकडा जा, कुलमन्ता कुल हुना जा, विराय ।। पर ठारणारी परगंदों जी, पैतृक डु खनो जाय रे ॥प्रीणाणा वर पाकी वृवे का कि माराणी जाय ।। वर्ष पाकी विव का कि माराणी जाय ।। वर्ष पाकी ने कि माराणी जाय ।। वर्ष पाकी कि माराणी जाय ।। वर्ष पाकी के कुलाचन ॥ गर्ने ।। वर्ष पाक्ष पाका वर्ष ।। वर्ष पाक्ष पाक्ष पाक्ष पाका ।। वर्ष ।। पुरनो जो, विषक्ष वियेका वैवरे ॥मीणाणा तु मुख भाषा लाकडी जो, कुत्रमंत्रण कुत नाषा। पर ठपगारी परगढो जी, पैतृक डु खनो जाषा रे ॥मीणाशा वय पाकी बुवे झ म तषी जी, तूँ किम मूकी रे जाय।। वडपपाने तेवा तथो जी, फल ब्राविको कहिवाय रे

तुश्चन वेत्तों, वेतो बाह्याण जुककम्मार्थ ॥ स्वणायरिम पने, सायुरो हफ्ठ में लग्गो ॥ श्री जावार्थ – वे त्तुद्धा ब्रामा तारो काइ पण वेप नथी, वेप तो ब्रामारा पूर्व कर्मनीज वे जावार्थ – वे त्तुद्धा धामा तारो काइ पण वेप नथी, वेप तो ब्रामारा पूर्व कर्मनीज वे क्ष्में स्त्वा हिंदी जो कोइ न च ले नथी हहा जुम तथी जी, वे ब्राम दोप सुजाय ॥ पिण्य कु कीजे तेरहतुं जी, कोइ न च ले म कहा जो, इहरू पत्त कर केइ जाय रे ॥ वेशार्श ॥ यतः ॥ सो म सक्कन क्रव्य हु म सक्का जी, तो ब्राम कोप न गया ॥ तक्कन क्रव्य हु म सक्का जी, तो ब्राम काय न तथी ॥ तक्कन क्रव्य हु म सक्का जी, तो ब्राम सिक्च साथी मारो है, तो ते ब्राच ले ब्राचाना हु के को को पे को मार्थ से जो ते स्तव्य साथी ने स्व करांग है । ॥ शा प्राप्त जो तेन स्तव क्राये है । ॥ शा पा ता ते सक्का तो स्व प्त गया है । । वाम ता तुर्व हिला । प्रत्ये नेप प्रमुखने जी, सिंव विरत्तांत ज्यायरो। पूताणा। शा गम गम तुर्व हिला जो, सूक्या प्रेच ब्रोमें । ति विरत्तांत ज्यायरो। पूताणा। शा गम गम तुर्व हिला जो, चोमी हाव पवित्य । साव वात्यो एक रे। हो, चोमी हाव पवित्य । साव वात्यो हो के हे साजता हो । ब्राम जमाइ उपर ब्रिविक, । ब्रोम जमाइ उपर ब्रिविक,

| राम। दु धन पेरा कर कारण के, पासी चगत धनना ग्रपर आधार राखनार उ कमक |तिसैन पने निर्जीय एवं मडडो, तेने बिपे हुं कोइ कर देखतो नयी अर्थात जो पासे धन होय, तोज सह मान आपे हे, परंतु कोह मडबानी पेहे निर्धनता सासु जोतुं नयी ॥३॥ का निवाह का निर्मार के विज्ञे विज्ञे । इहा रहेवो जुगतो नहीं ए।। महोटाबु का नोक्स वनसार दे, विज्ञे विज्ञे सही ए।।।। वना विज्ञ परमुष्ट दे, यून की मिला गये।। आज गठ सवि माहरी ए।। तिये करी हव परकार दे, पिन्ने परवर्ष । मून मन्द्र माहरी करी ए।।। वाबाह्यनी नार दे, त्रियये तेहीने।। मुप्रे मुसरोजी कहे ए का ।। पीयर जान पुत्र दे, द्वार्को तिहा रही।। तुम पति इन्छ प्रमने वह ए।।।।। अमे जान्धे करा।। तेही वहेंद्या प्रावर्श ए।।।।। सोमन्नी कुसुमन्नी दे, सुसराह्या पकी।। ग्रामिने व का गठ ए।। कहे द्वान्त ताम दे, मान्द्र बोचन करी।। विनय वकी भवनत पर्छ ए।।।।।। हे पर गठ ए।। कहे द्वान्त ताम दे, मान्द्र बोचन करती। पकी ए।। सीने रहेवो सास ॥ हाल एमी ॥ (त्रिपदीनी देशी)

वनकोठरे, कार खानन नषी ॥ भाषे प्रवत भाजीविकाए ॥ सीने एक दिनाररे, युग्म हि वनकोठरे, कार खानन नषी ॥ भाषे प्रवत्त भाषा सुधी इरख्यो बनसाररे, सार अपायरा। अस्तर्यकी ए ॥१ धा। सुधी हुण् िरण मुखनिक्षका, कारक तिहा करे मृख ॥३॥ देस् । ज्यापारी सक्स्व, पूठे तव घनसार । ॥॥ तव ते कहे अम नगरनो, स्वामी ठे ॥ ज्यापारीने विधानता, धननो कवण वातार ॥॥॥ तव ते कहे अम नगरनो, स्वामी ठे धनकोठ ॥ ते धन आपे व्याज विष्ण, नाग्यन्त सहि हेन ॥॥॥ निर्धने पिष्ण श्रर खनन, कि धनकोठ ॥ ते धन आपे व्याज विष्ण, नाग्यन्त सहिक्ष युपे, परिक्र युपे घनसार ॥॥॥ ॥ वाल ६ ६।॥ (नदी यम्नाके तीर छेदे वाय पंत्वीया ए देशी) अप्त सहित धनसार सरोवरमें तवा करे तिवा खननतुं कार्य घरी भनमें सुग ॥ अप्त सहित धनसार सरोवरमें तवा करे तिवा खननतुं कार्य घरी ॥।॥ शमिष्वति पुरुष प्रते ॥ तेल चोलावि बितयकी ए ॥१ था मुखी इरख्यो घनसार दे, सार उपाय ए।। तहर नरण करवा नखी ए ॥ दाल पांचमी एषै रे, प्रीजा क्टबासनी ॥ कही जिनवि बचे तोबामणी ए ॥१ था। ॥ क्षा ॥ माज्यो चनपुरमे तुरत, पनिवृत ते घनसार ॥ वेखे व्यापारी तिक्ष, जा ति माति तिथिवार ॥१॥ वाषावटी बोक्षी तिमज, पारेखने मधिवार ॥ सीकिछ मुक्ता फुज मधिक, पृत तैखादि विचार ॥१॥ सोनी गावी सामद्रा, फुडीपा ने तावून ॥ साष

भग कियो, एह सही निरवार ॥शा षमोक़ाष्ट्र जितने, वन विषा दाजे एह ॥ ही तिये करी निज कुन गोपने, निष्यमें नहीं सिर्वेह ॥शा जगरवाइने कहे, होतो मोसी हैं वह ॥ एहने पूत गुढ़ अब शुन, देजो तुमें अविरुद्ध ॥शा जगरवाइने कहे, होतो मोसी करा वह ॥ एहने पूत गुढ़ अन्त शुन, देजो तुमें अविरुद्ध ॥शा सर्वे ग्लुत्यमां घृष्ट ए, व्योपे करी अवरेश ॥ ता बात अभी ॥ (सीता तो रूपे रुप्ते ए वृद्धी । एका। हि हो बात अपी हो ॥ सुणाश॥ विरुद्ध भावे निह्म अति सुप्रसोग्ने हो ॥ सुणाश॥ ताबुत्यविरु तस अपो ॥ जोवावे हिन आपी, धनसार जयो शुन वायी हो ॥ सुणाश॥ ताबुत्यविरु तस हो ॥ सुणाश॥ वस अनेरु अवत्य हो ॥ सुणा प्रीजे दिन सिम हेव, धनपित मावे बरोटेन हो ॥ सुणाश॥ वस अनेरु अवत्य हो ॥ सुणाश॥ वस विरो तस हो ॥ सुणाश॥ वस अनेरु अवत्य हो ॥ सुणाश॥ पटे वह मुस्य हो ॥ सुणा॥ आते तस हो सिम वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वह मुस्य हो ॥ सुणा॥ आते सिम परिणामें, विरो वर्षे हो ॥ सुणाश॥ वर्षे वर्षे वर्षे हो ॥ सुणाश॥ वर्षे वर्षे

प यह सुखतंगे हो ॥ सुणा "दारपाव ममुखने जाख्यो, सह तेवकने पिपा बख्ओं हो ॥ सुणा १ ॥ हवे हेठ तिहां बनसार, कहे बहु प्रते सक्व विचार हो ॥ सुणा सुमे जान प्रमणी में कह नहां ।। सुणा १ ॥ विचार हो ॥ सुणा सुमे जान कहे मनमा जायी हो ॥ सुणा भी जे उद्देश ॥ सुणा १ ॥ विचार माया ।। विचार ॥ हवे ने जियपे वधु तिहा, सेवा आवे तक ॥ स्रष्ठ दियं जल सारिखी, ।। वोहे ॥ १ ॥ चोहे विस्त ने त्याच्यी, आवे सुमंदा जाम ॥ सौमायमंज ।। वोहे हे जियपे वधु तिहा, सेवा आवे तक्षा ।। स्रिवायमंज ।। वोहे हे जियपे वधु तिहा, केता हो हो अप माया ।। मायर केट पति स्वायो, पार्य मोरस सार ॥ कहे वाह हो मावजे, नित्त मेते मुज भागार ॥ ॥ तक्षा त्रिक्षों पार्य अद्यों के ने तिलंजे ।। मावजे हे विस्त माया ।। सार्व हे विधा सार्य को साम्यने हे वेच ॥ ।। तत्र मुत्त सार्य को हे विद्यों सार्य को भी हे हियों, ।। विस्त मेते पर अवल मनोहार ॥ ।। निमुषी खीजों ति जियों, विख्यात ॥ हा। विद्यों ते विचे तुर्य सक्षा ।। विद्यों को केट वह ॥ ।। विद्यों तह वह ॥ वह ॥ ।। विद्यों तह वह ॥ वह ।।। विद्यों हे वह ॥ वह ।।। विद्यों हे वह ।।।। विद्यों को केट वह ।।।। विद्यों हे वह ।।।। विद्यों को केट वह ।।।।

डाख माहरे रे ॥३॥ ए माकषी ॥ यतः ॥ माईत्त्रविक्तिदेतद्वस् ॥ अद्यापेनकुसात्त्रवि यप्रतो ब्रह्मान्त्रतांनोदेरे, विश्वपैनवद्गावतारगहनेहित्तोमहासकटे ॥ रुद्दोयेनकपाद्यपाणि पुटकेत्रिक्ताटनकारितः, सूर्योब्रास्यतितित्यमेवगाने तस्मैनमाकर्मेषे ॥१॥ जावार्षः-जे क्रमंबडे ब्रह्मा कुंजारता चाकनी पेठ ब्रह्मान रूप घढाना पेटमा कचजे रखायो,

हाराजन, विपरीता कि शृबना ॥ पेनवद्मः प्रयावति, मुका स्तिष्टति पंपुवर् ॥ १ ॥ जावायः-है महाराजा। भा भाराष्ट्रपी साक्त्रव वहु तोह्वार हे केमके, ते साक्त्रवंद वे मानायां-है महाराजा। भा भाराष्ट्रपी साक्त्रव वहु तोह्वार हे केमके, ते साक्त्रवंद मान्य साक्त्रवर्षा वेचाएजा पाराप्ता हावी वाद्यों एवं तेसी देहे भाषित् साक्त्रया वेचाएजा मायासो हावी वाद्यों एवं तेसी वेह्न हिंगते वेसी प्रताम पर्वेद्या माया को तेह्न के भने तेची मुक पएका पारासानी पेहे तिराते वेसी रहे हे ॥ १ ॥ सांवे वह सुर्वरी, ते हु किहा वहेश ॥ जोगव नोग जावा हहा, वयण प्रमाण करेश ॥ ४ ॥ ए यीवन ए वसन सुर्व, ए जीजन ए वसन ॥ पामीने जे हारवे, पस सावा पेहे साम ॥ ॥ (हो कोइ पायी मिलावे साजना ए देशी) ॥ । हो वयण हुपी विप सारिखा, यनाता सिण्वार हो॥ हव मान करी घीरज घरी, दे बेतन सुर्व नाम हो॥ अपकीरति भवानी वोसीए ॥ १॥ ए आक्र्यो ॥ जिम रहे जनमा से माम हो॥ अपकीरति भवानी होने सुरस्व जाव हो॥ वेद्य होना हुप नाम हो॥ अपकीरति भवानी होने सुरच का वही ॥ नाम हो॥ अपनित वाय हो॥ मेरु माहिषर जो वसे, क्रमीन ते दीतात्व घाय हो॥ मन्ते ॥ नाम हो॥ अपनित वाय हो॥

बाराशा उम्म तमे सिश सूर ज्यू, जो हाव चवात होय हो। तो पिया सती बुके नही, की कराव विमासी जोय हो। प्रावाशाशा सतीनों सन्व मूकाववा, कीवा जेंचे अपाय हो।। ते कि हर्ति विमासी जोय हो।। वाशाशाशा सतीनों सन्व मूकाववा, कीवा जेंचे अपाय हो।। तो महिष्में, तो स्वाता करा हो। वका सुरावी तिहा, राम तयीते सीस हो।। वशा परमींतर साव विमास हो।। वका सुरावी तिहा, राम तयीते सिहा, राह्यों तिहा, मुक्ता मुक्ता । वका। ता। के विद्या महिरमा वहों, संब हो।। ता वाणा । क्यों तिहा, महिरमा वहों, संब हो।। क्यों।। परनारीनी सगते, जुं जे विद्यां मिश्व मित्र हो।। विद्या महिरमा वहों, संब हो।। क्यें त्र के नये तहा करे प्रतायता हो।। विप्र मुक्त । विद्या महिरमा वहों।। ता का का विद्यां। ता का का विद्यां। ता का का विद्यां। ता का का विद्यां। ता करें।। विद्यां मित्र के विद्यां। विद्यां करें।। विद्यां करीं।। विद्यां करें।। विद्यां करें।। विद्यां करें।। विद्यां करें।। विद्यां। विद्यां करें।। विद्यां। विद्यां।

॥ वाल १० मी ॥ (मुजरो स्पोने जातिम जाटडी ए देशी) वयण सुणी निज नादना, प्रत्यय पामी तिवार ॥ नाम यकी रे निश्चय धरो, पे रूपे प्रगट श्वाकार ॥ तेरि विश्वष्टरी प्रीतम माइरा रे ॥१॥ ए भाकपी ॥ 'धूंघटमें रे श्वानन घरी, खाजि करी कहे वेण ॥ प्राणिपप पियु माइरा, तुमे वस्नुन्त मुज तेण ॥ तोणाशा तुज बिरहे में परिहस्सा, वस्तानरण विशेष ॥ जोजन सरस सवे तष्यां, तांबू े मुस १ प्यटामी मुम घाली प्रमास क्षेप । तोण। शा स्तान सुशुया इतिता, में गढ़ी पिषु एक ।। तुमे तो कमने ने क्षित्र प्रमास्ते । प्रमासिक क्षेप्र प्रमासिक कि विकास कार्य कार कार्य कार कार्य कार कार कार्य कार्य कार कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य क

|है| नक ताम ॥ वात कदी मुसरा मते, जे गड़ भाषणी माम ॥ तेणारथा सुणी घनतार भा |है| पार ते, रुवन करे ततकाल ॥ हा हा कुवने कलियो, खोषो होल विद्याल ॥ तेणारणा |है| वेशाटन घन कपणो, ए ने ड ख दता मूल ॥ ए अपवाद ते डापरे, ए महोटो मुज |है| शूल ॥ तेणा १६॥ किहां जात्ने केहने कड़े, शो कर्ड बांदा मितिकार ॥ घन विषा कोय न |है| वेजेखे, कोय न माने जीकार ॥ तेणा १७॥ एतः॥ सत्तैयो त्रेवीहो। ॥ चाह करे जिनकी जगमें सब भाषके पाप नमे जबनैषा, मातकु तातकुं लागत बस्तज जामिनी छेन ६ दे त वजेषा। बात जुरी तब सार्वाह मानत बोक गुनी षक् वास कहेषा, केदावदास कहे सुष

। द्रास ११ मी ॥ (करजोठी देवया कहे हो लाल, जाने रे प्रवास्त्रा माज ए देवी) करजोदी सवि इम कहे दो लास, सुणोरे सोजागी ॥ वीनतही महाराज हो घ माहाह, सुणोरे सोजागी ॥ ए माकपी ॥ वनपुर नगर ए पने जस्मो हो लास, सुण। माज ॥ वह तुमारी तुरतमें, सावेशु महाराज ॥धा इम कहे। सवि नेसा षड्, सेर्घ नज राणो सार ॥ धनपतिवाहने म्रागंडे, थावी भरे जुहार ॥५॥ सन्माने सवि वेठिने, वेर्घ साव, सुण। अस्पित अन विश्वाम हो ॥वणा सुणाए॥ पिछ निमुषो एक घमतपा क्रोफत पान ॥ पूने हो कारण तुमे, मान्या पुरुप प्रधान ॥६॥

पढ़ हुता द्वावनात है। 1400 हुआ है। 150 है। 15 वहु हुती सुविनीत हो ।षण। सुण। है।। तक वेवां तुम मिंदरे हो वाल, सुण। भावी हुती सुविनीत हो।। कोइफ कार्य उदेशिने हो लाला, सुण। वेटी हुने घरी टेक हो।। घण। सुण।आ लावर करावी तेहनी हो लाल, सुण। सीपावो ते सर्वोग्न हो।। पण। सुण। प्रपा प्रपा हो।। पण। सुण। प्रपा हो।। पण। सुण। प्रपा हो।। पण। सुण। प्रपा हो।। पण।। प्रपा हो।। पण।। प्रपा हो।। पण।। पण।। प्रपा हो।। पण।। सुण।। प्रपा हो।। पण।। प्रा हो।। पण।। सुण।। प्रा साव हो।। पण।। सुण।। प्रा हो।। हो।।। हो।।। हो।।। हो।।। हो।।। हो।।। हो।। हो।।। हो।। हो।। हो।। हो।। हो।।। हो।। नाल, सुणा बात जे पइ विपरीत दो ॥थण। सुण। परवेड्डी घनसारनी हो लाल, सुण।

पारका छासे ड खीमा तो, तेथी पर्या विरता होय है।।।। तब धनसार तेहाविने हो सनार भने परना कार्य करवामी तत्त्वर, एवा पुरुषो विरझा होय हे, परतु ने करता पण

पारक अस्त 3 काका पा, पर, पर, पर, विस्तुत मुक्तिय समक्यो तातजी हो माल, स्पा। है मुक्त्यो करी प्रमान पाय हो।।विपा मुक्तियो हो ताव स्था। हर मुक्त्यो करी सुपताय हो।।विपा स्था। देश। देवी पुत्रने ने न्राक्यो हो लाव स्था। हर हो मुक्त्यो करी सुपताय हो।।विपा स्था। यून्म चंद्रपी नवित्तो हो ताल, स्था। जून्य कर्म क्यो करात ताम हो।।विपा मुक्ता रिक्त ताम हो।।विपा मुक्ता रिक्त ताम हो।।विपा मुक्ता ताम हो।।विपा मुक्ता हो।।विपा मुक्ता ताम माह मुक्ता ताम हो।।विपा मुक्ता ताम माह मुक्ता हो।।विपा सुर।।विपा सुर।।विपा सुर।।विपा सुर।।विपा सुर।।विपा सुर।विपा हो।विपा सुर।विपा हो।विपा हो।विपा सुर।विपा हो।विपा हो।व

॥ एणामुण। १ए॥ जीणे जराये जाजरो हो खान, मुण। चिनाषी 'कव गात्र हो ॥ थण। मुण। पूथा णहवी पिया पति माहो हो बाल, सुण। मूकते तू मुणपात्र हो। ॥ घणामुण। १०॥ मूकते तू मुणपात्र हो। ॥ घणामुण। १०॥ मूकते तक हो ॥ घणामुण। श्री जन्म स्वम्यो मातजी हो जान, सुण। है तुमको बधु बाल हो। ॥ घणामुण। ११॥ माता मनमें उद्धारी हो जान, सुण। है तुमको बधु बाल हो। ॥ घणामुण। ११॥ माता मनमें उद्धारी हो जान, सुण। हो हो ॥ घणामुण। ११॥ वन्तान्र से इत्तार हो। ॥ पण। मुण। हो ॥ चन्दान्र हो। ॥ पण। स्वार हो। ॥ हो हो। वन्दान्र हे ।। पण। सुण। जोन कहे वाल महाज्ञ हो। ॥ से ।। ।। वे ।। वन्दान्य हो ।। वन्दान्य ।। वन्दान्य हो ।। वन्दान्य ।। व

में से मां बसानरण विशेषभी, ब्रापे वरि उच्हारी ॥१॥ मात पिता जांचव चथु, मिलिपा में विर मांद ॥ वनपतिनी गुण वर्षना, करे ने भाति उज्जाद ॥॥ वनपतिनी गुण वर्षना, करे ने भाति उज्जाद ॥॥ वन्यतिनी गुण वर्षना, करे ने भाति उज्जाद ॥॥ वर्ष वर्षना, वर्ष वन्यति । वर्ष करी वन्यतिनी मुम्भ परिवार ॥ ३॥ एक वर्षने कराये, ये दे सकुने छन्य। वर्षि अम पक्त्या शा त्रपी, मुम्भ तु करि सुपसाय ॥ए॥ मिले, कहिये गोव बिजाय ॥ पति अम पकत्या शा त्रपी, मुम्भ तु करि सुपसाय ॥ए॥ मिले, कहिये वर्ष हो वर्षा। ॥ (वीया म वादति । वर्षा जावाते ॥ इत्रप्रसिक्त कृशिंभी वर्षा । वर्षा प्रवाति । वर्षा वर्षा । वर्षा पर्व । वर्षा वर्षा । वर्षा पर्व । वर्षा वर्षा वर्षा । वर्षा वर्षा । वर्षा वर्षा । वर्षा वर्षा । वर्षा वर्षा वर्षा । वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा । वर्षा मलिया मं पाछ। यम् न नावे ॥ देणाधा

गते तेम रोवे ग्रावसा, विरह विशेष जा

, मूनो स्यानक दामे ॥ रात्रि

मामु केत्र विना से

मय तिहा भवे ॥ बिरह विसूची ध्याकूत पावे,

के में । हेण। ए।। हु म्रेन वनमां कृपि सताच्या, माखा मृगने मरही ।। के ईका पखीना । के कोकताने नरही ।। है कोका, के ईक्ताने नरही ।। है गिरा।। के कोकवारी में किया।। के कोकवारी में किया।। के कोकवारी में मिथा।। के कोकवारी में मिथा।। के कोकवारी में मिथा।। मिथा मायान कीया।। हेण।।।। के काम ।। हेण।।।। के काम ।। हेण।।।। के काम ।। हेण।।।।। के काम मायान, मायान मायान हो।। है।। के काम कोते।। वात के प्राप्त नकवाना नगरीने, तेप खनता दाख्या।। हेण।। ए।। यता।। मायाने।। कि मायान नायाने।। वात के काम सामें। के काम हो।। है।।।। है।। वात ।। वात ।।

प्रमुक्ता चित नाणी ॥१७॥११॥ क्रोप जोल जय हासीने वका, कुढा ब्राल-ने दीवा ॥ क्राल तेहन जोणवा निमे, वनवित्ती पर सीवा ॥ येणा१ था चोरी कीवी परधन तेवा, क्राल तेहन जोणवा निमे, वनवित्ती पर सीवा ॥ येणा१ था चोरी कीवी ॥ येणा१ थे ॥ वेल संजेव करीने बात्या, विसवासी धन बीवो ॥ वेणा१ थे ॥ करवन परवारी इत्यो , तीवी मत्यी ग्रवाधी ॥ कामिनी कैत विद्योही कीवो, इत्य न करवन, वोरे कीवा जेषा ॥ ममताने व्य का कोवो आये जाता ॥ येगा१ था ने विद्या ॥ विशेषा हेवा ॥ येणा१ था विशेषा जेषा ॥ ममताने व्य का का माताने व्य का का माताने व्य का माताने विद्या ॥ विद्या माताने विद्या भागे किया परक्षी माने विद्या माताने का माताने विद्या ॥ विद्या माताने विद्या ॥ विद्या माताने कीवा हो को हे वेदा। ॥ वेदना फल वारके ॥ विद्या परका वारको ॥ विद्या विद्या कर्का विद्या कर्का विद्या वि

रमी, कहि जिन श्रुत घतुसारे ॥ बैण।। १७॥

" शिसी तृप सरवार ॥ अभ माते ते कामिनो, जिपणे मिद्दी तंवार ॥ कोदांवीय तत्तकतो, प्रमें शिसी तृप सरवार ॥ र ॥ पोकारी परनाट पणे, नासे तृपने जाम ॥ देववोग डाखीमा है। पमे, किरिये परना काम ॥ गा वास वापा प्रजानकों, करता डाझरी पूर ॥ वृष्क्यो पक्षो है। विन पक्षे, देवी देवाणी हूर ॥ श जास्व दीवी संपर्ट, सुसराने वरी स्व ॥ मुक्को । ते ॥ जास्व दीवी संपर्ट, सुसराने वरी संव ॥ मुक्को ने जा गरास पिपा पक्का वहो, अम विपासाओं काज ॥ ॥ सिरा सामूने वह, जिपचे । जो नपदेना दीर ॥ श सरवादो मिदिन, दासना दीवी आ । जो एक्बोन परि वाह ॥ वहार करो वेग हो, करी हिपा हो। होने नपादी नरपात | विग काम वाह ॥ वहार करो वेग हो, हिपा सहित ॥ हो। एक देराची | विग काम वाह ॥ छो । एक देराची | विग काम वाह ॥ छो । वहार करो वो हो हो केमरी ते किस करे तिसत्व ॥ हो। ते म | विश काम वाह ॥ माता ॥ । । जा वाह वाह ॥ माता । । । जा वाह वाह ॥ माता वाह ॥ माता । । । जा वाह काम वाह सरवो स्वान संपर्ध नरवो, सरवन सरवो, नपववह घन (तिजोरी) नी द्रहि क | हो स्वान वाह में वाह काम | हो सम्में वाह काम | हो सम्में वाह वाह में वाह काम | हो ।

निसुषी प्रवक्ता वयण विचार, राय चिते विनमें तिण्वार ॥ राजा कोषपी ॥ मम जामात ए निपुष मुजाष, किम एह्वो करे कार्ष कजाण ॥ राजा कोषप्री ॥ रा॥ राजाक्ष्मी ॥ विकतित वरन ए बुद्धि निवान, एह ती निमंत गंग समान ॥ राण। न्याप नांगे ए वर्ने वीर, सह एह्नी जेर । ॥ राण। शा पर्यते त्याप, एता नेत हुने होते सबस तोजाण। तिम कीर्य होरे एह अजाज, शुं खोशे ए मूचनी बाज तरा। ॥ चिती सामत तिवार, मुके तृप वमा आगार ।। राण। ते काव्या परी मनमें ।। प्रथमी वेर अपने नेत ।। राण। शा कह सुष्यो होत सुप्री वाच विवास परी मनमें ।। प्रथमी वेर भाषाति जन प्राथा। कह सुष्यो होत सुप्रण गुपानंत, तुमें जे चतुर । विवास काव्यो तुमें ने चतुर ।। राण। शा काव्यो एहने स्वामी स वीर, तुमें जे परनारीमा वीर ।। राण। शा मुके एहने स्वामी स वीर, होने जे परनारीमा वीर ।। राण। ॥ एक स्वाम परी विष्य एहने न वोद्य घोते काम ।। राण। अपने वाद्य न राणे ।। विषय पर्दने न वोद्य घोते पराण। ।। अपने वाद्यो विषय एहने न वाद्ये वाद्या वाराण।। अपने वाद्ये वाद्ये विषय एहने न वाद्ये वाद्ये ।। राण। अपने वाद्ये विषय (विषय होते।।। हासे वाद्ये विषय होते।।। विषय प्रस्ते वाद्ये वाद्ये विषय ।। स्ति ।। सांच वाद्ये विषय होते। ॥ डाख ११ मी॥ (राग वंगालो राजा निर्धन मे ए देशी) स्मानुना ने ॥१॥

पक प्यान ॥१ ॥ राथ सत्तानिक सैन्यमें, सामीत सवि सौंदीर ॥ घत्राशाब्ता कटकमें, पक एड पढ़ बहबीर ॥ १ ॥ वनपुर कोसंवी विचे, रथानो करे मेंनाथ ॥ सपदा सोक जोवा ॥ १ ॥ ॥ वाता १४ मी ॥ (वेही कदबानी) ॥ तवा वा प्रचा श्व मी ॥ (वेही कदबानी) ॥ सन्व वा प्रचा राथ मी ॥ (वेही कदबानी) ॥ समर प्राव एवा मान वरनाव हुटा चखे, हीश सिंदर्थी करीय होगेना ॥ स्रमर गुंजारचे पूर्ण । गान घणा मान वरनाव हुटा चखे, हीश सिंदर्थी करीय होगेना ॥ समर गुंजारचे पूर्ण रोवो नावा प्रचा कहायो ॥ हमर गुंजारचे पूर्ण रोवो नावा हुप्रमाण प्यानूर तिम, घन घटा सपन झावाज करतो ॥ समर गुंजारचे पूर्ण गान घणा मान वरनाव हुटा चखे, हीश सिंदर्थी करीय होगेना ॥ समर गुंजारचे पूर्ण रोवो नावा होता नावा होता नावा होता होता होता हुप्रमाण पहचा साव कह्या समरमें शांख उत्रीहायी भविक राजो ॥ हार स्पा चिंचा होश हो। । वेह प्रचा होता हो। वेह सावा होहा हो। वोर सस्पे चच्चा हो। हो। वोगा सब्दा, सुनट एडवा सव सैन्यमा हो। साव।।। वृप सत्तानिक तणो खिंच आवेहा हो। वर, मुहिप होरपाव सामत हुत्ता ॥ युद्ध करवा नावी भावीश जनही, जाप्रीए जब

F

सुगट मति जेज करतो ॥ मही करवाज विकराव निज मुजवबेद, पुनरि मैन्यथा वैर्घ घरतो ॥ सणारि ॥ खावियो जाम निज धामपर नरपति, ताम घनकेठ पिण गूर पावे ॥ पाणीम मरण एक शरण मरिंदतो, फूठवा काज सिंहा शेठ जावे ॥ स॰ ॥ १५ ॥ विंतवे ताम नृप सिवच सवि सामटा, एकजा एह सुरारो जमाई ॥ करिप संमाम मार राम को नवि जहे, एक घरमें किसी ए कमाई ॥ स॰।।१६॥ जारिये तो नजुं थाप मुख कजबु, जाज रदे नुपत्तथी भति विवासे ॥ गाव ए चौरमी जाति कडले कद्दी, विञ्चच जिनविज्ञय प्रोचे छब्दाने ॥ ॥ शाव वा चौरमी जाति कडले कद्दी, विञ्चच जिनविज्ञय प्रोचे छब्दाने ॥ साथ। ॥ शाव मुप्ते पास ॥ करजोदी मागल विंतविज्ञय प्रोचे छब्दाने ॥ स्थावी भी कोष ए, जामातायो जोर ॥ करजोदी मागल रहे। एम करे छारमा ॥ १॥ स्वामावी भ्रेष्यक्ष हुदे, जीरमा पण जजादा ॥ स्वष्ट घर्ड जुटि निर्में, ए सवि तुमचा बात ॥ ॥ ए बालक घर्ड जुटसे, पिण तुमे वदा नारिंस ॥ वावी हापे कुसेने, कुप जेवे मतिमंद ॥ ॥। ए वालक घर्ड जुटसे, पिण तुमे वदा नारिंस ॥ वावी हापे कुसेने, कुप जेवे मतिमंद ॥ ॥।। ए व्ये हिन्द जुक्दी, राखा हुसे निर्मा सरिंस ॥ ते ममे जहेने पुटिये, ने माणसनो वक्ष ॥।। इम कही नुप समजानिने, तेवा वी ते नार ॥ कहादी

षा मन उच्हात ॥१०॥ श्राकरीं ब्रावासमें, राखी स्त्री सुकुद्धीन ॥ मात तात द्वाता प्र ते, कीषा निज ब्राचीन ॥११॥ कड़ो बाइ ते धन प्रते, किम उत्रवहों। ठीक ॥ हो कार वर्षी एहनों, निश्चय हुने नड़ीक ॥११॥ ॥ जाव १५ मी ॥ (गर्जामें ठखे नृष्ट्या हाषणी ए देही)

कणा पमें तो दें प्रावक प्रतपारी सव, ही यव पार्च मेंने चन काय ग्राक्रणाशा तव तेह हैं स्विमें वर्णों, हों तुमें ग्रेप करों निन जाति ॥क्रणा जाएंगों में कुन वंशाविक द्वासी हम सपी हम में हम पार्थों में कुन वंशाविक द्वास तथा, ए तुम नेजाई साक्रात ॥क्रणाशा तव इसी कहें बन्नों जानी तुमें, खमण्यों । सिन पार्मों में सम्या । मार्काश हिता में वर तुम परसावणी, सुस ए पामुदी निरावाच ॥ क्रणाशा स्ता मपराथ । क्रणा करवा कारणे, मूक्या माताजी पाने ताम ॥क्रणा हक्षी मत्ती के कुट्टेन सिन नेसो पपो, सह कोने छप्यों तेन श्राराम ॥क्रणाश्या तात नक्षों हुने, एहनों वे नृपमणी, ए सिन धमानों परिवार ॥व्या । एस्यी प्रपायदती वात नक्षों हुने, एहनों तो डनम छ आवार ॥ पण ॥ ११॥ एत्या मान राजी पयो ते सामसी, घन्नों पिण आवे ते स्थी वार ॥ श्रणा । भणा शांविशों, छाने होशों राय जुहार ॥ मणा। १॥ भयपी माकार ॥म०॥ कहे धन देवर का बोसो नहीं, षमचा तुमे जीवन प्राणाघार ॥ षणाधा तव बन्नो घोले कहें। तुमे कोषा ठो, जाफ्ने सावी सरोवर काम ॥षण। घन्नाने नामे ठे जगमें षषा, सषताने गणको वेवर ठाम ॥षण।।।।। तव हसी नोजाइ कहें हेज शुं, तुमे खम देवर ठो निरधार ॥प्रणा पख बती तुमचा चरण पखासछै, प्रत्यप घरछु। पदम विसर ॥ पण। ६॥ घन्नो कहें परस्त्रीने सरधु नहीं, तो किम घोवरावीजे पाय ॥

एत्री सुखप्रस्न करे इक बीनती, क्दा तुम मात पितादिक सर्व ।।मण। दलवे छलवे क कि मेदिर मेदीया, मोजाइशु एवढो सो तुम गर्व ।।झण ।। १३। तव बोखे घनपति नूप तुमे सानातो, एहने हतो काइक मन षहुंकार ।। झण ।। स्वीपी फ्कार्य सदा बहु नीपजे, फुरते प्रीसि क्षिया ॥ स्मेहलं विष मञ्जाति, पश्य मेंघानको न कि ॥१॥ जानाकी—जू न के, सारा नांतमा रहेतो एवो ने मंगानक (रवेयो) ते पण क्षीनो परणाए करीने स्मेहबाला इषिने हो नघी बलोवी नाखतो ? षपितु बलोवी नाखे ने तेम सारा वदा मा जनक घएतो एवो ने पुरुष, ते पण क्षीनी प्रेरणां ही शु श्रुकत्यो न करे ? षपितु करेज ।॥१॥ तेह नणी एउतो जेव देखाहियो, ने जूणी न बरे मनमे मान ॥घण॥ साले वेबाणी तो पिण मोनही, स्वीते ने तेह तथों उपसान ॥ घण॥ १ए॥ पत ॥ मानतितो मानज करे, जीयो कत मुद्याय ॥ जरु दाादीयी वाहिनी, तो पिहरीजे गय ॥१॥ वंघव स्नेह तिह्य क्रेंग जायीए, जिह्या लगें कामिनी वात न कान ॥ श्रण ॥ नक्षा वपण मुद्दामणा, मनमाही हराने मतिही विशाल ॥भण॥ त्रीजे छन्हाति प्रेम प्र तिषिक राये हुन्न विहत्त्वज्ञ, कीयो समाम ते जी बच मान ॥ भण।।१६॥ सुषी राजा हत्तवनो मंदिर ए निरधार ॥अणारध॥ यतः॥ मतुष्टुबृबुनम् ॥ सुबेहो योप्यकत्पानि,

काशनी, जाखी जिनविज्ये पक्रमी ग्रम्म अराश शा । शेहा ।। तूप पक्षित्ये निज्ञ मिले, जिर बहुतो सन्कार ।। घमो पिषा फाल्यो हैं ए, परिद्वात जु परिवार ॥१॥ सह को जन जयरव वने, ग्रम जाम मिली पृष्ट ॥ घन प्र क्षम प्रजाशको, राल्यो वपण निष्ट ॥१॥ मात तातने मोर्थ्यो, संपि सवि गृह सार॥ क्ष सन प्रजाशको, राल्यो वपण निष्ट ॥१॥ मात तातने मोर्थ्यो, संपि सवि गृह सार॥ क्ष काताने कोमज पण, संतोप सुमकार ॥॥ सन्मान्या वाचव प्रते, वीधा सदन विशाज क्ष ॥ असन अप्तुर्प्ये, सुपरे के संजाव ॥॥। पिष्ये ते विष्ये निर्मुष्ये। जीज न रा है से ग्रम ॥ एक विश्वत तत व्यनिक, निष्युष्ये चिते आमा ॥१॥ मुज रहेता एक्षेने अप्तु से ग्रमने, बहुंची वीधा ब्रात ॥ ह्य ग्रम पिष्य बहुंची होया, एह करी व्यवियात ॥॥॥ में प्रमाने, बहुंची वीधा ब्रात ॥ हय ग्रम पिष्य बहुंची होया, एह करी व्यवियात ॥॥॥ में प्रमाने, बहुंची ॥ (मद्दार आग्यो हो राज, सेवा माठ वावडी ए वेश्ती) हवे घन्नो ॥ क्रम माझा हो राज विसराम तुमे अते, घणी हा करीए मनुहार ॥ सुणे। राजा जो। क्रम माझा हो राज विसराम तुमे अते, घणी हा करीए मनुहार ॥ सुणे।

प्राप्ता सह इश अब जी, तुम चरणे सुगुण निषान ।। सुण।। एहनी स्वामी हो राज ख प्र वर्ष पारा गरवजो, पणु में कहीए तुम निषान ।। सुण।। तुप झे एक मोणक हो राज जोने वे वर्ष्टडी जी, वर्षी मितिबिन मेंने ठे पन ।। सुण।। तेहनी पण हो राज माया ठे भति व यो जी, तिये जांतु पढ़े ठे तम ।। सुण।। साम हो हा सिलाज हो राज मोजन्द्रों। सुत यो जी, विने कुसुमपाला कि मने हा ।। सुण प्रमे हो राज चाले प्रवासाद प्रते नी, सी, ते कि वो विने हार्ष विके ।। सुणां किम दी जो हो राज करा करी हार्सों मोतही जी, पिण वात कही तुमें एहं ।। गुणां किम दी जो हो राज करा करी हार्सों प्रतिही जी, पिण हो तुम मनमें नहीं ते हे ।। गुणां किम दी जो हो राज करा करी हार्मों मावार ।। गुण। हो में सारिका हो राज दीवा सुख तेगवो जी, ममने ठे जी तुमचो मावार ।। गुण। किम हो मावा तव घनो हो राज सिले किहायी सगाजी, सिंव सुविहित जन सिपगार ।। गुण। किम हो जाणजो हो राज सिक करी इकहा जी, तुमचो केम दिसरे मेम । सुण ।। अप। हो ।। हो परणीयव हो राज सबले तव दिन जी, अति सुंदर तत्व तुसार ।। गुण। गज घोंदा हो राज सुखारन रच मला जी, विज्ञ मणु माणिकमप हार ।। गुण। किण। हो हि हो

त्ते सुन चास्या सम्पूर्व नणी नी, विपत्त वेष वेहें संग ॥गुण॥ घुन शुक्रने हो राज बहुद्ध परिवारयों नी, मन परता जात छवरंग ॥युणाद्याणाशा वीन केरे हो राज तक्ष्मेपुर भावीण नी, तिहा राय जितारी सुविदेप ॥गुण॥ साग स्वामे हो राज तत्ते मि नेप्यकी नी, भ्रार नासी गया परदेश ॥गुण॥ जाव सुखजों हो राज प्रव्य फ्षा जातों ॥ए आक्ष्मी॥१०॥ तत्त काता हो राज मुष्याचित मुप्यनेति नी, सिती सि तत्त मादे विरावार ॥गुण॥ पुष्टे करवा हो राज क्ष्मे मादी वार्ता दी, नाम मीतक्या तत्त मादे विरावार ॥गुण॥ए हिंदो से हो राज सुख्येषी परिवरी जो, कोइ पहेंसी छ्यान सुविस शिणाम ॥गुण॥ एक विदासे हो राज मुक्करणीयी तिहाजी, देखे पुष्पादिक मनोहार ॥गुण॥ होई बीणा हो राज मावे होन स्वरूपकी जो, मास राममें विविद्य मकार ॥गुण॥ त्रार सीना हो राज कुम्म स्वरूपकी जो, मास राममें विविद्य मकार ॥गुण॥ त्रार सोना हो राज खुद ए निविक्यों की, वसी साण सुख बहु जीव ॥ ।। राध॥ सर क्ष्मे हो राज खुद ए निविक्यों की, वसी साणें कुर सा सुव ॥ ।। राध॥ सर क्ष्मे हो राज खुद ए निविक्यों की, वसी साणें कुर सुव हो व

क्षिती मन्मयस्याप्रकृतः ॥ मति चतुर सुगम्यो बहुनः कामिनीना, जयति जगति

भें स्वरायी तिहा जी, सपावीन यई रही ताम ॥गुण। तस केंग्रे हो राज वर्ग तिज काग्यी, में नुप पुत्री दार डायामा।गुण।जाशा की काग्री राज बावी तिज मंदिर,तेह गीतकवा में गुणा पात तात ने हो राज नमीने वीनवे जी, सुणो तातजी निज दित का भा गुण।जाशा।१॥ स्वर नावे हो राज ममीने वीनवे जी, सुणो तातजी निज दित का भा गुण।जाशा।१॥ स्वर तातने हो राज कुरंगी वद्य करि जो, काग्रको नावे हार ॥गुण हो ॥ मा जनमे दो राज जे मिसके एहंबो, ने वर्गो मं नरतार ॥गुण।जाशा हा। तेह वाची हो राज पई साव पानके जी, जिम जवमें तेव मचार ॥गुण। बाद सोजामी हो राज मीजा गुल्हा कही। जिम जवमें तेव मचार ॥गुण।जाशा हाद सोजामी हो राज मीजा गुल्हा को भा हो साव हो साव सोजा विद्य साव सोजामी हो राज ॥ वोह्य ॥ ते वाची वाचे तुरत, सामजी सेवक पात ॥ सुमग येहा पहेरी चक्यो, साव राजताने खात ॥ शा कहे येहा हो ते, पिण एक सानम खेन ॥ ॥ विनमंग्री स्वर्य साव, वाचे नमर मजार ॥ से म पचममोपवेद ॥१॥ जावार्षः-सुखी पुरुपने सुखनो निषान, इ छ। पुरुयोने

ते कहे तो बबी, पाणु सत्तामें सार ॥ १॥ ताब कैसाब मृदग घ्वति, तेहथी न सहे व विका । जय निव पामे कोपपी, रहे मुज पास नजीक ॥ धा सुणि नृपति हरिबित घर्के, है वीका ॥ जय निव पामे कोपपी, रहे मुज पास नजीक ॥ धा। सिण नृपति हरिबित घर्के, है विका तान प्रमा । ताव पामे वीका प्रही, पाज्योते वन देश ॥(॥ वार्के वीका देगायी, है स्वरपी गीत सुग्यन ॥ सा स्वर शिषा प्रामधी, ट्रोग्यपचास ते तान ॥(॥ या आवा ॥ प्रमा शात । ताव ॥ पामे ॥ मिश्रित पट पट तेहनी, ट्राप्तीणी सुजगीता ॥ ते नोदे प्राम । ताव प्राप, निसुषी गीत प्रमा ॥ ता हो प्राप । पामे विका । वाह्मी स्वर्ण । पामे तिये ताम ॥ ए॥ यामे वीका वावताते, ते सुगी होई संग ॥ चाह्मो तहस्मीपुर ने पर्वात, कोतुक विका स्वर प्रदेश प्राप । स्वर्ण । पद्मियो प्रहा । ए हे देखी नृपति, कोतुक विका स्वर । । १। । । । वास १३ मी । (राजूल बेवी मालीए ए देवी) जीतकता गुण सानवी, मन इरखी इ.मतिह्य झार्णद के ॥ पूर्ण प्रतिक्षा माइरी, एए कीवी देए पूरण चेर के ॥ पुराय संयोगे साजन मीले ॥१॥ ए बांकणा ॥ ब्राजमां । जपर दान अपाय सेनारो मरश पामे ई मर्थ विद्युद्ध के ॥ पाने एए सुणि ज्ञन्यवा, तस भयंनो हे बिखे श्लोक सुबुद्ध के ॥पुणाए॥ स्रोक पथा ॥ मीनोग्राह्ची पान पंचे, कन्ये वाताज धीवर ॥ फलं यद्धापेत तम, स्तयो तहिंदित जिने मांगा नावार्थ –शन्तुमरे पानवा सेकान जगरमां कह्ये के हे कन्या। व्हा वान होनार मांगा। नावार्थ –शन्तुमरे पानवा सेकान जगरमां कह्ये के हे कन्या। व्हा वान होनार मांगा। नावार्थ –शन्तुमरे पानवा सेकान ग्राप मांगा। पापची नरक वाय के से सम जिने से जाप्युं के मार्गात वान मांगा पापची नरक वाय के, ते प्तन जिने से जाप्युं के मार्गात वान मांगा पापची नरक वाय के से वान होनारा मांगा मांगा पहिलों हो । । शा स्थिक नित्र हे त्यामिनी मुक सव के ॥पुणारण। न वायोम्नाम नार्थि, निवे तुने पुनर्खंग्य। कांकर्य हे द्वामिनी मुक सव के ॥पुणारण। न वायोम्नाम नार्थि, निवे तुने पुनर्खंग्य। कांकर्य हे स्तामिनी मुक सव के ॥पुणारण। न वायोम्नाम नार्थि, निवे तुने पुनर्खंग्य। कांकर्य से वायो नार्या नार्य नार्या नार्या नार्या नार्या नार्या नार्या नार्या नार्या नार्य नार्या नार्य नार्या नार्या नार्या नार्या नार्या नार्या नार्या नार्या नार्य नार्या नार्य नार्या नाय्य नार्या नार्या नार्या नार्या नार्या नार्या नार्या नार्या नाय्य नार्या नाय्य नाय्य नाय्य नाय्य नाय्य नाय्य नाय्य नाय्य नाय्य ना

॥१॥ बीने परे नेत्र कंड, माधु, जिलामून, वात, नातिका, ब्रोड मने तालबु ए आठ वर्ष एटने अकरोन ॥४॥ इन्या वाची पत्रमें, निज मननो हे ते पामी ष्रार्प के ॥ पिषा धन्नोक सुष्टीकता ॥१ण। तय घरो को 'संघ ए, झन्द झाले हे अने एह विचार के ॥ षष्ट स्थानक ने सेतो हे ह्वे मर्च नदार के ॥पुणार ३॥ यतः॥ ष्रष्टी स्थानानि वर्णाना शिरस्तया॥ जिन्नामूल च वैताय, नोसिकोछी च तालु च॥ १॥ जावार्ष जार म तहे हे अयम पयो व्यथं के ॥ पुण ॥ ११ ॥ तव वेसी ने सुखासने, संखी ए पना गेह के ॥ साज यकी कहे स्लोकना, निव पामी हे हु अर्थ स्यानक हे अर्थात् ए आठ स्थानको वहे अक्तरोना त्रमार थाय हे

बुक्नितो है सुबर अति सुक्त के ॥पुण॥ १५॥ चिन हरखे ते र ने, तर सरस्वती हे सुधी भर्घ सुजाषा के ॥ एहना पद्यना घर्षमे, निष प निषति प्रमाषा के ॥पुणाश्या। तव मंत्री पुत्री प्रते, कहे ताहरी हे घर्ड पूर्ष . विवसे मंत्री तदा गतर जाया के ॥ पुणार ६॥ विनव विषे बहु जातषी वती, मिज तातने हे करे बचन प्रमाण के ॥ शुज र वरो ए मन

, नवि पामी है मिले

॥ बादा १७ मी ॥ (वीर बखाणी राणी चेनाणा जी ए वेही)
एहने ते चक्ष्मीपुरे जी, पत्रामता नामे छवार ॥ कोडि बजीहा सीवनतणो जी, श्र क्षिणीत हे शाहुकार ॥ वेखा वेखा बुक्बिय मोटको जी ॥१॥ ए आकणी ॥ ठोटको नही विवाद । सुख विपे जेह झापद पढे जी, यहा करे वेहा परदेहा ॥ वेखांग ॥१॥ सुंदरी नामें कि तस गहिनी जी, पुत्र सुन तक्षणा चारा॥ सामे ने काम गुणधाम ठे जी, द्याम चोत्री सुक्र कार । वेखांग ॥१॥ सुंदरी नामो तस कार । वेखांग।॥ महत रूपयी ने वेदांग । वाहां में हिन प्रामत्त । युत्री चानीनव स्वरंदा ॥ वाहां वेखांग ॥॥ वाहां वेखांग ॥॥ वाहांग वाहांग वाहांग वाहांग । यहांग । यहांग ने वाहांग । वाहांग वाहांग वाहांग वाहांग । वाहांग वा ाने उण्डतमें शोजती, बाब सचरमी हे कही जिन मन रंग हे।।। पुण। १७॥ । ।। वोहा ॥ राजा माने मतिष्युं, वेखी बुद्धि प्रकार ॥ मंत्री पिण कार्याविके, पूठे वात विचार ॥१।। बुद्धित देखी बहुत, पूठे नव नव जेद ॥ धन्ने हाह उत्तर, प्रापे परी होने ।।।।। वोरे बुद्धिय चतुर, चेतन खहे सुख सार।।। तम चारे नारी बकी, सुख विससे श्रीकार ॥ ३ ॥

| तिहां पुत्र ते बार ॥ देखोण॥६॥ सनिको पुत्र सुपुत्र वो ची, माहरा जीवनप्राण ॥ मानजो | हाीख एक प्रमत्तर्थी जी, तुमे वो म्राति चतुर मुजाया ॥ देखोण।श॥ वाषव कीइ कारण ॥ वे जी, घन सदा अनस्य मृस ॥ मंगनो मेल ए जायवो जी, वनयकी सपण प्रतिकृत ॥ देखोष॥१०॥ सातखेषे वन बावको जी, ते पयो भाषणो सार॥ देश घन पाप कारया सत्ति जी, जायाजो जिन मऊार ॥ देखोष ॥११॥ पिषा एह समय घनवेतने जी, मान क्रामे सहु होक ॥ घनपकी लाज जगमें रहे जी घन विषा मायास फोक ॥ देखोण॥१ शा वनपकी वर्म सावन हुवे जी, धनपकी ब्रांन देवाय ॥ घनपकी जीवरक्ता हुवे जी, चन यक्षी मुजस सवाय ॥ देखीए ॥१३॥ निर्धन मादर नदि सोहे जी, निर्धन क्षय सम होय ॥ धन दिया कोच धीरे नहीं जी, प्रत्यय न घरे तस कीच ॥देखी० ॥१४॥ तेह जपी घन तुमे राखजो जी, पिछ मत करजो क्षेत्र ॥ क्षेत्रांची डाख सहेशो घषो जी, इह परनव हा व एक प्रमत्तरा जी, तुमें में प्रति चतुर मुजाण ॥ देखीण।।।।। वाघव कोड कारण एक जी जी, हेप मत वारजों बीर ॥ बांधव सम कोड ने नहीं जी, प्रेमनो पात्र सघीर ॥ देखो॰ ॥छ॥ कंचन कामिनी सुबन ने बी, मुसन ने मंदिर बात ॥ सुबन पुत्रावि सिव ताडी गह ॥ वंघव होए पवोताषा, तोहि पोतानी घाइ ॥१॥ घनतपो ष्यान निष घारि पामवा जी, इसन हे मातनो जात ॥ देखीण।।ए॥ यतः ॥ कद्दह होए हिबिहो, पिएा तत

सुविद्येप ॥ देखो॰ ॥१ ए॥ पतः ॥ जनुषुकुकुर्जम् ॥ प्रतापो गौरव पूजा, झीरपक्षःसुखसंपवा॥ के क्षेतावरावर्क्ते, यावज्ञीपवते कजि ॥ १ ॥ जावार्षः-अताप, महोटाइ, पूजा, जस्मी, अक्षेतावरावर्क्ते, यावज्ञिपवते कजि ॥ १ ॥ जावार्षः-अताप, महोटाइ, पूजा, जस्मी, अस्ता, अने सुवस्तित ए सर्वे ज्या सुवी कुवने विशे क्षेत्र । न जनक पप्प, त्या सुवी विधे आश्वार्का कुवने बहु इस्त वृत्वे निज नाति मा थी, स्वित्वे । स्वार्वे । स्वार्वे कि जाव ॥ स्वयुत्त विशे विशे अत्यार्वे । स्वार्वे कि जाव ॥ स्वयुत्त विशे विशे अत्यार्वे विद्युत्त के । मा विद्युत्वे जी, न मायो एणे वांचव प्रेम ॥ देखोण ॥ शा वांचव कुवने वांचव्ये । स्वज्ञो कि स्वार्वे । संब्वार्वे । स्वार्वे । संब्वार्वे । स्वार्वे । संब्वार्वे । संब्वार्वे । संब्वार्वे । संवार्वे । संब्वार्वे । संब्वार्वे । संब्वार्वे । संब्वार्वे । संब्वार्वे । संब्वार्वे वांचे । स्वार्वे । साव्वे । संब्वार्वे वांचे । स्वार्वे । संब्वार्वे । संब्वार्वे एक्ट्य । से उसे बाचो । से वांचे । से वांचे

मसायिकना हो देखी खीसे मा॰ ॥धा। सबु बंघवने हो फराबा सोहावे माए, बाठ सी नानी हा कोही कमावे मा॰॥ ते तो राजी हो पयो निज मनमें माए, ताते हींगे हो गु था मुख तनमें माण ॥५॥ ताम दे प्रियं हो घनने देखी माण, मोले बहबद हो साज बनेसी माणा कसहा घरों हो तात वरीलों माण, कृटिबप्पापी हो कींघों हालों नाणाहा। तात ते एहनो माण ॥११॥ तव कहे वन्नो है। चिन विचारी माण,

में तुप सरक्यों हो तेह बोलाया मा०, बंधव चारे हो ततक्ष्य आया माणा कहे तय घंजी है। तुमने जाणी मा०, तो दीवी हो सहक कमायी माणा। शा जेक्ते दीवे हो। तामे पोड़ो मा०, देने दोवे हो तह्यी वेहने माणातेहते दीयों हो देहयों ने दोवे माणा। शा ज्यापारीने हो मनमें जाणा मा०, यह क्षेत्रातिक हो। जीम कामणा माणा पाणा याच्या पाता हो। मनमें जाणा मा०, मृत्यापाती हो निश्चय हो। या माण ॥१॥। याचा वाचा ने होने माणा माणा। याचा वाचा ने होने माणा माणा। याचा वाचा ने होने माणा माणा। याचा माणा। याचा माणा। याचा माणा। याचा माणा। याचा ने माणा। याचा ने माणा। याचा माणा। याचा माणा। याचा माणा। याचा माणा। याचा हो। याचा हो। याचा हो। याचा हो। याचा हो। याचा हो। याचा माणा। याचा माणा। याचा हो। अपना वाचा हो। अपना वाचा। याचा हो। अपना वाचा हो। अपना वाचा हो। अपना हो। आहे। स्यामी गद्देने हो इक्षा कुछ तेदो मा०, तुम देखंता हो करीज़ निवेदो माण।(शा सुक्षी रफतर काढी हो सचलो पेख्यो माण। ब्याजने मेले हो घन सरवालो माण, षाठ कोडी नो हो घयो हवालो माण।१ ए॥ घर आषपाने हो क्षेत्रने वाडी माण, घान्यना कीठा हो की प्राप्त गेह ॥ कदित गूहार्य गाहा तसे, गुण वर्णन करे तेह ॥६॥ कदे तव मुंच (शिरोम कि जि), तू बादे परजात ॥ देधे जोजन जावता, तावृध युत विख्याता।॥ तिम प्रजि दिन कि पाचक एम ॥ शूरे कृषण नदी श्रापतो, जोजन व्यजन तेम ॥ ।।। ज प्रति में वात्ते, बेदि याचक एम ॥ शूरे कृषण नदी श्रापतो, जोजन व्यजन तेम ॥ ।।। ज जावित, बेदि पाचक एम ॥ इसे स्तापता सिंदाता राजवी, ते पिण चाढ्या कि गर्म यहा रिक्षा पिण, निह रहे तन घन मात्त ॥ रावण सरिया राजवी, ते पिण चाढ्या कि निदान ॥ ए॥ नेदराय घन मेहिने, नेक्यो समुद्र मफता ॥ मममणहोठने सागर, पद्दे मित वेठ ॥१॥ खावे नपीवे निव वेदे, सेवयानी करें वात ॥ सुंवमाही दिगरहार ते, अब कि तिहा करें पर तात ॥ १॥ एवं एक कोइ याचक, याचवा आज्यो तात ॥ मीठे वचने के वाताविने, मेतारको सेइ पात ॥ ३॥ क्षे याचक सुणो होठजी, कोजे न दान विस्र ॥ अभी पातुनयी गति अधिर ठे, तेह नयी अविस्त ॥॥॥ तव बोक्यो याचक प्रते, वेद्ये प्रनाते भी पातुनयी गति अधिर ठे, तेह नयी अविस्त ॥॥॥ तव बोक्यो याचक प्रते, वेद्ये प्रनाते भी वात ॥ त्रोजन ब्यंजन नावता, तावुतावि प्रवान ॥॥ कठी गयो तव याचक, भाउपो स्या नरकागार ॥१०॥ वीधु रहे मविचत षड़, खांखु खूटी जाय ॥ सापुरिसानुं जीवित, बानधी सफल गणाय ॥११॥ देता वेता पात्रने, धननी षाये द्वित् ॥ मूलदेव परे ततक छे, पामे सक्छ सम्प्रेत्व ॥११॥ यतः॥ झार्वुलविकीहितञ्चम् ॥ श्री नानेयजिनेष्यो घ तत्रते श्रेप श्रियामाश्रयः, श्रेयासश्र स मूल्वेवतृषतिः सा व्वनावदना ॥ धन्योसीकुत

पुष्पकोगतजव श्री शाबिजञ्जित्रथः, सर्वेय्युनमश्रामानविषिना जाताजगिद्युताः॥१॥ त्रावाणं-प्रपम तीर्षकर श्री अपन्तेवस्वामी, ते घनसापंवाद्गा जवमा (धृततुं वान सेवापो के ब्रस्पाय कर बहमीना घर हता, ते, श्रेयासकुमर, मूबदेव राजा, चंवनवासा, तथा पूर्वनवने विषे कस्त्रे वे पुष्य जेमणे एवा का घमकुमर क्रमे शासिनञ्जुमर, ते सर्वे एक जनम बात को सन्योने करी जगत्ते विषे विख्यात थया हे ॥१॥ तव वोद्ध्यो पक्ष जनम बात को सन्योने करी जगत्ते विषे विख्यात थया हे ॥१॥ तव वोद्ध्यो करते करते तक्ष, मास पयो इक जाम ॥ ताम ते याचक चित्तवे, सुविती पाई माम करते करते तक्ष, मास पयो इक्षे को ते ते विश्वानों सावन, सावे ह्यूवि करी वेह ॥१था कुम करी वट कोयानों, हवन करे तिहां खासा।जय जपता इक्बोहा ते, तास पया छणवास ॥१शा चेंक्सिंत ताम प्रगट घर कहे तं वछ वर माम ॥ हें तृत्री तुज प्यानपी, ताहरो महोटो जाप्य ॥१था तव घोच्यो ते याचक, पय प्रयामी सुविचार ॥ रूप पराव के कुच, ये विया सुवकार ॥१०। हेविशे होबी ततक्रों, विया ते दान ॥ ते वेहे क कह मुज, या वया सुबकार ॥१०॥ दत्राय दावा ततहरूष, ।वया तद्घ प्रधान ॥ त बाइ के ने याचक, बच्चो यई सावधान ॥१७॥ एढवे ते धनकामिक, ग्रामातर गयो वीक ॥ जा सुधीने घनपातानो, रूप कत्को विराजीक ॥ ए०॥ मान्यो क्यपाताणे घरे, ते याचक घरी पुषकोगतजव श्री शाविजञ्जिषः, सर्वेप्युचमषानमानविषिना जातावगिष्य्रिताः॥१॥

भी ता। श्रश्त। आयु अधिर भंजेंबी जस, कपम एहंने थाय।। घन पिया नदीय प्रवाह है, कोपपी राख्यों न जाय।।श्रा। योवन सच्या रंग है, सुपन सहश्र सपोग।। रमायी रंग भी पांग ते, तिय सम विपय संजीय।। श्र्य।। रोगे करिने पूरित, काया भञ्जीच जन्मरा।। अध्ये विसे इन्तादिक करे, तेहनो घन्य भवतार।।श्रशा पता।। हाईलविज्ञीहितद्वनम्।। आयु विसे इन्तादिक करे, तेहनो घन्य भवतार।।श्रशा पता।। हाईलविज्ञीहितद्वनम्।। आयु माः।। यच्यान्यस्मयीमयपी प्रजूतिक वस्तुचत्वास्मर्थः, विज्ञायिति विष्यितमामसुमता। अपितारंग नेप्रतिक प्रवास निर्मात हाभिता वार्यात नावाले –आवर्षे पायीना तरंगनी पेठे आतिशे नाहांदंत, त्र समित्या हाभिता।। हाईलविज्ञाना पेठे आति पंच्या, कुर्दुचीतिनो मिलाप स्वप्र तुस्य, तेमज स्वी, मिला अने माणेक तिगेरे जे का कि पंचा, कुर्दुचीतिनो मिलाप स्वप्र तुस्य, तेमज स्वी, मिला अने माणेक तिगेरे जे का कि पंचा, ते पंच आस्वर के पन जायीने प्रायीए शाभ्यत एवं वर्ष करवो जो कि इए।।। सालादिन मुख विनमें, वयन्यो सवता सवेग।। रूपणपपा। हेवे वांहवो, मा हैं। "" " हरू पान प्रथम, तुरत तुम थार चूप ॥११॥ तव कहे झुकन यया खति, की सुज मण्यम जिपि वार ॥ तियो तिहायी पाने बच्यो, विचमें मिष्टया अपणार ॥११॥ हैं। होता देता देखिने, हु वेगे मुनि पास ॥ अमृत वाणी अति जबी, साजबी पयो गुब्हा

हैं, इवा बानशे नेता । एवं। ते जायी बाजबी कोयने, मत कहेंजों नाकार ।। ज माग ते ते हने, हेजो बान छवार ।। एवं। तुमें ठो सुप्र नोहामणा, तात वचन प्रतिपाल ।। वेती घन खूटे नहीं, जायजो चिन विचास ।। श्वा कोहि धन बापणी, ठे जूमिगत जे ह ।। ते पिण कादी बीजीए, सीजीए साज बोदि ।। शां पाता।। अतुपुत्रदुव्तम् ।। मां में स्था कीयते विजे, वीगमाने कवाचन ।। कृपाराम गवादीना, वृद्धतामेव तंपद ।। ३।। जावाथे:-वै पुत्र ' बपणुं सन कि पण कीया यावे एम तुं न मान कारण के कृषा मांथी जेम केम पायो होई पाने ते, वगीजामाथी जेम मांथी जेम केम मूखे होइए वीए, तेम तेम नवां फूढों आवे वे धने गायने जेम चेम वीहर्य ठीए, तेम तेम नवां फूढों आवे के भी गायने जेम चेम वीहर्य ठीए, तेम तेम पाने ने बुद्ध बाप ठे ए तात्यपं: ।।।।। तव ते करण बजाणता, वचन करे सुप्रमाण ।। वान नी बुद्ध बाप ठे ए तात्यपं: ।।।।। तव ते करण बजाणता, वचन करे सुप्रमाण ।। वान विदे कहा विद्या प्रकार।। नाकारो जूसा विजे अप नांचा वेरे कारणा ।। काम विवे काप हो ।।। एक कोई तेहने नवि लोहे, विम जेक्सो जल सीर।।। इं ।। काप हु न कोच कार हु न कोच कापणी, होन प्रो का करतु. षऽ ए वीक्रमी, ग्रुन मीजे न सन्तु नेम ॥१३॥ ते जसी माजयी कोयने, मत छहेंजो नाकार ॥ जे माये ते ते केहे जिन मुनिसास ॥ वास

तात, राप व्वराव पट ॥ १७॥ भाज पत्ता हुने अविके, परणावी गुणुमालिका ॥ वाण, वर्ता मनमें मुदा ॥ १७ ॥ तु॰ वर्ता मनमा हुने अविके, परणावी गुणुमालिका ॥ वक्त्यों कहो नहीं कही, सासती कुद्रवानिका ॥ वक्तां कहो ने संजीव, हुआ पविका । वक्तां कहा । ११ ॥ तु॰ वर्षा प्रपेचे ने लाल, हैन्या मारिका । वाल प्रांच प्रपंचे ने लाल, वाल मारिका । वाल प्रांच प्रपंचे ने लाल काल हो। ११ ॥ तु॰ ॥ तु॰ ॥ तु॰ ॥ तु॰ ॥ वर्षा मारिका । होत मार्का मंत्री वे ना०, दिन अपिका ने तुले पर्य पर्या होत । तिम बुद्धि पात्र बनी जमाई, गुपे गौरवता नहें । श्री वे वब्दाने वीहोंने वाल हें । १९ ॥ तु॰ वाल मार्का । तिम बुद्धि पात्र बनी जमाई, गुपे गौरवता नहें ॥ मीचे वब्दाने वीहोंने इक्त, हाल ने जिन इस बने । १९ ॥ तु॰ वाल ने विकामें सव वाल, जहार मार्च मजार ॥ मिलिये श्रीण तुन्द इंचाणी पांति ॥ शा चिते निकामें सव वाल, जहार मार्च मजार ॥ मिलिये श्रीण कि स्पर्यान, रहिये निज प्राणार।।। ग्राम सक्त सन्नालिये, गज म्याविक तेम ॥ सरेव काल हो । वह वाल हो । विकामें सव वाल हो । तावीपोते कहे सुणो सजनो, यमें उपकति मुज करी॥माहरी ए सपत वीला, प्रह्मी में ब्रह्मरी ॥ ते जणी एकेने हिंचे पुत्री, राये पिण आख्यों छाठे ॥ नदि हीजीये तो यस क सिन, राप वेवरावे पठे ॥ रेटा॥ चाल-इम लिती थे साण, धत्राने तदा ॥ दीथी कन्या बे

॥१॥ नावार्धः-जिनम्जन, विवेक, सत्य, पवित्राइपक्षु, सुपात्रने

कान आपतुं मने म



॥ बेहा ॥ श्री संखेश्वर समरते, लिंहचे सखमी त्रीग ॥ कामित सिष पाव। ॥ बाख १ सी ॥ (वेद्गी रसियानी) चंक्प्रयोतन मासव मिश्यती, क्रब्सि समुद्धे रे पूर्ण ॥ विराजे ॥ खागे त्यागे त्रोगे

मगतो, देसि बुजो रे कर्ण ॥ दिवाले॥ झुपाजो साजमे, कौतुकनी कथा ॥ १॥ ए आक षी॥ साजवता सुख बाय ॥ सवाई॥ समकित दिया निमेव ववतो हुने, ड्रारित तिमिर मिट जाय ॥ जजाई॥ मुशाश। चार रतन ते होने स्वापीन डे, पुष्यवेचे परधान ॥ सवाई॥ यो शिवादेवी चेटक पुष्रिका, शियजती परम नियाना। सबाइ॥ सुशाश। लोब लेया नामे तस इक पेप्य डे, गमन करे शत कोषा। मही तेश। मामिनिक स्थ पश्चिये नवि बचे, चावे ते नित्रेम। सहा तेशासुश। धा बनलागित। नामा गज डापतो, ए घारे तस रक्न ॥ सन्त्राण। राष्य

मिराण ए बारे जाणीने, करे तस सुपरें रे यक्ष गते पूराणासुणाएगा एक विन बोब्र जाये हैं कि तम्प्री, प्रकारण निक्ते करे तस सुपरें रे यक्ष गते प्राणासुणाएगा एक विन बोब्र जाये हैं कार्य सिराने प्रक्ष निमाने हम कि कार मिराने मि

हुते रे तेह । सिवेडी। सुण। र शा जिम कह्या तिम 'करते सिह तिम ययो, हरख्यों चेर्प्प यो । होता ।। हवारे ।। कह तु मोचन विषा 'वर जे रुचे, माग तू मनमें उयोत ।। हवारे ।। सुण श्री ।। ए॥। धन्तप कहे वर ए उप्तरासे, राखी संप्रति काला ।। राजेसरा। डाला ए पहिली चो या उच्छासनी, कहा जिनतिक्वे समादा । वालेसरा। हुण। र था। ।। वालेस ।। वह ते चंक्ययोतनी, कुमरी रूप नियान ।। वासववना नामधी, मृप पति तछो बहु मान ।। शा कलाज्यास की वो घषो, ध्य्यापकने पास ।। मीत मृत्य हो । वालेस, अवस्ता को तुम र को ।। ।। वालेस के स्त्री हो ।। वालेस के स्त्री को तुम विष्या काम ।।।।। ववस्यन कुमर करा नियो, राय सतानिक मर कहे रायमे, को तुम विष्या काम ।।।।। ववस्यन कुमर करा नियो, राय सतानिक तुम । मीत मृत्य वालिकमें, कोविद जिम नन्त्र यह ।।।। पोपवतीना 'घोषपी, वहा कि ।। वालेस चो व्हो को इस् को, तो सही पाठक लाग ।।।।। सानली चम्प्रयोत से तब , दोहबंधेने हेव ।। लेख लिखीने पाठचे, कोविदी तत्तेव ।। इ। उद्यनने कावल है (विषो, वांची प्रद्यो प्रदेश ।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।। वांची प्रद्यो नदत ॥ पुत्रीने पानण प्राधी, तेहावे मुज तंत ॥॥॥ सचिव कहे स्वा पा वन नाग ॥ ते खावे जो इदां कपे, तो सह। प ते तव, दोव्हजंपने हैव ॥ तेख सिसीने पाठचे, कोवंति ६ दियो, वांची प्रद्यो उदत ॥ पुत्रीने पाठच प्रया, ते १ तत्मा मई गोदक उपर पाणी तेष्हुं एटने वांदी वा

वनमी मई मीदक उपर पाणी रेवधु एटले वेली बारमी समुष्टिम नाम मगट बयो थ मुख्या

॥ बास ए जी ॥ (देशी मोतीबानी) छद्यन कहे त दूतने वासी, चन्न्र्योतनी वात में जासी ॥ सानदो गुषा रागी

डक्पन कहें त बूतने वायी, चम्प्रदीतनी वात में जायी।। सन्जडो गुय रागी। हमारा, तोहना सुखतंगी।। ए झांकयी।। वासववता पुत्री तुमारा, जायन मूकजो झ म यर सारी।सांगा।शानीज्ञाले ज्याचा सह झांत्रे पिया पाठक पर घर नवि जांवे।।सांगा। चांक्यो ते हूत ततकाल, पदोरयो टुरत डक्कपिनी विचाय।।सांगा।था। चंम्प्रयोतन भागान प्रासे, उक्पन कुमरती बात फ्कासे।।सांगः॥ निमुणी खोज्यो मालव राय, भनयकुमरने

कुं डपाय ॥सा०॥श। खर्यन किंग्रि सि इहा झाँने, अन्यकुमार छपाय बतावे ॥साण। बस्ततयो इक हाथो कीने, पदाहिक तस बादी लीने ॥पा॰ ॥ धा। भार नतर तस पुरुष रखावो, बात सकन तेहने तमनायो ॥सा०॥ यनमाछ गन रपे सिरोहे, तन ते गन ब्रि या चित्त घरहा ॥सान्॥थ॥ वीष्य वजाहती श्रावे निवाने, षाणाजी प्रदीने तेष निवारे ॥

मूज ॥ पिण एतो ताहरे पिता, कपट देवाको गूज ॥ए॥
॥ दान १ जी ॥ (पीठोद्यारी पाद, कांवा वोह राग्वदा मारा नाल ए देवी)
॥ दान १ जी ॥ (पीठोद्यारी पाद, कांवा वोह राग्वदा मारा नाल देवी ।

वासववना वस्त करे तव वेगदो मारा चास, बीठो रूप मनूप युमरनो मति पांचा

वासववना वस्त कर मीति न्यन्यी निरस्ततां मार, जाणीए वंपित स्वय सवा

क्षाणें हतो मारा ॥ मन्योत्ते पद्र मीति न्यन्यी निरस्ततां मार, जाणीए वंपित स्वय साव

क्षाणें हतो मारा ॥ यत्त महा ॥ शाष्ट्रायणे मुख मन्योत्य रखे मतर पढे मार, माह रि मु

हा पीतादी, पहिली नयन करंत ॥ शाष्ट्रायण्यो मुख मोरा सेव सुमरने मार, माह रि मु

हा पीतादा रखे नही मवरने मारा ॥ शा वासवस्ता नेव करा मारा, ने वे सुख

हम पर काल गमावे हाज मती मारा॥ १ ॥ एहवे मनस्वितिरी तोदी मालान मेव करी मार,

सिप्ता वित भारता भुती नरने तुरी मारा॥ सम्प्रतीतम वात वेमे जब सान्यदी

सिम छोदी निज्ञ छाम जई वनमें पुक्री मारा॥ महरा गण्यनो सार अविज सम्पत्ती

मारा, तुन्नो झननित्री मात्र महे कहो कुष वली मारा॥ महरा गण्यनो सार जीवन सम

ते पाखन बरी माण, कहो कोड़ आबल अपाय ज्यु वहा बावे करी माण ॥ धन्त्रय कहे विकास नायदी माण । बात्रय माण है। वेष्ठराज बीपाता नायदी माण, वास्तवन्ता सग बरी कुन सावधी माण ।।।।।। प्रच्य यापाहे आपाहे नाम हे जागपरे ग्रही माण, नेशी न्य आवेहा कुमरने तब वही माण। "प्रच्यं तिए केम बक्यां वेपवीपता माण, तटनी तीरे ताम गयां ते जीपता माण।।।।। तह धना विहोप अहोप कता करी माण, नोगी पिया स्वर विद्यानिक बावी सिसे माण।।।।। तह धना हुए। हुर्ग सुरंग सुरंग सोवाने माण, नोगी पिया स्वर विद्यानिक बावी सिसे माण।।।।। तह धना हुर्ग हुर्ग सुरंग सोवाने माण, नेगवतीने के सिरांचे त्यू सिरे माण।।।।। तह धना माण।। वास्यो मीत सुरंग बजाहतो वीपाने माण, नेगवतीने के सिरांचे त्यू सिरे माण।।।।। वास्यो मीत सुरंग बजाहतो वीपाने माण, केम बावो गुण राग बच्यो तब जूपनो मा।।।। मिस्या विषा वर माग माववपति कहे हसी माण, वेदी बुद्ध धन्त प्यां हे आवि खंदी।।। बार्या माण।।। बार्या किसे प्रमार ए वर बीजो बयो माण, वहवन पिया प्रसाव सही सी हे हम

ते मागा। ११ विष्ठे षवतीमाही अतल प्रय कहे वही मा०, श्रीतिने अपिय भागि को वि तीयन्यो मागा। पूउपी भन्यकुमार उपाय कहे वही मा०, अपिनो अपिय भागि कहाँ है ते सही मागा। शुरी भन्यकुमार उपाय कहे वही मा०, अपियो वचन प्रमाय कि सही भागा। शा हावी कामिय आगि होंदे वहां मा०, बुद्ध वहां था। या दि काम अन्ययुमेर वह्नो माग। शा मुक्या विया ने जायी प्रत्नार ते तव घन्नो मा०, मुक्यो अन्ययुक्तार ताय अन्ययुमेर वह्नो माग। शा ने लीवी तुम नेत्र गंदी अपनी मा०, पृक्यो अन्ययुक्तार तिवारे उत्तर वहां माग। शा शा मानीम माव माव आवी मा०, माही खांदे हिंदि सहुद्यो (किरी माग। शा शा अनीम नयन विकार खो नहीं कहां माण, वेहा पुत्री ताम हिंदा नाम लेहने माग। सतीयोमें शिरवार वीरे ने मुखे छहे । मा०, अन पुत्री ताम हिंदा नाम लेहने माग। सतीयोमें शिरवार वीरे ने मुखे छहे । साण आने माण, तव कहे ए वह्नियिन विशे जह नागहे माग। हीणे बहिततकात उपञ्च सिव गयो माण, तव कहे ए वह्नियिन होग का नागहे माग। हीणे बहिततकात उपञ्च सिव गयो माण, तव कहे ए वह्नियन प्रतावची सहुने सुख बयो माण। शिशा माग माग वर मुज मू

त्री क्या विष्ण तू हवे माण, तव ते अनयफुमार विचार ते संज्ये माण। शीजी बाव रसाव है। ए चोया उच्हासनी माण, वही जिनविज्ये जोय कच्छाजुम रासनी माण ॥१६॥ ॥ विष्ण ॥ विष्ण ॥ कहे पन्य चुढि केववी, मेलवी विच विचास ॥ चारे करने सार ए. । विद्या चुपा ॥ १ वर्ष सदकावो चोकमें, श्रीजनीह स्थ ज्ञाज ॥ भनव गजे हे चुढि होया उच्छो आवा ॥ १ वर्ष विचार प्रका ॥ वर्ष माण्य सदकावो चोकमें, श्रीजनीह स्थ ज्ञाज ॥ भनव गजे । इंड चुढि होया उच्छो आवा ॥ १ वर्ष वर्ष स्था पर सार विचार प्रति । अन्य कहे हुप ज्ञाण । वर्ष वीजीए, आविजाय एक ॥ ॥ १ वर्ष वाल स्था त्या ॥ ॥ त्या वाल सार वाल माण कहे हुप ज्ञाण । यमें उगाह ते करी, पक्को मुज वरी चूप ॥ (॥ जिनशासन मेनो कत्यो, तोपीन हुप । यमें उगाह ते कर वार ॥ पिया वर्षी चे वर्ष पर ॥ (॥ जिनशासन मेनो कत्यो, तोपीन हुप । ज्ञाच । अग्री चेर पर ॥ १ वर्ष विचार ॥ उचा वाषी मुसके तुज । वर्ष हे सार ॥ उप वर्ष सार ॥ इंड स्वाय सार ॥ उप वर्ष सार ॥ इंड सम्ययहुमर परिवार परवृत्त, मगषवृत्रमं आवे ॥ पुत्रायमन सुलीन झेविक, हर हि

ने बेसास्तो ॥ परारा, परारा करा हु कुछ एक मांही विसास्तो ॥पण।।। मार्न वेसास्तो ॥ पता विननो विरह तथा हु कुछ एक मांही विसास्तो ॥पण।।।। मार्न मरदा अन्तरक्ष्मरने, नगर प्रवेश करावे ॥ अशिक राजा भाति मन हरखे, नग तिम सुख पावे ॥अन्यकुमरे नगर प्रवेश में वाविश वाविश वेस्तरक विस्ते ॥ अन्यकुमर वर्णारा वेदे भाषण।।।।। विन केस्तरक विस्ते गानी, पूरव वात तिना । अन्यकुमर वर्णारा वेदे भार पाता विश्व अति तिना ।। अग्रा अविश्व वर्णारा वेदे भाषण।।।।। वर्णा अविश्व वर्णाता ।। विमान नाम वर्णारारो धइनो, भाष्यो आदि अज्ञमालो ॥ अग्रा ॥ विमान नाम वर्णारारो धइनो, भाष्यो आदि अज्ञमालो ॥ अग्रा ॥ अग्रा ।। वर्णा स्था विद्य पत्ति ।। वर्णा ।। वर्णा स्था वर्णा ।। पर्य पत्ति ।। वर्णा मार्विश भाषा ।। वर्णा स्था वर्णा ।। वर्णा स्था वर्णा ।। वर्णा स्था वर्णा ।। वर्णा वर्णा ।। वर्णा वर्णा मार्वा गंज ने । शासार्था नगरे ।। खे साहमें जावे।ष्यचरिज देखो देखो, देखो रे झचरिज देखो।। एहने पुष्पतपो नहीं ले खो, प्रचरिज देखो रे।। तहीं बक् जगमें झुविकृषों झण। तुमे झान नयनपी पेखो ॥षण। र॥ ए झाक्ष्यो।। षज्ञपकुमर निज तात लहींने, दुर्पेख्रितित तब बावे।। प्रष मी प्रेमे तात चरषाने, विनय बचन तंत्रतावे।।षण।श। ताते हृदय संगाये जीही, उझे

की का ॥ क्यावारी ने दे कियांचा, बाम रोक तस बीचा ॥ क्या । रा विक्वें दिव एक में नर नियजाव्यो, पाठ जायांची गमें ॥ ते कहे हूं माववानो महिपति, चंम्प्रयोतान नामें ॥ क्या । रा ॥ ए सचवा के अमना नेवक, राजी तर्व कामारी, ॥ ह्या ग्य राप पाप कर्मा । अस्त । अस्त । स्वा । स्वा । रा ॥ ए सचवा के अमना नेवक, राजी तव के वार्यो मारे तेहने, रे मूरख शू बो है वो ॥ ते राजा माववानो महिपति, तू गहिजो तृप तोचे ॥ आशा । अम प्रतिविन करतो है वो ॥ ते मारे, सचवा माववाने महिपति, तू गहिजो तृपति ॥ अशा । श्रा अतिविन करतो है वे । ते मारे, सचवे माववा ने जायो।। एक विवस संच्या समये तव, नेव करण विवस आ । करावे, चंम्प्रयोतन चुन्ये।॥ कर्मा नेवा ता करावी, वाक्ष क्या आशा ।। रहा। तव ते बादे, चम्प्रयोतन चुन्ये।॥ इत्ती में वा तकरावी, वाक्ष क्या वाचावी, चम्प्रयोतन हरस्यो।।।।। हति जह आवे।। विवस मारे नेवा, अस्पर्योतन हरस्यो।।।।। हति जह याव वाणावी, चम्परयोतन हरस्यो।।।।। सम्पर्य जोइने मरे पेवो, अस्पर्योत्त कहे हर्ष राजा, मुजने विवस पावे वाह वा वाच्या, मुजने वा ।।।। वा चित्री वाह्या, मुजने वा ।।।।

पिया पाठी कविय न देवे रे ॥ मुणाए॥ इम करते तेष्ठ घाठा, बड़देश बकी तव नाठा रे ।। मुणा विषये मानवर्मे भाव, कविक्रमें करे बढ़दावे रे ॥ मुणाशा। वीज सात भवद इत हैं ते हैं, भाव मानवर्में भाव के विषये ने महिणाशा। वीज सात के विषये मानवर्में मानवर्में से ।। मुणाशा। वीज साथ के विषये मानवर्में से ।। मुणाशा। तब ते पोठी वाष, ते ।। मुणाशा। तब ते पोठी वाष, ते ।। मुणाशा। तब ते पोठी वाष, ते ।। मुणाशा। तब ते पोठी वाष, तिथा से ।। मुणाशा। तब ते पोठी वाष, तिथा से ।। मुणाशा। पाठ ।। पाठ जियो से ।। मुणाशा। पाठ ।। पाठ जियो से ।। मुणाशा। पाठी वे ।। मुणाशा। मुणा से वे ।। मुणाशा। पाठी वे ।। मुणाशा। मुणाशा

२ ज्डीवर सोक्षोंने सम्प्रहे

तत्त्व ते वचन सुपीते हो धनतव्यक्ति तिर्दा, मालोचे मनमाहि ॥ भाषण्ये कि वचन त्राचीते हो प्रमान हो। स्पीते हो प्रमान हो। स्पीति । स्पान स्पान स्पीति । स्पान स्पान स्पीति । स्पान स्पा

तकत कुटुननो, षमेतो 'डुमक सक्ष्ण ॥तवण ॥ पण पणुं घणुं झे कदिये हो निरविधे षमने षाजवो, जाली वावव प्रेम॥ ए यन जे तुमे दीषो हो निव दीषो जाए अम ष की, जिम कायरपी नेम ॥तवण॥६॥ एहना जे पंषिष्ठाता हो मद माता ते ताहरे वहो श्रम यहा कहा किम बाप ॥ जिम निज हापे परणी हो वर तहणी बांदी कतने, । नहाना १ जाबारी

॥ काल 3 मी ॥ (गाति जिणेमर केमर क्रसित जंगषवी रे ए देव्हों ।

क्रक् मुनियर मुखो होठ पूरंत जय वारता रे प्रवण, पुरपञ्जाण द्वारण जिहा वा

क्रक् मुनियर मुखो होठ पूरंत जय वारता रे प्रवण, पुरपञ्जाण द्वारण जिहा वा

दीहरता रे जिणा तियों नरने एक नारि काम्यायन ड्वंसी रे काण, करे पर घरनो काम

दीहरता रे जिणा तियों नराणा।। दननामें तर पुत्र मुद्रप्र सखाणीयों रे सुण, ताति विमा

ने जात डाली महा जाणीयों रे डुण। आ से मायना वंड नेला करी चोकमा रे चेण। पेट

जे जात डाली महा जाणीयों रे डुण। आ से तिया विमा का सुण माता पायव अस्त पर विहोप प्रशासकी वेस्हीयों रे मण,

पर पर विस्ते खाद हुनाशिक पात्रीयों रे पुण। क्रावी तत्तक्षण मेह माता पायव अस्त

रे माण, दे मुज परियन सीर इंग्रे मुत्रवी केम नीपने रे कणा हठ निव करे माल रह तव

संपत्ते रे नण, में ते सिन्दे खाद कहरे केम नीपने रे हणाशा सुण निव केम मान उद्देश्य ।

मानडी रेरण, देव मवस्या एम दीशे। किम भावही रे दीणाशा पर। । मनुदुव्हाम ॥

बातविहो र हक्कन 9 मीरों ३, वैदों ध विमाम ए पुष्तिकार ॥ मुचा ए नुगो ए दिनियों ए जवी, सती सुजडा सार ॥ से करमे माटी वहां, डाख सक्का विवय प्रकार ॥ए॥ पर्ष संबंह तयों इहां, ज्ञानतेये मावार ॥ विवरोने कहां देगदी, संचल सबंघ विचार ॥है॥

ा ढाख o मी ॥ (नमो नमो मनक महामुनि ए देशी)
मितपित कदे तुमे साजलो, पूरव जब विरततो रे ॥ माम सुमाम नामे जखो, फ्र कि सम्प्रद्भियों कंतो रे ॥ मुनिपतिशाशा ए खाकपी ॥ तिहा कियारा जिएव रहे, धन ही णा भित भीता रे ॥ मैतने मासन हे तेहना, मित्राइ गुणे ते मीता रे ॥मु० ॥ ए ॥ एक विन काट तेना मते, प्रश्निने सबत साचे रे॥ पोहत्या वनमें पडवडा, सेइ कुठार ते हापे | ब्राणा नोषे ठब्दासे वाच कही ए सातमी रेकण, जिनविजये मन रग ओता मनमें | गमी रे ओणा १५॥ ॥ वोहा ॥ हवे घनवनाविक तथो, पूरव नव षाविकार ॥ सवगुरु कहे शुन्न पिन मासोगर इसे नामे रे ॥सुणाशा दीता दूरपी आवता, सन्सुख अझने वदे रे ॥ संबद्ध स पखे द्वान मने, भापे मन भाषांदे रे ॥सुण ॥था। सुलज्जोषी श्रावक कुंबे, कपजवो ति हा बाष्यों रे ॥ काष्ठ मदी संस्या समे, भाज्या भसन न खाष्यों रे ॥सुणाह्॥ एटझे रोपे | बी, साजव रे धनसार ॥ १ ॥ ---- न मे ॥

असे पाराशावक ताथ लक्ष, भुानवर कर ।वहारा र ॥सृष्णारण। चास्त्रि पासी हुन मने, त्रियये

॥ वाज ए मी ॥ (पारा महोदाा क्रपर मेह, फरुखे बीजवी हो जाज ए वेही) तव श्रीपक नर राप वोद्यावे तेहने हो जाल बोण, किहाँपी ब्राज्या कृठ वे सुख तुम देहने हो जाज है।। तब बोड्या ते हाह अमे नेपासपी हो जाज अण, भाट्या इहा व्यापार करण चूपालयी हो आस का।। १ ॥ ताव्या केबत सील श्रमृष्ट्य सैचाजता हो साल पर, पाठ्या तुम परसाद मगवमें माजता हो लात मं। देखी ह्वामी वस्तु सु पस्तु मुनावपी हो आव सुर, भ्रगमिमें नाखे मेख तजे एक् बावधी हो साल तर ।। १ ।। मूप सवासत वाम एकेन वस्ता हो बाव ए०, नूप कहे अमे भ्रास्त अमूलिक शंभा ना हो लास भर। गंन भ्रम्बिक काज भ्रमे पन वाकर हो जात भर, वाख गंमे पन वेप फ्वजने शुं करें हो बास करें।। १।। तव ते मूकी निसास किनीने प्रत्योत्मे एम भ्राप्य सिव पतस्था हो साल भर्ग। १।। तव ते मूकी निसास किनीने प्रत्योत्मे एम भ्राप्य सिव पतस्था हो साल भर्ग। १।। तव ते मूकी निसास किनीने प्रत्योत्मे एम भ्राप्य सिव पतस्था हो साल भर्ग। १।। तक के न्या सुर्या मार्गने शास होते पहसी नता हो लाख दोश। जवाने ते वात गवाके सामली हो खाल करे।। भर्म देखिने हो लाख पो०, तुमे पिया विम्फल प्रपास करावशो पेखिने हो खाल करे।। भद्य हो खाल अप हो माहरे वह भमी से सुर्य शोसती हो साल सर, आधु केहने वस्त राह्ये केहने बती हो साल टरा। आवो जो वत्री हो से सप्तार हो खाल सर, तान

से सिक्षत तस मुख्य विचारी जाखीए हो आदा विशाशा तव बोह्या कहे मात कवब अवि हो जानवी हो जात कंग, जिम जाशी तिम कार्य करो एव माहपी हो जात कंग, जिम जाशी तिम कार्य करो एव माहपी हो जात कंग, विमा जाशी तिम कार्य करो एव माहपी हो जात कंग। ते विज्ञान के लोजना ते लोग विचार के ते ते ते कारा के लाश करा। ते विचार के लाश के लाश करा जार के ते विचार के लाश के लाश

सिन वात प्रकारी, तव कई जड़ा एम ॥ कंबतनो व्यावार करेवा, भ्रमने तो हे नेम रे ॥ज्ञाका। रक्षकवनमें भ्रमितिक होटे, भ्रमने नृष्यो भाम ॥ मृपने नाम छवारी नाखु, ए वनने ए बाम रे ॥ज्ञा ॥ ।। पिया एक माहरी बीनति नृषमे, वीनवजो करजोडी ॥ हैं। मानव, सुखीया वे सह कोई रे ॥ जिनका, पुण्यतथा पन्न पेखी ॥ पुष्ये विवेत सफल हैं। फले सिंव, इस्प विमासी वेखो रे ॥ नणाशा ए आकणी ॥ सामतने मूक्यो जवा पर, द्धारा ।। सवाचाख धन तेहनी पूर्वे होई परमें थापो रे ॥ जाशा सामित

॥ दोदा ॥ भागम जाणी नृपत्तणो, गौन्तव होठनो जीव ॥ देव पुत्र नेहें करी, र चना को ब्रतीय ॥ १॥ हा।बिन्नदना पर पकी, नृप मंदिर वर्ने खास ॥ मिल माणिक

मुख कुमारे ॥ तिज्ञ निज्ञ परिवार करी, परिवृत एक शत नवर रे ॥शेणाशा पंच शत सिव सीविव सोवामणा रे, शेन सामंत अनेक ॥ गणक विक्रिक्क सामद्रा, पंफित वसी पर सा देक रे ॥शेणाशा चतुरंगी सेना सजी रे, मुपरे करीने सार ॥ सेननक गपवर जप रे, नुप शेणिक घयो श्रुतंगी सेना सजी रे, मुपरे करीने सार ॥ सेननक गपवर जप रे, नुप शेणिक घयो श्रुतंवार रे ॥शेणाशा अन्तपकुमर आगे चले रे, कवमी पुरुप प्रवा न ॥ सक्क करापे पागलो, चारे बुक्तिणो नियान रे ॥शेणा॥। एढवे पामचर घकी रे, आये शानि शागर ॥ मैंक्य तोरख वे खिने, अवरिज दाहे सह परिवार रे ॥शेणा इ॥ | टिक रत सुविवित्र ॥ क्षीरसमुड परे सुनग, विच विष कमल पवित्र ॥धा। प्रावासे ष्राप्ता | श्रविक, सूर्यपरे सुप्रकास ॥ पैचवर्ष मिष तेजपी, सुंदर होगेले खास ॥धा। ॥ दाल ११ मी ॥ (संकानो राजा ए वेहा) हवे श्रीपक राजा तिहाँ रे, जेरी मुद्दर्शना नाम ॥ वजहावे मन रंगशु, जस ना म यकी बारामरे ॥श्रीपक महाराजा ॥ मित रूपहो रे, करे प्रपिक विवाजा ॥ न्याय परमी रे, चूपनि अति घरमी ॥१॥ ए भाकता ॥ भववेला तव प्राविवारे, कोपिक प्र मंत्रप रुच्या, चिंहुं दिशि तोरथा तास ॥श॥ मिषमय माता जाविया, मुक्ताफतना की ष ॥ षमस्त्रुवन षवनी तते, वेव हाकिपी सिरू ॥ १ ॥ घरणी तता बाष्यो थवत, स्फ

बार रे [ब्रेण।। रा। पूर्व किविय न साजक्यों में, कार्यतायों सवदोत्रा ।। ते निसुषी चित मित्री के कहा है। में निस्तायों कि मित्री होता है। में निर्माय कि मित्री होता है। में मार्ग कि मार्ग विद्याय होता होने कहें शरि उमेद रे (ब्रेण)। रेण।। रेण तेता ।। वोष ।। अर्था में मार्ग मार्ग के व्यवसायां विचार ।। अर्था के कि सामटो, जा से में मूल्य मफार ।। रे।। जा कहें रे पुत्र मुख, नांद किरियायों एह।। निसुवन मांदे मार्ग मुक्य ठे, रूप कता गुण गेंद ।। शा तव अटकी कहें मातनी, एवंदो शेर आवीच ।। मुक्य ठे, रूप कता गुण गेंद ।।शा तव अटकी कहें मातनी, एवंदो शेर आवीच ।। है। मार्ग प्राच वेपते, राखों घानक टोन ।।शा नदा कहें रे सूस मा, वचन विचारी बेख ।। है। कामार्ग प्राच हें प्राच मार्ग प्राच हों मार्ग से से मार्ग से कि मार्ग के से सो मार्ग से कि मार्ग हों। पर ॥ धापण सरिक्षा एक्ने, ज्यापारी सब सार ॥ ॥ ॥ भाषण ऊपर एक्ष्मे, दिन छे तिक्षं दार्गे तर्वे ॥ भाषाने भाषीन छे, ठेने ते त्रधी गर्व ॥क्षा यतः ॥ सासार पासार ड १णागनावार्धा-श्वासोभ्वास, पासा, श्रप्ति, पाषी, वर्ग, राजा, सोनी, माकड, बहुड मने विदादी, ए सर्वे भाषणा नक्षेष ॥शा आवी प्रमुसे एइने, मतपी मूकी माना। डुर्न मग्ति । बात्र । जन्त गकुर मोनार ॥ एता न हुए भाष्या, मकड बहुम्रए

वचण सुणी विप सरिक्षा मातनां, चिते झासिकुमार ॥ मुज ऊपर बज्जि स्वामी पणे ब्रेठे, विग विग ए मवतार ॥ झाजिकुमर मालोचे चिनमें ॥१॥ ए माकणी॥ में नवि कीयो रे वर्म ॥ धर्म विना परवंश बचन हुते, करे तव माठा रे कर्म ।शाण्॥ जे परवंश ते रे सुख क्षोनोगवे, परवंश इःखनो रे मूल ॥ स्ववंशपणाना रे सुख जोते घ मात्मवर्ग सुर्जे ॥ एतडफ समासेन, तक्कपं सुख डेन्स्यो ॥ १ ॥ जावापं:-परवर्गपणे वर्षु डाल ठे धने पोताने वर्ग पणे वर्षु सुख डेन्स्यो ने कर्ब्य, ते सुख ड खतु तक्कप ठे॥।। एटखा दिन हमें स्वामी सेवक तथी, में नांव काणी रेनात ॥ आज सुणाज्यो रे माताये ईख, एद कट्टफ अवरात ॥ग्राण। ध ॥ तो इने माता रे वयण नवोपनुं, नवमो यसुग्य रे नाय ॥ तेद पठी करगुं सिंव जोपने, सावगुं अविचत साथ ।। हागण।॥ इम सिभय करी श्रप्यापी तता, पाठ वर्षे प्रपृष्ठि ॥ सीतमी प्रूमियी कतरवो पक्सो, ते खगे। ॥ सिंदिश मतीड ।क्षाण।॥ चनक्से ट्रोलक्से बाकी नर्स्ते निस्त मक्सी स्वास्त ॥ ३ के, परवंग सुख भक तूब्य ॥क्राणाशा यत ॥ अनुष्टुत्र्धनम् ॥ सर्वं परवर्षे डाखं, सर्व ॥ बाल ११ मी॥ (सरसति माता रे, दियो मति निरमखो ए देशी) स कन्ना राजवी, एहची विनय निवान ॥॥॥

से शिणिक रूप कहा नीवो, ममर सहस्र अनुकार । बागाणा । वर्ष वर्रा तकां मार्पणे, के नेसास्त्रो ततकात ।। मातपपी जिम मात्रव परवंते, तिम मधेद विहात ।। हागाणा ।। ।। के देखी मातारे द्वुण मने जयो, ए पीतांत्रियों रे देव ।। पर कर फरस न ए साहसी शके हो हो जायों एड देव ।। बागाणा हो। वह ने हामको रे वाता। के जायों एड देव ।। पर कर फरस न ए साहसी शके हो हो जायों एड देव ।। सांचा करा, एड के नुमचे रे वाता। हो। वह ने सांचा ।। मानुर वचनपी रे बोता। के वी मुदा, दीवी बीस्त तियार ।। विषय मार्ग कर वचनपी रे बोता। के वी मुदा, दीवी बीस्त तियार ।। विषय के नित्त पर ।। पंच विषय मुत्रव वचनपी रे बोता। ।। शाणा। ११।। वेले मम्प्रार ।। पंच विषय मुत्रव विषय मुत्रव विषय मुद्रव विषय मुत्रव विषय विषय मुत्रव विषय मुत्रव विषय विषय मुत्रव मुत्रव मुत्रव विषय मुत्रव ।। विषय मुत्रव मुत

। एहवे नदा न दव॥ मध्ये दुप मुद्दी मरी तत्र ॥ वनसार ॥ स्नान प्रकृष ते तत्र नेश लावे चंग ॥२॥ महीनेषा मदेन क , स्तानतचे श्रागार ॥ १ ॥ जत्त्रज्ञीदा नदी, ञेषिक छहे ते दित्र ॥धा सुरू वेख ॥ तुस्त ≅ बाल -नज्ञ मुड़ी प्रवस्यी म्रानरण नष्ठिय ॥ तणी, महबी धगुर

पास भर वापसीकु बीजीए ॥ झावा केवा केरी ज्ञाब पात्रोकी तीहरी घाव वादकु व कार केप पायसाज पीजीए, कूसेंती वार्ति मेरिव घमकेशु धृत जीति काककी सरापर्यो अस्तार प्रति कीजीए ॥ अस्य मंगाजव दीया, वासित सुर्यंज सुवास है ॥साण। तीवू मेरिव मुक्त मुक्त महा तास है ॥साण। वार्या ग्रीस है महा नाम है ॥साण। वार्या मिरिव मुक्त महा नाम है ॥ साणा वार्य है ।साण। वार्या मिरिव मुक्त मिरिव मुक्त । साण। वार्या मिरिव मुक्त । साण। वार्या मिरिव मुक्त । साण। वार्या मिरिव मिरिव मिरिव मुक्त । साण। वार्या मिरिव मिरिव । साण है ।साण। वार्या मिरिव मिरिव मेरिव मिरिव । साण कार हो । साण कार हो साम मिरिव मेरिव मिरिव मेरिव मिरिव । साण कार हो साम मिरिव मेरिव मिरिव मेरिव मिरिव मेरिव मिरिव मेरिव मिरिव मिर

ं मुखो बाईजी षम्बतत अनोपम अमतधी साम्न ची, करु बीनति गोव बिराप बली तबी तुम नषी साम्न ची।। तुम नवन सुगुष निषान सोन्नापी सेहरो साथ, एष नला वसा तुम नथा सास जो।। तुम नवन सगुण निषान सोन्नागों सेबरो साथ, एषं इंच सिर्स खनतार मुसार ने वेष्टरो साण। १॥ करतो कीना मन कोड मुजोडपी सर्वेष

किया। १२ ॥

व ॥ परिदुत बहु परिवारथी, गुरु देवन ततस्तेव ॥ध॥ पाच श्रनिगम साचवी, तानीप ॥ देशना द्यमुतपी पाधिक, निम्नये सुगुरु समीप ॥ए॥ वेत्र रवदेवत् रववद्यदेवदेवदेव

(इस्तिनागपुर वर जाबुं ए देशी) जमता सयब संसार रे ॥ षायक्षेत्र बनम कुले, भे परी ने झाके, ते पामे पद निरवाषा रे ॥तेणासुणा ह॥ जन्म जरा जय रहित ते, स्था के नक शिवमंदिर रूप रे ॥ केन तकानमयी सदा, तिका फजर फमर विदूर रे ॥तिणासुण १ ॥॥ कमें विदेजन नेहते, हुए नाथ त्रिजनने ताम रे ॥ फिरी संसारमें फाववा, न रद्यो |औ तेदने काढ़ काम रे ।तणासुण। ए॥ पंच महाबतनो हवे, सुणो तेहापकी सुबिचार रे ॥ जन पति वेहिलो, नव न ॥ बाल १५ मी॥

त्री जावव्या जिनषमना, क्या मून संपंत संसार र पाकणातुणात्या जरा जार जार र पान है। जो वर्गी वर्गी से करवी में नित्यरे।। मन वर्ग कायाची करी, व्या वीश विश्वापी पवित्र रे।। के वर्णी करी, व्या वीश विश्वापी पवित्र रे।। के वर्णी करी, वर्णा विशार रे।। सुसूम महादन कि साराया, हिसायी नरक मजर रे।। हिणायुणार १। ए पहिलो मत सायोने, बीजे मुपा कि वर्गे ने वर्गाया हुई, जरक गयो वेंच प्रकार रे।। ते पणी सत्यज बोखनो, जिम बाए के जुंच वर्गुरावा हुई, जरके गयो वेंच प्रकार रे।। ते पणी सत्यज बोखनो, जिम बाए रें। विश्वापीयो होने नहीं, तुणमात्र ते सायोने कोच रे।। विश्वपीयो होने कोच रे।। विश्वपीयो होने होने साराया होई सालाया होई रे।। विश्वपीयो होने साराया हों हों। विश्वपीयो होई रे।। विश्वपीयो सरके गया, नवनवन सागरहोठ हे।।। होई नणासुण। १०॥ रामिनोजन ठाढवो, त्रिविषे त्रिविषे घरु थीर रे ॥ ए सुनि वत विवरी क्बा, खातरो जावे पह वीररे ॥व्याणामुणा१ए॥ सामुतयी सुयी वेहाना, समण्यो चि च हााधि महंतरे ॥ ब्रांक्ष्ण पदारप ए सहू , कदे साधु ते सथलो ततरे।।कणासुण।१०॥ गुरु गदी घरे ब्राविया, रपे वेसी हागिकुमाररे ॥ चीपे ग्रन्दासि जिन कहे, पत्ररमी निर्धन पुरुपनी अने सेवको राज्य 1वे बोके, तेज एककनी उपर हेत ॥ ग्रेहा॥ जदाने प्रणमी कद्दे, सान्नस मोरी मात ॥ साधु बचन सुधाते सही, वी ती सघसी वात ॥ १॥ स्वारिषयो संतार सिंव, परस्वािय नहि कोय ॥ विविध विदेवन प त्यंनीत गीवका घ्रध्नुपै तेवकाः, तर्वेः स्वार्षेवव्राजनोजिरमते ने कस्य को बह्नुनेः ॥१॥ जावार्षे -पक्षीन फल विनाना इक्षत्रो, सारत पक्षी सकाइ गएता सरोवरानो, प्र मरान्ने निर्मेष फूलनो, मुगो बलता वननो, गविका निर्मेन पुरुपनो ब्रोने सेवको राज्य नोर कोश्तुं वहासुं नषी ॥१॥ ते माटे मनुमति हि संसाप ग्रेशा सुपी वर्षेण संघ क्रिमुमें त्यजीत मधुपा दग्वंवमात मृगाः॥ निर्ह्न्यंपुरु हतद्वनम् ॥ द्यक्तक्रीणफलं त्यजं ब्रष्ट राजानी त्यांप करे हे ए प्रकारे सर्वे स्वाधने बदय हे राख डे,तपापि वास्तविक रीते जोता कोइ कोइनु बहासु न यो, मपा करीने माप ॥ संयम तेई सिंह परे, राष्ट्रं नन ॥१॥ यतः ॥ शार्वूसविक्ती। बिहगा शुष्केतरः तारताः, निर्मधेषु कांब छबार रे ॥पणासुणाध्या वेषना, जीव सयसने जोय ।

परही, मेदा करे विचार ॥ अतनी बात किशी करे, वायक झालिकुमार ॥॥॥॥॥॥॥॥॥ । जाव १६ मी ॥ (निस्की वेषण हुठ रहा ए देही)
। जाव १६ मी ॥ (निस्की वेषण हुठ रहा ए देही)
। जाव १६ मी ॥ (निस्की वेषण हुठ रहा ए देही)
। सहात्रावकान सम
रेता हुउ जव विपात हो वेषण सर्व बात के ॥ संतानाविक पिया नहीं, ते माटे हो जून हुद हुव य विवार हो तिया हो तिया आप्यास
है । जुज विवाय हो तिया सर्व बिलानवा, मीवी वय हो स्व प्रचारात है ॥ अप्यास है ॥ माटे ॥ अप्यास है ॥ वात व्यास विवार स्व विवार हो ॥ वात स्व व्यास है ॥ अप्यास है ॥ इत्य सवत सवत सवत सवत सवत सवत है ॥ अप्यास है ।

ससार , सुल वदाए हा मात होने हो इस सबस बुझ सम पारका है। गलवा, नवि जाववा है। असमजस बोल के ॥ डात्र मित्र

भी मद मांट अतोव के ।।जंगार था। सिंहपरे अत आदरी, सिंहनी परे हो पांचे ते प्रमाण के।। से संपम खेरे जहरके, तत अवित हो संपम अपमाण के।।जंगार ए।।। अत पालंता को कि दें हिला, नीर सोहिला हो सुलीवाने नेट के।। मृप छागे नेसते, तें आपी हो ते वेदनी दें वेटके।।जंगार हा। ते अ-ी यौनन वय खों, आवक अत हो थरो सुपरें चित्त के।। चढ़ेते प्राप्त पदते अनुअभे, प्हानीं के हो महोंदे जिम नित्य के।।जंगार शामात वचन ते मानीये, माना तीरप हो कदी आखमें सार के।। सेवा कीचे ग्रुज मने, खहोंये सुख हो स्वर्गींदि है जनार के।। जंगार गार ।। सहस्रेते हो वत्त के। जंगार गार ।। सहस्रेते से एक पिता अने हजार पिताये एक माता, ते कारण मादे माता सर्वेद्यो मोटी हे।।श। मात है के वस्ति सोलामी हो जिनदींत्र वेवार के।।जंगार है

॥ वेहा ॥ ह्याबिकुमर मन चिंतवे, इठनो काम न इव ॥ समय प्रदीने सा वीथे, चिंतित निज स्वमेव ॥ १॥ इम माबोची चिन्ते, चक्को चतुर चोबार ॥ माता मन हरखित पऽ, तिम वत्रीहो नार ॥श॥ विवसे काताथी विपय, पिण मनथी बैराग ॥

जिम पंक्षी पंजर पक्सी, जोवे द्रुट्धा सागा।श। विचमें चिंतवते बके, उपनी बुद्धि भनूपा।
ममश उठु प्रति विचम, एकेकी यरि चूंप। धा। हत्तवे इत्तवे विचम सुख, उंत्रचानी घठुं हे या। अनुक्रमें अनुमति अपने, वरवुं सचम हेवा।शा जिम जिम परपीती मुद्रा, तिम तिम तजु निवान।। निपति यरि ते विन पक्की, वने परि मुक्कान।।।।। प्रयम दिवस मो निपत तज्ञी, तियो तव बाज्यो साव।। वाक सकत ते में कियो, ते वाक्यो प्रस्ताव।।।।।।
निपत वीजे वीजी प्रते, जोहण कीच प्रचन ॥ ते पिषा विवाखित वनम्धी, चिंत ए कोम विन वीज वीजी तिमज, उंनी तक्ष्यी जाम ॥ तव सच्खी विन वितते, का विग हो। कुछ करे माम।। ए।। प्रजुक्तमंद्री ए उंतरो, भ्रमने सिंद नतार ॥ नावीधी वत् वोपनो, वांव निह विमार ॥ १०॥

॥ वांवा १७ मी (हरिया मन साग्यो ए वेह्री)
एहवे ते पमा गुढे, सतीय मुजन विख्यात रे।। सेहि सुण मोरा।। पतिने स्नान कावते, विक सानियो प्रात रे।। सेही सुण मोरा।। ए सोक्यी।। फम प्रतिन क्वन करे, नयनथी नीर प्रवाह रे।। सेविण जाती माहे जातीयो, विष्ह वावान

श्रि श्रुवहेंसते, श्रू तावेतुम बाज रे । स्मि॰। गुपा सीजे तेद्वा तवा, जे करे उनम काज रे । असे स्मेण। एए। । एथा। कहेंगे जगमें सोहसो, पिपा करता जंजात रे ।। स्मेण। कहेंगे जगमें सोहसो, पिपा करता जंजात रे ।। स्मेण। कापर नरना यो असे खंडा, पापे माल पेपाल रे । स्मेण। एए। एथा। या ।। मुज बांवव सम जगतमें, कि अजो कोप म दीज रे ।। सेने। मुख उनी संपम महे, करी संसार श्रुपीज रे ।। सेने एए। एए। एक। वातज माहरी, मिला पाए। एक। एक। वातज माहरी, मिला विसवा वीहा रे ।। सेने ।। सेने सामला वातज नाहरी, मिला वातज माहरी, मिला पाले।। सेने सामकाज रे।। सेने सामकाज रामिण।एए। एक। वातज माहरी, मिला पाले।। सेने रे ।। सेने।। वोषे मह्याने सामकाज रामिण।एए। एक। वातज मुले वातज माहरी, मिला पाले।। सेने सामकाज रामिण।एए।। इने ने सामकाज रामिण।एए। एक। वातज मुले वीहिंगालया, मिला सेने सामकाज रामिण।एए। इने माला सीने महिंग। वीहें मह्याने सामकाज रामिण।एए। हो। हीन जात तुर्रं ॥ इक्षेयाति ग्रहित्वा दंरं, तत्रिप न मुक्त्याद्या पिर ॥ १ ॥ जावायं –श्रंग गनी गरुं, माधु पविषावातु घरुं, मुख बात विनातु परुं पने दृद्ध घयो ठतो दाकड़ी जे ६ मक्रक करीने वाले छे, तेम ठता प्या शाशापिरने मूकतो नयो ॥ १ ॥ मुज वाघव मन न वरे मति हीख रे ॥ स्ने॰ ॥ ए॰ ॥११॥ यत ॥ अया गतित पतितं मुंनं, व्या निव एगारशा वय चीपीमें वीसन्या, १५१त ज ततु खाया रे गस्तेण। ते पिछ यत होवा जाती. यझो समज्यो घीर रोस्नेण। चोषे उब्हासे सचरमी, जिन कहे गुण गंनी र रे। स्निण्ए० इए॥

हैं। सिणा ज्यावि जरा जब सागको, तव सिव बाते वीन ॥सणा वण ॥णा भाषर ससा सि एस हैं, मिलियों ने सबंध ॥सणा संध्या तथा तथा तथा सामा सि एस हैं, मिलियों ने सबंध ॥सणा संध्या तथा तथा ने स्वाद्य ॥ स्वया । स्वया विश्वाला कतिष्यवित्त में वात्र मित्र हैं से इंग्लाकात वपूरित्यत ज्यावित्र हैं । एकावाल - जरूमी वीज्ञाता चमत्कार जेवी मित्र सामारः स्वित्र नियत जायत जना ॥१॥ जावाल- जरूमी वीज्ञाता चमत्कार जेवी से समारः सामित्र हैं आ जुवाती केटला विवस रहेवाती ? सुख ने ते, इ ख्या ज्याम ने, निष्मे आ क्षार हैं । ते कारण माटे हैं होको । सिमें तमें इंग्ले जायत जान ॥ १ ॥ घननो पिण सि मार कारमो, ते तो वीजो परतक ॥सणा ते हें लोजे नाति काज ॥ १ ॥ घननो पिण सि मार कारमो, ते तो वीजो परतक ॥सणा ते हें लोजे नाति काज ॥सणा त्यार स्वाद्य स्वाद्य हों। में मारी, विहेष अविचल राज ॥सणा स्था हों। मारी, विहेष अविचल राज ॥सणा स्था हों। ्रिज सीरिखी दितर्गाठिका, भवर न नारा होय ॥सणा जे तारे नवजव घर्मी, सवज्ञ स |खाइ सीप ॥सणाषणाहा। में ताहरो वच मानीयो, सुपरे वरी सर्वेग ॥सणा हित देखा स्रो हेजघी, टास्यो मन ग्रदमेग ।सिणाषण।आ। वय वेखी जाहो वेगघी, बलघी इंड्य

क्षे कंचन केब्रो घुप्रकारा।श।वप्पन काड निधिमें रहे, बप्पन केब्रो घुप्रकारा।श।वप्पनकेह ब्याजे के बेब्रे, कर्पन केब्रे संख्या परिपूर्ष ॥ इत्यादिक भी बेबे, कर्प कर्मिक पर्पूर्ष ॥ इत्यादिक भी मिंव कर्मिक, उन्नी घके तूर्ण ॥ धुरमिष आदे भवर पिषा, रव्यराद्रि रमणीक ॥ नव भी निष्कि परिग्रह सक्त्रमें, तूर्णपरे तजे ते वोक ॥श।सपरिवार घक्रों तद्रा, स्पम लेवा काजा। विते जो मुज जान्ययी, समवत्तरे जिन्हा ॥ ॥ ॥ वाल १ए मी ॥ (वे वे मुनिवर वद्दोरण पागस्मा जी ए देशी) एहये तिहा पुष्यमयोगे पाविषा जी, जिनपति वीर जिषोद विख्यात रे ॥ समयस रषा देव नुपरे रुयो जी, तेजे करी दिज्य साक्षात रे ॥एइदेण।१॥ ए क्षाकपी ॥ चोत्रीझ श्रतिहाय सुबर होज्यता जी, पष्ट मक्षामातिहाये जदान रे ॥ सदस जोयपानो इंड्जज तिहा जी, खामें तिम धर्मचक ब्राजरामरे ॥ए०॥१॥ तिगढो बिराज मणि कब्याण्यी जी, कोद्यीका रत्न विचित्र मुतेज रे ॥ मणिमय सिहासन गोने घणु जी, ठत्र त्रय छ सम नूररे॥ बाब्य विराजे चिहु दिक्षि बारखे जी, देव विनिर्मित जनवी पूररे॥ एठ ॥धा चीविह सघ संगाये परिवस्ता जी, समवसरपार्मे श्री जिनराज रे॥ वेसी सिहास मर परे परी हेज रे ॥ए०॥ रे॥ चीबीश चामर बींजे हेबता जी, जामेनव तरिए सहस ॥ डाल १ए मी॥ (वे वे मुनिवर वद्दोरसा पागस्याजी ए देइती)

अज्ञहत गुण खिसराम रे ॥ एए ॥ इग धारामिक दीवी जाइ चवामधी जी, जूषति श्रेषि को को खित उच्छासरे ॥ सान्तज्ञी जुप बर्षित थड़ तेहने जी, कनकरसनाविक विच सुवेदा सि को खित काजरे हैं। सार्य प्राप्त मान्य विच प्राप्त जा काजरे जो क्ष्म के सार्वाय मन बूती वर्षी जी, ते मन्नु पान घर्षा जिनताव रे ॥ ए० ॥ ६॥ स्वय्न मिता विवेच न की जीए जी, एवंचो सिरी मिखने जोग ते तूर रे ॥ सांदिव थायी विवेच न की जीए जी, एवंचो सिरी मिखने जोग ते तूर रे ॥ सांदिव थायी वीर प्राप्त निर्म साय्वा वीर जिपको जो, कमेन हण्या थाने ग्रेर ।। सार्वाय मार्यवा जी, ममने विवाद को मार्याय के जिस्तार साय्वाय सार्वाय की मानवा विवार रे ॥ तिम बची काच्यपने तेहाविने जी, केबाय समरावे की जरतार रे ।। तिम बची काच्यपने तेहाविने जी, केबाय समरावे की जरतार रे ।। एवंच प्राप्त निर्माव की मित्र विवार से ।। एवंच प्राप्त ने तेहाविने जी, केबाय समरावे की जरतार रे ।। एवंच प्राप्त ने तेहाविने जी, सेक्च सिंह सिंहात्त सुप्रमाण रे।। से ।। एवंच प्राप्त देन केबाय समरावे की जरतार रे ।। एवंच स्वर्म प्रावित्त ने । सेक्च सुख देन्यों तुम कच्चाया रे ।। एवं। १३॥ अ % भे ने मेप तथी परे जी, वरते वचनामृत जीव हित काज रे ॥ए०॥ ए॥परपद वारे क्रांचे औं प्रेमछीजी, बादीने देते विनयपी ताम रे ॥ सांजबे सुपरे हावतावन जूषी जी, देशना

भी वारण जाट रे ॥ वान घराये वस्ते तेहने जी, मिलिया तिहा नर नारीना बाद रे ॥ए० क्षेत्र में हो में मिलिया तिहा नर नारीना बाद देगणी हा कि भी जोणा बनोहााह संयम तेवा संचरे जी, प्रमवापी सोहे जेहदो हंद रे ॥ बाद दोगणी हा कि भी जोणा बट्दासनी जी, कही इम बुध जिनविजये अमद रे ॥ए०॥१६॥ ॥ वेहा ॥ वात मुसी धन्नात्वपी, जे ए देवे दीखा ॥ बादे स्त्री साधे अधिक, सुणी अपन्य होखा ॥१॥ वर्षित स्तर्भ, जिल्ला ॥ वर्षित सदरे, जिल्ला मिल्य, जुन माया मोह ॥ स्तर्भ ते वा स्तर्भ जो वा स्तर्भ जो वा सेवा स्तर्भ जो वा सेवा सेवा सेवा सेवा वा वर्ष्म पिल्य वा सेवा मिल्य, वा केवा मिल्य, वो नेवा सेवा कावर केवा के क्यों, तेहाम नहीं सेवेह ॥॥ जो वेहवपनो मन घरों, ते जिहा कि हो। दिवब व नियकुमर पिण भावी इम केंब्रेजी, घन्य घन्य प्रमोद्याह सुजाण रे ॥ घन्य घन्य प् प रिकर रामातयो जी, पतिद्वता बिरुद ते एड प्रमाण रे ॥ए०॥१३॥ ए वय ए घन एइवी प्रमानाजी, तजीने जे लेने संघम नार रे ॥ तेतो न्यायेची हिवरमपी वरे जी, इम सडु अंपे नरने नार रे ॥ए०॥ १४॥ याजा तिहा वाजे विविध प्रकारना जी, जय जय घोटो ॥ श्म चिंती जज्ञ कने, मावे आति भविताव ॥ ए॥ पय प्रपामीने वीनवे, मे तुम वयख

प्रमाण ॥ तो ते हवे तुमे माहरों, बंदित करों सुजाण ॥ ह ॥ पत्रे विण षण वयण्णी, वोद्यो सवस ससार ॥ ते माहे हुं पण बने, डंफीश विषय विकार ॥ आ माता मोटम मन करों, विशे स्प्रम आवेश ॥ वीर समीप अत अहों, टावूं सप्तय किनेश ॥ णा नच विले एहने, किछ विष राखें शेह ॥ विस्न वेत्वी विहुं मिळ्या, सहचारी ससेनेह माणा तो पिण वचन कज्ञातणों, किम राखीजे हाम ॥ रेहने घर राखीचे, कीजे स्वा ॥ ।। ।॥ पत्रे शायत हा ॥ अपमाने पुरस्कृत्य, माने हत्वा च प्रधत ॥ ।। ।। प्रता शाय पुरस्कृत्य ॥ अपमाने पुरस्कृत्य, माने हत्वा च प्रधत ॥ ।। ।। प्रता कार्यकृत्य माश्रा ।।।। जावायं- अपमानने आगल करीने मने मानने पाठल करीने बुद्धिमात एकर पोतानु कार्य ताये, परतु कार्यनो नाश्र कर ।। ।। अप कर प्रधा वायो ।। ।। अप कर पात्र के ।। र॥ ।। अप कर वात्र श्रा ।। ।। अप कर पात्र के ।। र॥ वात्र के ।। ।। वात्र के ।। र॥ वात्र के ।। वात्र वात्र के ।। र॥ वात्र के ।। र॥ वात्र के ।। र॥ वात्र के ।। वात्र वात्र के ।। र॥ ।। र॥ वात्र वात्र के ।। र॥ वात्र वात्र के ।। र॥ वात्र वात्र के ।। र॥ वात्र वात्र वात्र वार्य के ।। र॥ वात्र वात्य वात्र व

डिस्तह बाहवार्गि, धरीहरत मुखतिनः परिपालपति ॥ र ॥ जावार्ध –शिव हुन्नु मुषी कालकूट जेरते ठोढी देतो नथी, काचवो (कष्ठपावतारमा) ने ठे, ते पृष्डीने पातानी

लिं लाजधी रे हो ।।माण्यासाण वयं पमची हाधु देखि दया नयी भावती रे हो,

ति ता के जिनक्षममें सार कही हे ते वती रे जो ।साण वित्त तक्वों भिनमान सिक् के ए वकी रे जो, साण ते तुमे राक्यों चिन के नृष भाव्या पकी रे जो ।। माण ।।१० ॥ भाव्यों रे जो ।साण जोवों हवा विमास ए साची वातही रे जो, साण रमियोंने कुण के हेत केता विषा इम जहीं रे जो ।माण।।११॥ साण पचनी साखे हाथ मुखाते ति तकों रे जो, साण जाबुं जाबु एम के मुख्यी शू कहों रे दो ।।साण शु तुम जाग्ये रू त के अततर भाव्यमों रे जो, साण के शू न्यक्की सान के कपन न को गम्यों रे जो ॥ मण।।११॥ साण इम मत्रीशे नारि विविध बचने करी रे दो ।साण समजावे निज नाह के सुपरे सुवरी रे सो ॥ साण नवि नेवायों नाह के नेद न राखीयों रे जो, साण पाजे के सुपरे सुवरी रे सो ॥ साण नवि नेवायों नाह के नेद न राखीयों रे जो, साण पाजे पिण तास वचर एक न जाखीयों रे जो ।साण पाजे ।साण निस्स के क्षेत्र ने साम स्थिता है ।। साण म कहतों कामिनी रे सो, साण भाज तो सचली रेम तके का जामिनीरे बो ॥ माण शि ।।।शासाण जो बखी कोष जपप हों ने ते वाववों रे दो, साण उसके गये हो ।। माण

मो नाखनो रे दो ॥साण ए एकनीशमी वाल चोषा ग्रस्तासनी रे छो, साण कही जिनवि

॥ बात ११ मी ॥ (वेद्गी फूबखहानी)

श्रीवक सवि परिवारशुरे, आवे झाबि आगार ॥ सनेद्दी साजना ॥ छञ्जे आपी " क्छो रे, बेसारे तेषिवार ॥ संनेही साखना ॥१॥ ए ष्राकणी ॥ शा माटे सयम महो रे, षा यौवन वय माह ॥सणा नेनाविय लक्ष्मी जली रे, रहो मुज बाहनी गह ॥सणाशा

िर, पुण्मताम मुतियोप ॥मणा १॥ शाविज्ञमरने सिहासने रे, झिविकामाहि वेसार ॥मण। वत्रीज्ञे नारी सिहारे, वेवो करी विष्णार ॥सणा १थ। सहस पुरुष वहे शिविका रे, जो निह ।सरा। प्राचारो हेवडोड्डमी रे, वाजे प्वतीपी प्रतेष्ट्री रित्यामपी रे, शिष्णारी सिव निह ।सरा। प्राचारो हेवडोड्डमी रे, वाजे प्वतीपी प्रतेह ॥सरा॥ १६॥ ठत्र घरे डिरा क प्रेरे, मेघार्नस हेव ।सरा। वामर ग्रति मोद्धासपारे, सींजे विषिषी हेव ।सरा।१४॥

. स्प प्रयुक्त ।।तः।।१८११ मधिमप शिविकामें निहा रे, पाठव जन्म मात ।।तथा मेघतथी पर दरसती रे, वसुपकी भविक विख्यात ।। तथा । १७।। इत्यादिक ब्रामचेरे रे, चाब्या ्रे गातिकुमार गिराणं यक्षोगाइ पिण क्षियी दे, भावी मिड्या तिपिवार ॥सण्। १०॥ १ क्षेमें जिम मिसरो मिड्ये दे, होव पिषक सतेब ॥सण्॥ तिम शाबिनड्ने तिपो समे १) रे, प्रमारी वच्यो हेन ॥स॰ ॥ ११॥ समवरण खान्या वही दे, महोटो करीय मराख

श्रेणिक मेचन गज चढी रे, चांत परिकरजुन ॥सण। श्रवर दिशे गीत्तइजी रे, देव स

धाम रे॥ वीण ॥१॥। जिम कह्यो तिम तिण कीचो, वीजनी षठ बुद्धि रे॥ वती बीजे दूरस भावे, खेत्र खेबी समुद्धि रे ।वीण।१॥। बीज सघलो तिहा वाल्यो, षठ् बहुझी हा।

भी सिंपु डुं तुम पास ॥१॥ डाख वीयो नयी सुपनमें, सुखोपवित डे एह ॥ तप जप करतो है। एहने, जाजवण्यो घरिनेह ॥१॥ तुमने ए बावकत्यी, घर्षो अन्ञाम्या भाजा। ही वीजे सुपरं करी, देता लागे वाज ॥१॥ पुत्र जमाई पुत्रका, भात बङ्कान जग माह ॥ ते त्रियं तुमने भमें, वहाराव्या सोकाह ॥था। इम कही वार्षो वीर्से, पुत्राविकने तेम ॥ वार्षो बहु तुमने भमें, वहाराव्या सोकाह ॥था। इम कही वार्षो वीर्से, पुत्राविकने तेम ॥ वार्षो बहु ते ति घरे, पुत्राविकने तेम ॥ वार्षो बहु ते ति वार्षे निर्मे पुत्राविकने तेम ॥ वार्षो बहु ते र पण्ण तिहा पकी, करे धन्यत्र विहार ॥शा हार्ताज्ञ घम्नो हवे, जपे ते धग इग्यार ॥ कीर वार्षे ति वहार ॥ वार्षेत्र विरम्भे हवे, जपे ते धग इग्यार ॥

तव जहां ना बास १४ मी ॥ (मुखने मरकते ए देहो।) हैं रें करी बाखे ॥ फब्पा जावे जी, मुखपी इम जाले ॥ वष्टु सम्बतीने समजावे जी, सुप हैं इस्ता है ॥ फब्पा जाप्य अपूप तुमारों जी, मुण। खाब्या पुत्र जमाई अमारा जी।। है सण। १ ॥ वही भाज्या सुजहां बाईजी, मुण। एइनी पूरण पूप्य कमाई जी ॥ सुण ॥ क्षेत्र का ॥ सुण।। हैं आज आणणे ममीरस दृग्या जी, मुण। इंटदेव भावीने तृत्या जी ॥ सुण। १ ॥ जेइनी त्र बस्तभ कर तन भवा, भारत त्यापाता है। है। है। सिन्द वद्यात्यी, ब्राच्यानी है। है। सामक्ष्य स्थात्यी, ब्राच्यानी है। सिन्द व्यवात्यी, ब्राच्यानी है। सिन्द व्यवात्यी, साम है। महा साथा। है। साम है। सिन्द प्रक्रिये ए देही है।

जोता घणी वाट जी, मुणा मह निशि करता समाट जी भसुणा तेद् झान्या पुषय पसा

महिषारी जी, मुणा विनयानत पङ् सुपिषारो ज्ञी गसुणा १०॥ देसि झाखिने बद्धासित

मुणारणा घन घन जिनयमें भावार जी, सुणा जेह्यी सुख तक्षीए सार जी ॥ सुण ॥ स्वीविद्यमी वोधे छळवासे जी, मुणा शव्य इंदर जिन इम जाते जो ॥ सुण ॥ रेणा ॥ के ॥ सुण ॥ रेणा ॥ वेदा ॥ वीर नमीने विजयमी, ते बिंह मुनि किर ताज ॥ मासखमण्ये पार में लें हे ते जाटक काज ॥ रा। क्राविज्ञ घन्ने मिली, करे वैराग्य विज्ञार ॥ काया है व ज्ञ काचां क्या, किर तो काज न था है य ॥ ते माटे वोक्षिरातीए, सायीये किंग्युख जय ॥ शा प्रत्यूप श्री वीरसे, प्रयामी मागे हो हो था । ते माटे वोक्षिरातीए, सायीये किंग्युख जय ॥ शा शा वीर के विज्ञ मुख होवे, से होणा ॥ जाव २ए मी ॥ (निंदा म कीजे कोज्ञी पारकी रे ए देशी) शाक्षा विवे शो वीर जियंत्री रे, हरक्या मनमें सायुजी ताम रे ॥ त्रियंत्र प्रविद्य होता में सायुजी ताम रे ॥ विष्य प्रवे हित्य वेदमे रे, बारी हित्य मंजिताम रे।। ब्राव्य प्रवे हाता होता का माने सायुजी ताम रे ॥ विष्य प्रवे हित्य वेदमे रे, बारीह सपटा मनितार रे। मीतमाविक ख्यलारने रे, विविद्य समावे चारंचार रे।। ब्राव्य प्रवे ते हां विव्य समावे चारंचार रे।। ब्राव्य समावे चारंचार रे।। ब्राव्य समावे चारंचार रे।। ब्राव्य समावे चारंचार रे।। ब्राव्य माने स्वाविज्ञ स्वित्य समावे निंह समावे चारंचार रे।। ब्राव्य में सम्बत्य में समावे चारंचार रे।। ब्राव्य में समावे समावे चारंचार रे।। ब्राव्य में समावे चारंचार रे।। ब्राव्य में सम्बत्य में समावे चारंचार रे।। ब्राव्य में समावे सावे सम्बत्य समावे सम्बत्य समावे चारंचार रे।। ब्राव्य में सम्बत्य समावे चारंचार रे।। ब्राव्य में सम्बत्य समावे समावे चारंचार रे।। ब्राव्य में सम्बत्य समावे सम्बत्य समावे सम्बत्य सम्बत्य समावे सम्बत्य समावे सम्बत्य सम्बत्य समावे सम्बत्य सम्बत्य सम्बत्य सम्बत्य सम्बत्य समावे सम्बत्य सम्बत्य सम्बत्य सम्य सम्बत्य सम्बत्य

]] हो गुट्य रे ॥ गौतमस्वामीने साघे तेयने रे, चक्या वैजारे घड़ निर्माख्य रे ॥झाणा १॥ गा हैं। म निजारे नहेंजेरी निका रे. कींग्रा मयारा झयासण काज रे॥ वार झाझारने पचल्या काची आपिनेरे, इस्नि वहा कीवा देखी चोररे ।।आणाहा। मदने मदिरा सम जाएती हो डिया हे, राग देपने राखमा ते करी दूरे ।। जयनो जय टालोन निनेय यया रे, खेले ते समता गगने पूररे।।आरु।।।आसुमतिगुपतिने चिनमादे घरीरे, आवे जावे जावना बार रे भगर तादरे॥ श्रधिक तंज्ञवधी प्राची वाववारे, मनमाही घरती भति ब्राब्हाइरे॥ भाग।।१ग। षावीने वां जिनवर वीरने रे, निषिध् पिनधी परिय उच्हास रे ॥ सांघु स पेमग्रुरे, चारे ग्रारपा करे क्षिराज रे IIषाणIIII लाख चोराग्री जीवायोनिने रे, खमेने वमाघे ग्रुन नावरे ॥ गृतु मित्र सवे सरिखा गणे रे, त्रिकरण राखीने इक नावरे ॥ भाग॥॥ पदोपगमन स्रयात्त्य श्रादस्यो रे, जावद्धीवद्यों करि जोर रे ॥ काया योज्ञारावी टया जावे थी जगनाथ रे।।ब्राणाए॥ बार्जित्र बांजे विविष प्रकारना रे, गाजते घन सम म शुन्ताने पहिनेदी तिहा रे, कीषा सपारा अयासपा काज रे।। बार आहारने पचलपा

वेंने निरखे खातिहा रे, शाबिन्नइ तिहा निव देखे पास रे ॥ षाण ॥ ११ ॥ षन्न मुनिवरने

पिया दीता नद्दी रे, वयन्यो मनमें अज्ञेत विज्ञ्चेप रे ॥ बु किशा ज्यानाविक्ते लेयने रे, बेला बुक्रो ते हुन स्थत देखरे । । । पान करने करनोदी जिनपति वीरते रे, हमिल्यं विज्ञेत स्वांते किसोरे । ज्ञान स्वांते विज्ञान स्वांते विज्ञेत करोते । । । । विश्वेत स्वांते स्वांते स्वांते स्वांते स्वांते स्वांते स्वांते स्वांते विज्ञेत पर्दे रे, क्वन करे तिश्च मतरात रे ।। इत्यांते वातरे । । । । । । । विव्यंते रे, तिम वाती विव्यंते ।। विव्यंते स्वांते विव्यंते ।। विव्यंते स्वांते स्वांते स्वांते स्वांते स्वांते स्वांते स्वांते विव्यंते ।। । विव्यंते स्वांते । । । । । । स्वांते स्वांते

जीव जीवन तु वज्ञ बेटा, तु भाषार मतीव वेटा ॥ तु कुलमम्पा माहरे बेटा, मुज्ज भाषाय गार केटा ॥ हो भाषाय गार केटा ॥ होस बोलोने मन मोहन बेटा ॥ रा। ए आकर्षा ॥ तु मुज्ज भाषाय गार केटा, उत्तक विच सु उत्तम बेटा। तुज्ज सम अवर न माहरे केटा, भाशानी मिलाय कार केटा, उत्तक अवर विनम्पती केटा, तु कुल न माहरे केटा ॥ स्वाम किटा बिलाय केटा मुज्ज केटा मिलाय कार केटा हो केटा मिलाय केटा हो मिलाय केटा हो सेटा सेटा मिलाय केटा में सेटा सेटा मिलाय केटा में सेटा में सेटा मिलाय केटा में सेटा में सेटा मिलाय केटा में सेटा मेटा में सेटा में सेटा

॥ बात ग्रंमी॥ (वादक्षियोने क्रम्योरे इस्सि। ब्राष्मिरि ए देखी) साहनिया सिहेबारे केम बेखो सहीरे, श्रमपी तुमे इस्वितर ॥ बार व्स्तिपी झा मुखयी कहे, ए गु कीचुं केन ॥धा

मुमें मिटबारे, किम नकरा विषु सार ।।नाण।१।। ए खाकणी ।। अमे तो निमुणी हु स्मित्रकारे, तुमें में सुणुण नियान ॥ भमें तो तुमंनी पालव ने महारे हैं, तेहनी म सरक्षारे सान ।।वाण।।। तुमें भम मस्तक मुगट विरोमणी रे, अमें तुम नरपनी खे कि ।। ति ।।वाण।।। तुमें भम मस्तक मुगट विरोमणी रे, अमें तुम नरपनी खे ने ।। ति ।।वाण।।। तुमें में में ति विरोमणी सावित्या रे, अमें तो पालमा विरोम विरोम विरोम मिने हैं व्यत्येम मूक्या।। ति ने ।। ति ।।वाण।।।। तुमें में अमें तुम्पी माजता रे, स्वानीयम भमें मिने हैं करों हैं वेतामणी सावित्या रे, अमें शुगाल सरेख ।। नाण।।।।। ते नथी अमने म मिने हैं हैं करों हैं वेदा स्वाप्त करें रे, जीवव्या के हें रे कर कर हैं रे, विरोमणी सावित्य ।। अमें इंद्यान करें रे, विरोमणी सावित्य ।। ते विर्वया ।। ते विरक्षात्य विरोधित ।। ति हों मालभी माने सुम विरोधित ।। ति हों मालभी माने हें विरोधित ।। विरक्षात्य विरोधित ।। विरक्षात्यामी हों हों हती मोने कर ।। विरोधित ।। ति तो अमने प्रवित्य ।। विरोधित ।। वि

वाद विविध्य प्रकार ॥ धन धन दान भवतारमे, इम कहे वार्वार ॥६॥ रबती पदती रो वती, पाठी वसी प्रवीष्ण ॥ वह बत्रीहो नेपने, भावी इश्वत्ररी दोन ॥७॥ वीर पासे त्रत यातम काज ॥ तेहनाशी ड ख मेडि ये, घरी खानैंद समाज ॥ए॥ तव जज्ञ घना प्रते,

प्रति क्षा । । व्यापा। तिष्ठाणी चवी नरजव ते जहेरो, क्षेत्र विर्वह मफार जी ।। इञ्चकुचे स्व विन्न स्पा स्वा । व्यापा स्वा ।। इञ्चकुचे स्व विन्न स्पा स्वा स्वा ।। व्यापा स्वा ।। व्यापा स्व स्व सार जी ।। ष्वाचि ।। अप स्वा सार जी ।। प्राचि ।। व्यापा स्व स्व सार जी ।। प्राचि ।। प्राचि ।। प्राचि ।। व्यापा सार सार सार प्राचि ।। व्यापा ।। व्यापा सार सार सार सार सार सार सार सार ।। व्यापा ।। व

रिवासु गएतु, ३ फूलर्तो मालादिक्ती पेठ सुवर्षाने निर्माख्य गएतु खने ४ राजाना मा नेत्रे भपमान गरायु; ए चार बाता शाजिन्देन विषे महोटा भाश्यर्कारक इता ॥३॥ म्रोदेश दीक्षेजी ॥इणारशा "राजमान ष्रपमान ते जाएयो, ए आव्यर्प अतोलेजी ॥ क्षि घतनात्र वानमनुत्तरं तपो, द्यानुगरं मानभनुनरो यक्तः ॥ पन्यस्पराखेश्यानुजाषमुतारा , ध्रु धनुनरपेर्यमनुत्तरपद ॥धा नावार्थं –सर्पोल्ड्ट वान, सर्वोल्ड्ट तप, सर्वोल्ड्ट मान, स ध्रु वॉल्ड्ट पक्, सर्वोल्ड्ट पैर्धं मने सर्वोल्ड्ड पद एटले सर्वार्पेसिङ् विमान, ए सर्वे घन भारे मझूत हमालिकुमस्ते, सहु को पन्ति योचे जी ॥ हण ॥ १४॥ यडक चरित्रे ॥ स्वर्गोपनिग्रोगीतृपनिक्रयायक, सुवर्गनित्रोह्यमञूत्र्यमावित् ॥ नरेडमानेप्यपमानर्चित नं, झातेमंदासंयीमिष्चतुष्य ॥३॥ जावाधं - रचगेनो उपजीम करवो, १ राजाने क श्री ध कलातने विषे कुदालपणु, ए षणुज कारातन, ६ परंदेशने विषे पण सुखे मुखे तदमी भी यो मलदी, ७ ज्यानी भदकरी रूप वायोषी वत बेवा छने ० विणक जन उता पण, राजाती वोलत, ए माठे हन्मेशा वम कुमरने विषे सर्वोत्तम हता॥१॥ १॥ ' वेवनोग तरत्तवे नोगाविया, कनक निर्माद्य ते कीचो जी ॥ 'राजा श्रेणिकने किरियाणी, तेवा 🏽 प्रकारनी बुब्यो, ३ माटी व्यस्वामा पण (तेजमतूरी नीकजवापी) सुवर्णोसिष्यो

॥ बोहा ॥ वान पच जिन दासियां, षज्यप सुपात्र उत्तम ॥ अनुकंपा अधिताबि तिम, कीसिंदान मन रंग ॥१॥ अनय सुपात्रे मोक्षफ्त, होप त्रिपय झुख जोग ॥ दाहि पे दानतेषो गुषो, शिसत सपत संयोग ॥ ३॥ यत ॥ षापंष्क्रम्य, ॥ अन्य सुपत्रेदाण,

**		1.5	1:1	ĐΞ	1.4	7.5		ĽĽ.			1.1	_				<u> </u>	ž
0-R o	D EP	2	9 9 0	0 0	0	D Dr	0 23		0 87	0	о D 。	. 	200		}	4 P-X-0	
												₹				क्षा अन्य क्ष	
ग्नानो सस	मो राम	ो राम	r tite	ो सम	क्कियारानो रास	पुत्रना राम	नमान	-	नक्या	मध्या	वेत्रनी कुक	ગુજરાતી લીપિમા છાપેલા	मधी साथात	ים אות הוא	אומו אוא	अधवा कृत्त	
परदेशीरामा	गुप्रजामनमे	कमविषाकनो राम	लीखावतीनो	अंजनासतीनो रास	कानदकतिय	वेषकीमा उषुत्रमा ः	नवस्मरका मूजवान	संक्यकारित	अदीष्टापनो नक्ष्यो	भष्टीपनी नक्या	नारकीना नि	ગુજરાતી 6	प्रश्रमितामधी सामातर	३८ % भूग साहत क्यापात् ३८ केवम स्थापाता साग १ वि	कैनसक्त्रम	જા નાકૃતાવળી ક	
hà	H 6	9	22	₩.	m _r	ñ	읎	ETY ETY	D)	퍐	DDr Utr		8	₩ \$	8 &	<u>چ</u>	
0	P	b ##	D	er.	29	0	o D	D	D	ş	7	~	0 0 2 D	B P	B.	٠ د	
t.	~	•	D	D	Þ	•	~	•	~	•	6	Þ	Þ	0	0	-	
1	- Tr	. #	<u> </u>		में यक्त	द्यापविर		वरीमारास	18	£	भूपक	गोकदा	नोराम	सम	ननोराम	नो राम	
مروسة ومراهع	म्बद्धान्त्री नमा	A CALLED TO	4011111	काटात्रीयता	मेगायवातक शर्य यक्त	जंबाधीयनं य	मुद्राराजी संहराजानी गाम	महाबत्तमस्त्रयस्ट	ा रिकलमञ्जीनो रास	भानवधन बहोतेरी	जोपविचार छाध्य	पाशीव्रयोक्तनो १	मानदुगमानवतीनोराम	अन्नय्कुषारनो राम	सिराम मछराजनी	<u>चारमत्येकबुद्धनो</u>	
,	⊃ ŧ	9 ;	2 :			, ,		, E	9	, =	2	2	ñ	5	() ()	8	
産	44	44	4	44	άŅ	4	Νįν	M	ΜM	Þ	N	4.	44	ŧ.	44	44	4

H म्ब्राम्स महाक्रा स महाप्रदेश क्षाममा क्षेत्रक महामन क्षित्र हो मिहित भाषातर् भूताक्ष्मात्र (६६) क्षामास्य हात्रासंस्थात्र ट समस्तितीयसीत मृत स्वाहत ब्यायातर ए संस्वप्रकाषणी मृत, मार्थ माने ह्यासि તરે પશુ, તેમ તેમ હવાઇને ભદાર પાશુ मग्हारमुग्नान्धिकानु प्रापतिर ાર મુભાષિતપાર્યદ્રીતાના મુળ મહિ 13 મેન્સબ્દ્રાવમાળા ભાષ 3 મે કિ हैं पर समेश पुरुवशिभाषी क्रेस अान हथन कानीशी व्याजावध्याद वास्त्रम् जापातर प्रभान इपय्योतीत भूव 970 6 19 1 0-0111 1 Š ३-०-० रे महार्थ (मिम्स) अ ब्रह्म ३०-०-६ ग्राक्षत होते होते जाने तथाहरते। अहेग्रिया जन्म मा मानपदनी क्यानुपूर्व कान नवधारता महोता મેર નવપદની આનુપૂર્વ (હ સ્થાપના સદ્વિત) કિંહ િક. સેવક કચગભાઇ **ગાપાળદા**ત્ર त् स्त्रम्बास अघा १ बैर लम्बोषप्रकाश काम र મતુમભાગના કરા દેશતા માતુપૂર્વ અને સાધુગદના (b) GANERS) RIVEN MHANASIN MIN שומשם מוחוש त्त्राशामिलद्रना मध દુષ્ટાની મોદાનીમાર્ગા કો म् व्यक्तिम्बाम्बाम् म् महासाम्बद्धाम् मा भारतभाषा





